राजस्थान भारती प्रकाशन नं०

पद्मिनी चरित्र चौपई

सम्पादक
भँवरलाल नाहटा

प्रकाशक

सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट

बीकानेर

प्रथमावृत्ति १०००]   वि० सं० २०१८   [मूल्य ४)

प्रकाशक :

सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट
बीकानेर

मुद्रक :
रेफिल आर्ट प्रेस
२१, बड़तल्ला स्ट्रीट,
कलकत्ता-७

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ में बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री के० एम० पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा संस्कृत, हिन्दी एवं विशेषतः राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिये की गई थी ।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानों एवं भाषाशास्त्रियों का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमें प्रारंभ से ही मिलता रहा है ।

संस्था द्वारा विगत १६ वर्षों से बीकानेर में विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियां चलाई जा रही हैं, जिनमे से निम्न प्रमुख हैं—

१. विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस संबंध में विभिन्न स्रोतों से संस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दों का संकलन कर चुकी है । इसका सम्पादन आधुनिक कोशों के ढंग पर, लंबे समय से प्रारंभ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके है । कोश मे शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ, और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाए दी गई हैं । यह एक अत्यंत विशाल योजना है, जिसकी सतोषजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है । आशा है राजस्थान सरकार की ओर से, प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य में इसका प्रकाशन प्रारंभ करना संभव हो सकेगा ।

२. विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भंडार के साथ मुहावरों से भी समृद्ध है । अनुमानतः पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग में लाये जाते है । हमने लगभग दस हजार मुहावरों का, हिन्दी में अर्थ और राजस्थानी में उदाहरणो सहित प्रयोग देकर संपादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रबंध किया जा रहा है । यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है ।

यदि हम यह विशाल संग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह संस्था के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिए भी एक गौरव की बात होगी।

३. आधुनिकराजस्थानीकाशन रचनओं काप्र

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

१. कळायण, ऋतु काव्य। ले० श्री नानूराम संस्कर्ता

२. आभै पटकी, प्रथम सामाजिक उपन्यास। ले० श्री श्रीलाल जोशी।

३ बरस गांठ, मौलिक कहानी संग्रह। ले० श्री मुरलीधर व्यास।

'राजस्थान-भारती' में भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का एक अलग स्तम्भ है, जिसमें भी राजस्थानी कवितायें, कहानियां और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं।

४ 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन संस्था के लिये गौरव की वस्तु है। गत १४ वर्षों से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एवं अन्य कठिनाइयों के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन सम्भव नहीं हो सका है। इसका भाग ५ अङ्क ३-४ 'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक' बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। यह अङ्क एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य-सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है। पत्रिका का अगला ७वां भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। इसका अङ्क १-२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड़ का सचित्र और वृहत् विशेषांक है। अपने ढंग का यह एक ही प्रयत्न है।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन मे भारत एवं विदेशों से लगभग ८० पत्र-पत्रिकाएं हमें प्राप्त होती हैं। भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों मे भी इसकी मांग है व इसके ग्राहक हैं। शोधकर्त्ताओं के लिये 'राजस्थान भारती' अनिवार्यतः संग्रहणीय शोध-पत्रिका है। इसमें राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखों के अतिरिक्त संस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्रीनरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचन्द नाहटा की वृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है।

५. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान, सम्पादन एवं प्रकाशन

हमारी साहित्य-निधि को प्राचीन, महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों को सुरक्षित रखने एवं सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एवं शुद्ध रूप में मुद्रित करवा कर उचित मूल्य में वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। संस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रंथों का अनुसंधान और प्रकाशन संस्था के सदस्यों की ओर से निरंतर होता रहा है जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६. पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई संस्करण प्रकाश में लाये गये हैं और उनमें से लघुतम संस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अंश 'राजस्थान भारती' में प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध संस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान-भारती में प्रकाशित हुए है।

७. राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखां) की ७५ रचनाओं की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अंक में प्रकाशित हुई है। उसका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य 'क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८. राजस्थान के जैन संस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबंध राजस्थान भारती में प्रकाशित किया जा चुका है।

९. मारवाड़ क्षेत्र के ५०० लोकगीतों का संग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एवं जैसलमेर क्षेत्र के सैकड़ों लोकगीत, घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, लोरियां और लगभग ७०० लोक कथाएँ संग्रहीत की गई हैं। राजस्थानी कहावतों के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पाबूजी के पवाड़े और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान-भारती' में प्रकाशित किए गए हैं।

१० बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखों का विशाल संग्रह 'बीकानेर जैन लेख संग्रह' नामक बृहत् पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

११. जसवंत उद्योत, मुंहता नैणसी री ख्यात श्रौर श्रनोखी श्रान जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथों का सम्पादन एवं प्रकाशन हो चुका है।

१२. जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचंद भंडारी की ४० रचनाओं का अनुसंधान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के संबंध में भी सबसे प्रथम 'राजस्थान-भारती' मे लेख प्रकाशित हुआ है।

१३. जैसलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखो और 'भट्टि वंश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रंथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।

१४. बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रंथो का अनुसंधान किया गया और ज्ञानसार ग्रंथावली के नाम से एक ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओ का संग्रह प्रकाशित किया गया है।

१५. इसके अतिरिक्त सस्था द्वारा—

(१) डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज, और लोकमान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियों के निर्वाण-दिवस और जयन्तियां मनाई जाती हैं।

(२) साप्ताहिक साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमें अनेको महत्वपूर्ण निबंध, लेख, कविताएँ और कहानिया आदि पढी जाती हैं, जिससे अनेक विध नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है। विचार विमर्श के लिये गोष्ठियो तथा भाषणमालाओं आदि का भी समय-समय पर आयोजन किया जाता रहा है।

१६. बाहर से ख्यातिप्राप्त विद्वानो को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० कैलाशनाथ काटजू, राय श्री कृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्रन्, डा० सत्यप्रकाश, डा० डब्लू० एलेन, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिबेरिओ-तिबेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानो के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके है।

गत दो वर्षों से महाकवि पृथ्वीराज राठौड आसन की स्थापना की गई है। दोनों वर्षों के आसन-अधिवेशनों के अभिभाषक क्रमशः राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, बिसाऊ और पं० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०, हूंडलोद, थे।

इस प्रकार संस्था अपने १६ वर्षों के जीवन-काल में, संस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरंतर सेवा करती रही है। आर्थिक संकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह संभव नहीं हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लड़खड़ा कर गिरते पड़ते इसके कार्यकर्त्ताओं ने 'राजस्थान-भारती' का सम्पादन एवं प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओं के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे। यह ठीक है कि संस्था के पास अपना निजी भवन नहीं है, न अच्छा संदर्भ पुस्तकालय है, और न कार्य को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं; परन्तु साधनों के अभाव में भी संस्था के कार्यकर्ताओं ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश में आने पर संस्था के गौरव को निश्चय ही बढ़ा सकने वाली होगी।

राजस्थानी-साहित्य-भंडार अत्यन्त विशाल है। अब तक इसका अत्यल्प अंश ही प्रकाश में आया है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एवं अनर्घ रत्नों को प्रकाशित करके विद्वज्जनों और साहित्यिकों के समक्ष प्रस्तुत करना एवं उन्हें सुगमता से प्राप्त कराना संस्था का लक्ष्य रहा है। हम अपनी इस लक्ष्य पूर्त्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढता के साथ अग्रसर हो रहे हैं।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तकों के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना संभव नहीं हो सका। हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक संशोध एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम मंत्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास की योजना के अंतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये रु० १५०००) इस मद में राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल रु० ३००००) तीस हजार की सहायता, राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशन

हेतु इस संस्था को इस वित्तीय वर्ष में प्रदान की गई है; जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ३१ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है ।

१. राजस्थानी व्याकरण—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२. राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध)	डा० शिवस्वरूप शर्मा अचल
३. अचलदास खीची री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४. हमीरायण—	श्री भंवरलाल नाहटा
५. पद्मिनी चरित्र चौपई—	,, ,, ,,
६. दलपत विलास	श्री रावत सारस्वत
७. डिंगल गीत—	,, ,, ,,
८. पंवार वंश दर्पण—	डा० दशरथ शर्मा
९. पृथ्वीराज राठोड़ ग्रंथावली—	श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
१०. हरिरस—	श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
११. पीरदान लालस ग्रंथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१२. महादेव पार्वती वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३. सीताराम चौपई—	श्री अगरचन्द नाहटा
१४. जैन रासादि संग्रह—	श्री अगरचन्द नाहटा और डा० हरिवल्लभ भायाणी
१५. सदयवत्स वीर प्रबन्ध—	प्रो० मंजुलाल मजूमदार
१६. जिनराजसूरि कृतिकुसुमांजलि—	श्री भंवरलाल नाहटा
१७. विनयचन्द कृतिकुसुमांजलि—	,, ,, ,,
१८. कविवर धर्मवर्द्धन ग्रंथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१९. राजस्थान रा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२०. वीर रस रा दूहा—	,, ,, ,,
२१. राजस्थान के नीति दोहा—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२. राजस्थान व्रत कथाएं—	,, ,, ,,
२३. राजस्थानी प्रेम कथाएं—	,, ,, ,,
२४. चंदायन—	श्री रावत सारस्वत

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन संग्रह (संपा० डा० दशरथ शर्मा), ईशरदास ग्रंथावली (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया), रामरासो (प्रो० गोवर्द्धन शर्मा), राजस्थानी जैन साहित्य (ले० श्री अगरचन्द नाहटा), नागदमण (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया), मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रंथो का संपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नही हो रहा है ।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एवं गुरुता को लक्ष्य में रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमें अवश्य प्राप्त हो सकेगी -जिससे उपरोक्त संपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथो का प्रकाशन सम्भव हो सकेगा ।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षाविकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन-एड की रकम मंजूर की ।

राजस्थान के मुख्य मन्त्री माननीय मोहनलालजी सुखाडिया, जो सौभग्य से शिक्षा मन्त्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एवं पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता के प्राप्त कराने मे पूरा-पूरा योगदान रहा है। अतः हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं, जिन्होने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस वृहद् कार्य को सम्पन्न करने में समर्थ हो सके । संस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी ।

इतने थोड़े समय में इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थों का संपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य में जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादकों व लेखकों के अत्यंत आभारी हैं।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, स्व० पूर्णचन्द्र नाहर संग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन संग्रह कलकत्ता, महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसंधान समिति जयपुर, ओरियंटल इन्स्टीट्यूट बड़ोदा, भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ वृहद् ज्ञान-भंडार बीकानेर, मोतीचंद खजान्ची ग्रंथालय बीकानेर, खरतर आचार्य ज्ञान भण्डार बीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बंबई, आत्माराम जैन ज्ञानभंडार बडोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशंकर देराश्री, पं० हरदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि अनेक संस्थाओं और व्यक्तियों से हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रन्थों का संपादन संभव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थों का सम्पादन श्रमसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय में ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छतः स्खलनंक्वपि भवत्येव प्रमादतः, हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः।

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनों का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावों द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुनः मां भारती के चरण कमलों में विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पांजलि समर्पित करने के हेतु पुनः उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे।

निवेदक
लालचन्द कोठारी
प्रधान-मंत्री
सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट
बीकानेर

बीकानेर,
मार्गशीर्ष शुक्ला १५
सं० २०१७
दिसम्बर ३, १९६०.

रानी पद्मिनी — एक विवेचन

भारतीय इतिहास के अनेक व्यक्ति भावना विशेष के प्रतीक बन चुके हैं। भगवान राम मर्यादापुरुषोत्तम हैं तो कृष्ण तत्त्ववेत्ता और दूरदर्शी राजनीतिज्ञ। पृथ्वीराज विलासप्रिय क्षत्रिय है तो जयचन्द्र मत्सरयुक्त देशद्रोही। एक ओर महाराणा प्रताप हैं तो दूसरी ओर राजा मानसिंह। इसमें भामाशाह है तो माधव और राघव चेतन्य भी। जहाँ दानवावतार अलाउद्दीन है, वहाँ पातिव्रत्य की रक्षा में सहायक और जीवदानी गोरा भी। संयोगिता सामान्य जन मानस में महाभारत रचयित्री द्रौपदी का अवतार है। पद्मिनी अनुपम सौन्दर्य का ही नहीं, बुद्धियुक्त धैर्य, असीम साहस और पातिव्रत्य का भी प्रतीक बन चुकी है, और उसकी गाथा को अनेक रूप में कवियों ने प्रस्तुत किया है। किन्तु किसी आदर्श-विशेष का प्रतीक बनना या अनेकशः वर्णित होना ही, किसी व्यक्ति की ऐतिहासिकता सिद्ध करने के लिए पर्याप्त नहीं है। सम्भावना अवश्य हो सकती है कि ऐसे व्यक्ति रहे होंगे; किन्तु यह सम्भावना यदि इतिहास से ज्ञात तथ्यों के विरुद्ध हो तो उसे छोड़ने में भी कोई दोष नहीं है। पद्मिनी की ऐतिहासिकता

भी इसी कसौटी पर परख कर सिद्ध या असिद्ध की जा सकती है।

पद्मिनी का सबसे प्रसिद्ध वर्णन सन् १५४० ई० में रचित जायसी के 'पद्मावत' काव्य में है। उसके अनुसार पद्मिनी सिंहलद्वीप के राजा गंधर्वसेन की पुत्री थी और रतनसेन चित्तौड़ का राजा था। हीरामन तोते के मुख से पद्मिनी के सौन्दर्य का वर्णन सुनकर रतनसेन योगी बनकर सिंहल पहुँचा और अन्ततः पद्मिनी से विवाह करने में सफल हुआ। चित्तौड़ की राज्य सभा में राघवचेतन नाम का एक तांत्रिक ब्राह्मण था। राज्य से निर्वासित होने पर वह दिल्ली पहुंचा। उसने अलाउद्दीन के सामने पद्मिनी के सौन्दर्य की इतनी प्रशंसा की कि सुल्तान ने पद्मिनी की प्राप्ति के लिए चित्तौड़ पर घेरा डाल दिया। जब बल से काम न चला तो अलाउद्दीन ने छल से काम लिया। वह अतिथि रूप में चित्तौड़ पहुंचा और दर्पण में पद्मिनी का प्रतिबिंब देखकर मुग्ध हो गया। जब राजा उसे पहुँचाने के लिए सातवें द्वार तक पहुँचा तो अलाउद्दीन ने उसे सहसा पकड़ लिया और कैदी बनाकर दिल्ली ले गया। कैद से छुटने की केवल मात्र शर्त यही थी वह पद्मिनी को दे दे। उधर गोरा और बादल की सलाह से पद्मिनी ने भी छल से राजा को छुड़ाने का निश्चय किया। वह सोलह सौ डोलियों में स्त्री वेषधारी राजकुमारों को बिठला कर दिल्ली पहुँची। थोड़ी सी देर के लिए राजा से मिलने का बहाना कर पद्मिनी

ने राजा को कैद से छुड़ाया और स्वयं बलपूर्वक नगर से बाहर निकल गई। बादल उनके साथ चित्तौड़ पहुँचा। गोरा ने पीछा करने वाली मुसलमानी सेना से लड़कर वीरगति प्राप्त की। कुछ समय के बाद राजा ने कुम्भलमेर पर आक्रमण किया और घायल होकर स्वर्गस्थ हुआ। पद्मिनी और उसकी सपत्नी नागमती सती हुई। इतने में ही अलाउद्दीन ने चित्तौड़ पर फिर आक्रमण किया। इस बार अलाउद्दीन की विजय हुई। बादल युद्ध में काम आया और चित्तौड़ पर मुसल्मानों का अधिकार हुआ।

इस रूप में कथा ऐतिहासिक भी प्रतीत होती है। किन्तु जायसी ने सब कथा को रूपक बतला कर उसकी ऐतिहासिकता को अत्यन्त संशयास्पद बना दिया है। उसने लिखा है, "इस कथा में चित्तौड़ शरीर का, राजा मन का, सिंहलद्वीप हृदय का, पद्मिनी बुद्धि का, तोता मार्गदर्शक गुरु का, नागमती संसार के कामों की, राघव शैतान का और अलाउद्दीन माया का सूचक है[1]।"

फरिश्ता ने अपनी तवारीख पद्मावत से लगभग सत्तर वर्ष के बाद लिखी। उसकी कथा जायसी की कथा से मिलती

१—देखें डा॰ ओझा रचित, उदयपुर का इतिहास पहली जिल्द पृ॰ १८३-१८७

जुलती है। किन्तु उसने पद्मावती को राजा रतनसेन की पुत्री बना दी है[१]।

श्री अगरचन्दजी नाहटा के संग्रह में गोरा बादल कवित्त नाम की एक लघुकाय रचना है। भाषा और शैली की दृष्टि से यह रचना पद्मावत से कुछ विशेष अर्वाचीन प्रतीत नहीं होती। गोरा बादल विषयक अन्य रचनाओं में इसके अवतरण भी इसकी प्राचीनता के द्योतक हैं। इसमें भी रतनसेन गहलोत चित्तौड़ का राजा है। रानी नागमती के ताने से रुष्ट होकर वह सिंहल पहुँचा और पद्मिनी से विवाह कर चित्तौड़ वापस आया। खेल में अप्रसन्न होकर उसने राघव चैतन्य नाम के ब्राह्मण को देश से निकाल दिया। राघव चैतन्य ने दिल्ली पहुँच कर सब लोगों को अपनी अद्भुत तांत्रिक शक्ति से विस्मित कर दिया। उससे अलाउद्दीन ने पद्मिनी स्त्रियों के गुण सुने। सिंहल में पद्मिनीयाँ प्राप्त थी। किन्तु सिंहल और भारत के बीच में समुद्र होने के कारण वह सिंहल न पहुँच सका। जब उसने सुना कि रतनसेन के घर में भी पद्मिनी रानी थी तो वह चित्तौड़ पहुंचा। राजाने उसका आतिथ्य किया। बातें करते करते राजा ने दुर्गका अन्तिम फाटक पार किया तो सुल्तान ने राजा को पकड़ लिया। जब मंत्रियों ने रानी को दे कर राजा को छुड़ाने का निश्चय किया तो रानी

१—विशेष विवरण के लिए उपर्युक्त इतिहास देखें, पृ० १८८-१८९

गोरा के यहाँ पहुंची। उसने बादल को भी तैयार किया। पाँच सौ डोलियाँ तैयार हुई और एक एक डोली में पाँच-पाँच आदमी बैठे। बादल ने स्वयं पद्मिनी का रूप धारण किया, और राजा को बचा ले गया। गोरा युद्ध में काम आया[१]।

संवत् १६४५ में जैन कवि हेमरतन ने महाराणा प्रताप के राज्यकाल में इस वीर गाथा की अपने शब्दों में पुनरावृत्ति की। 'स्वामिधर्म' का प्रचार सम्भवतः इस नव्य रचना का मुख्य लक्ष्य था इसी कथा का परिवर्धन संवत् १७६० में भाग-विजय नाम के अन्य जैन कवि ने किया[२]।

जटमल नाहर रचित 'गोरा बादल चौपई भी इस ग्रंथ में प्रकाशित हो रही है। इसका रचनाकाल वि० सं० १६८० है[३]। कथा में कुछ द्रष्टव्य बातें ये हैं :—

(क) चित्तोड़ का राजा रतनसेन चौहान है।

(ख) एक भाट से पद्मिनी के विषय में सुनकर वह सिंहल जाने का निश्चय करता है।

(ग) सिंहलराज ने बिना किसी आपत्ति के रतनसेन और पद्मावती का विवाह कर दिया और राघवचेतन को उसके साथ चित्तोड़ भेजा।

१—देखें इस संग्रह के पृ०१०९-१२८

२—देखें शोधपत्रिका भाग ३, अङ्क २ पृष्ठ १०५-११४ पर श्री अगरचन्द नाहटा का लेख।

३—पृ० १८३-२०८

(घ) राघव को व्यर्थ ही चरित्रभ्रष्ट समझ कर रतनसेन ने देश से निकाल दिया।

(ङ) समुद्र के कारण सिंहल से पद्मिनी स्त्री की प्राप्ति में विफल होकर, अलाउद्दीन ने राघव चैतन्य के कहने पर चित्तौड़ पर चढ़ाई की।

(च) राजा ने अलाउद्दीन को पद्मिनी दिखलाई।

(छ) अलाउद्दीन ने द्वार पर राजा को पकड़ा।

(ज) मार से घबरा कर राजा ने पद्मावती को देने का सदेश चित्तौड़ भेजा।

(झ) मंत्री पद्मावती को देने के लिए तैयार हुए। किन्तु गोरा और बादल ने युद्ध की सलाह दी बाकी कथा प्रायः वैसी ही है जैसी गोरा बादल कवित्त की और सम्भवतः उसीके आधार पर रचित है।

इसके बाद सम्वत् १७०६-१७०७ में रचित लब्धोदय की पद्मिनी चरित चौपई भी इस संग्रह में प्रकाशित है[1]। कुछ परिवर्तन द्रष्टव्य है :—

(क) नागमती के स्थान पर इसमें रतनसेन की पहली रानी का नाम प्रभावती है।

(ख) सिंहल-प्रयाण की कथा कुछ और अतिरंजित है।

(ग) पद्मिनी के देने का विचार वही है, किन्तु मुख्यतः

1—देखें पृ० १-१०८

इस मंत्रणा का दोष सपत्नी प्रभावती के पुत्र वीरभाण को दिया गया है।

(घ) कथा भाग को यत्र-तत्र परिवर्द्धित कर दिया गया है।

दलपत—दौलतविजय के खुमाण-रासो में भी पद्मिनीकी कथा है[1] राघवचतन्य से अलाउद्दीन ने राणा रतनसेन को पकडा। किन्तु इसमें रतनसेन जटमल नाहर की 'गोरा बादल चौपई' का कायर रतनसेन नहीं है, इसका अलाउद्दीन भी कुछ बादशाही शान रखता है। उसने गुण को परखना सीखा है।

राजपूत कालीन राजपूती का सुन्दर वर्णन भी इन शब्दों में दर्शनीय है।

रजपूतां ए रीत सदाई, मरणैं मंगल हरखित थाई ॥४७॥
रिण रहचिया म रोय, रोए रण भांजे गया।
मरणे मंगल होय, इण घर आगां ही लगें॥ ४८॥

इस विषय की अनेक अन्य कृतिया भी प्राप्त है[2]। टॉड ने अंग्रेजी में पद्मिनी का चरित्र प्रस्तुत किया है। उसने रतनसेन के स्थान पर भीमसिंह को रखा। पद्मिनी सिंहलद्वीप के राजा हमीरसिंह चौहान की पुत्री है। गोरा पद्मिनी का

१—देखें पृ० १२९-१८१

२—देखें शोध पत्रिका, भाग ३, अङ्क २ में श्री नाहटाजी का उपर्युक्त लेख।

चाचा और बादल गोरा का पुत्र है। राणा के छूट जाने पर जब अलाउद्दीन दुबारा चित्तौड़ पर आक्रमण करता है तो राणियाँ जौहर करती हैं और भीमसिंह आदि दुर्ग के द्वार खोल कर लड़ते हुए वीर गति प्राप्त करते हैं।

पद्मावती विषयक इन सब कथाओं में कुछ बातें एक सी हैं। पद्मावती सिंहल की राजकुमारी है, कथा का नायक रतनसेन और प्रतिनायक अलाउद्दीन है। दुर्मन्त्रणादायी तान्त्रिक ब्राह्मण राघवचैतन्य है। गोरा बादल पद्मावती की सतीत्व के रक्षा करने वाले हैं, और पद्मावती सती धर्म प्रतिष्ठिता राजपूत वीराङ्गना हैं। इनमें कौनसी बात तथ्य है और कौन सी अतथ्य यह एक विचारणीय विषय है। जहाँ तक सिंहल से पद्मावती का सम्बन्ध है, डा० श्री गौरीशंकर हीराचन्द ओझा तक इसे सिंगौली का ठिकाना मानने के लिये विवश हुए हैं।

जो विद्वान् पद्मावती की ऐतिहासिकता स्वीकार नहीं करते उनकी संख्या पर्याप्त है। डा० किशोरीशरण-लाल ने कुछ वर्ष हुए पद्मावती की ऐतिहासिकता का खण्डन किया था। अब इस पक्ष का अंतिम और सबसे अधिक व्यापक विमर्श डा० कालिकारञ्जन कानूनगो ने प्रस्तुत किया है[१]। उनकी मुख्य युक्तियाँ निम्नलिखित है :—

१-Studies in Rajput history—A Critical analysis of the Padmavati legend.

(क) कथाओं में पद्मिनी के विषय में कोई ऐकमत्य नहीं है। इसके पिता का नाम विभिन्न रूप में प्राप्त है। जायसी ने इसके पति का नाम रतनसेन तो टॉडने भीमसिंह दिया है। डा० ओझा ने उसके पति का नाम रत्नसिंह माना है, किन्तु वे उसके लिये कोई प्रमाण उपस्थित न कर सके हैं।

(ख) बरनी, इसामी, निजामुद्दीन आदि मुसलमान इतिहासकारों ने कहीं पद्मिनी के नाम का उल्लेख नहीं किया है।

(ग) डा० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव ने खजाइनुल फुतूह के आधार पर पद्मिनी की सत्ता को सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। वास्तव में इस ग्रन्थ में पद्मिनी की ओर किञ्चिन्-मात्र भी संकेत नहीं है।

(घ) पद्मिनी सर्वथा जायसी की कल्पना है, और पद्मिनी-विषयक जितने उल्लेख हैं वे सब जायसी के बाद के हैं।

उपर्युक्त युक्तियों में अनेक सत्य होती हुई भी अनैकान्तिक हैं। पद्मावती-विषयक प्रायः सभी प्राप्त कथाएँ घटनाकाल से दो सौ वर्ष से भी अधिक बाद की हैं। इस दीर्घकाल में वंशादि के विषय में कुछ भ्रान्तियाँ स्वाभाविक हैं। पद्मावती और सिंहल का सम्बन्ध कुछ कवि-समय सिद्ध से है। रहा पति का नाम; इस विषय में भ्रान्ति केवल उन्नीसवीं शताब्दी के लेखक टॉड को रही है। महारावल रत्नसिंह के समय का वि० सं०

१३५६ माघ सुदि ५ बुधवार का एक शिलालेख प्राप्त है। अलाउद्दीन ने संवत् १३५६ माघ सुदि के दिन चित्तौड़ पर प्रयाण किया और वि० सं० १३६० भाद्रपद सुदि १४ के दिन किला फतह हुआ। इन प्रमाणों से निश्चित रूप में कहा जा सकता है कि वि० सं० १३५६-६० में रत्नसिंह ही मेवाड़का राजा था और उसी ने अलाउद्दीन से युद्ध किया। यदि पद्मिनी अलाउद्दीन के आक्रमण के समय चित्तौड़ की रानी थी तो उसका पति वि० स० १३५६ के शिलालेख का यही 'महाराजकुल रत्नसिंह रहा होगा। इतिहास के विद्यार्थियों को यह कह कर भ्रान्त करने की आवश्यकता नहीं है कि मेवाड़ के इतिहास से हमें चार रत्नसिंह ज्ञात हैं। अतः हम यह निश्चित ही नही कर सकते कि इनमें कौन पद्मिनी का पति रहा होगा।

दूसरी युक्ति केवल मौन के आधार पर है। वास्तव में राजपूत इतिहास का मुसल्मान इतिहासकारों को ज्ञान ही कितना है कि हम कह सकें कि प्रामाणिक इतिहास इतना ही है; इससे अतिरिक्त कुछ है ही नहीं। स्वयं अलाउद्दीन के विषय में अनेक बातें हैं जिनका वर्णन हिन्दू लेखकों ने किया है, किन्तु बरनी इसामी आदि जिनके बारे में सर्वथा मौन हैं[१०]। खीची

१०—हमारे 'प्राचीन चौहान राजवंश' में हम्मीर और कान्हड़देव के वर्णन पढ़ें।

अचलदास की वचनिका में अनेक ऐसे जौहरों का उल्लेख हैं जिनका वर्णन हमें मुसलमानी तवारीखों में नहीं मिलता[१]। हम जिस प्रकार मुसलमानी तवारीखों के मौन के कारण उन्हें असत्य मानने के लिए विवश नहीं हैं, उसी तरह उनका मौन हमें पद्मिनी को भी कल्पित मानने के लिए विवश नहीं करता।

डा० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव ने खजाईनुल फुतूह के आधार पर पद्मावती की सत्ता का प्रमाण उपस्थित किया था। डा० कानूनगो ने उसका निराकरण किया है। खजाइनुल फुतूह के वर्णन का सारांश बहुत कुछ अमीरखुसरो के ही शब्दों में निम्नलिखित है[२]।

८ जमादि उस सानी, हि० म० ७०२ सोमवार के दिन विश्वविजयी (अलाउद्दीन) ने चित्तोड़ जीतने का निश्चय किया। दिल्ली से सेना चित्तौड़ की सीमा पर पहुँची। दो महीने तक 'तलवारों की बाद पहाड़ की कमर तक चढ़ी पर आगे न बढ़ सकी।' उसके बाद मगरिबियों से दुर्ग पर पत्थरों की वर्षा होने लगी। ११ मुहर्रम, हि० स० ७०३ सोमवार के दिन 'उस युग का सुलेमान' [अलाउद्दीन] दुर्ग में पहुँचा। "यह भृत्य [अमीर खुसरो] जो सुलेमान का पक्षी है उसके

१—श्री नरोत्तमदास और स्वामी द्वारा संपादित अचलदास खीचीरी वचनिका में हमारी भूमिका पढ़ें।

२—देखें जर्नल ऑफ इण्डियन हिस्ट्री, जिल्द ८, पृष्ठ ३६९-३७१

साथ था। वे बार बार 'हुदहुद हुदहुद' चिल्ला रहे थे। किन्तु मैं [अमीर ख़ुसरो] वापस न लौटा, क्योंकि मुझे डर था कि शायद सुल्तान पूछ बैठे, 'मुझे हुदहुद क्यों नहीं दिखाई पड़ता ? क्या वह अनुपस्थित है ?' और यदि वह ठीक कैफियत मांगे तो मैं क्या बहाना करूँगा।" उस समय वर्षाऋतु थी। "सुल्तान के क्रोध की बिजली से आहत होकर राय एडी से चोटी तक जल उठा और पत्थर के द्वार से इस तरह उछल निकला जैसे आग पत्थर से निकलती है। पानी में पड़ कर वह शाही शामियाने की तरफ दौड़ा। इस तरह उसने तलवार की बिजली से अपने को बचा लिया। हिन्दू कहते हैं कि बिजली पीतल के बर्तन पर अवश्य गिरती है और राय का मुँह भय के मारे पीतल सा पीला पड़ गया था। यह निश्चित है कि वह तलवार और बाणों की बिजली से सुरक्षित न रहता, यदि वह शाही शामियाने के दरवाजे तक न पहुँचता।"

इसी अवतरण पर टिप्पण करते हुए प्रोफेसर हबीब ने लिखा था, "हुदहुद वह पक्षी है जो सुलेमान के पास सेबा की रानी बलकिस के समाचार लाता है। यह स्पष्ट है कि सुलेमान के सेबा आदि की तर्फ संकेत के लिये पद्मिनी उत्तरदायी है[१]।" चित्तोड़ की बलकिस तो उस समय भस्म हो चुकी थी। फिर उस युग के सुलेमान, अलाउद्दीन को उसके समाचार कौन देता ? डा० कानूनगो ऊपर दिए हुए अवतरण में पद्मिनी की

१—वही पृष्ठ ३७१, टिप्पणी १

ओर कोई संकेत नहीं पाते। किन्तु संकेत वास्तव में तो अत्यधिक अस्पष्ट नहीं है। अन्यथा इसमें हुदहुद, शेबा, सुलेमान आदि के लिए विशेष कारण ही क्या था ?

यह अवतरण अन्य दृष्टियों से भी महत्वपूर्ण है। यह ठीक है कि इससे पद्मिनी के आरम्भिक जीवन पर कुछ प्रकाश नहीं पड़ता। न हम इसके आधार पर यही सिद्ध कर सकते हैं कि गोरा बादल पद्मिनी को छुड़ा लाए थे। किन्तु चित्तोड़ में अन्ततः क्या हुआ इसकी झाँकी इसमें अवश्य प्रस्तुत है। चित्तोड़ का घेरा छः महीने तक चला। जब बचाव की आशा न रही तो राजपूत दरवाजा खोलकर शाही शामियाने की ओर बढ़ चले [१]। खजाइनुल फ़ुतूह से ही सिद्ध है कि अलाउद्दीन के हाथों 'हजारों' विद्रोही मारे गए। किन्तु रत्नसिंह या तो पकड़ा गया, या उसने आत्मसमर्पण किया। दुर्ग बादशाह के हाथ आया किन्तु जिस बलकिस की आशा में युग का सुलेमान वहाँ पहुंचा था, वह उस समय समाप्त हो चुकी थी। वह किसी भी हुदहुद की पहुंच के बाहर थी।

रत्नसिंह की इस अंतिम गति का कुछ आभास हमें नाभिनन्दन जिनोद्धार ग्रन्थ से भी मिलता है जिसका रचनाकाल सन् १३३६ ई० है। उसमें अलाउद्दीन की अनेक विजयों का वर्णन करते हुए कक्कसूरि ने यह भी लिखा है कि उसने चित्रकूट के राजा को पकड़ा, उसका धन छीन लिया, और

१—शाही शामियाने पर कूच का वर्णन प्रायः हर एक जौहर के बाद है।

कण्ठ में (रस्सी) बांध कर नगर नगर में बन्दर की तरह घुमाया (३.४)। यह मानने की इच्छा तो नहीं होती कि मेवाड़ाधिपति को भी ऐसे दिन देखने पड़े थे। किन्तु एक सम-सामयिक और निष्पक्ष उद्धरण को असत्य कहकर टालना भी कठिन है। कहा जाता है कि महाप्रतापशाली कविजनवन्दित कविश्रेष्ठ मुञ्ज परमार की भी कभी ऐसी ही दशा हुई थी।

पद्मिनी और रतनसेन के जीवन की इस अन्तिम झांकी से पूर्व के वृत्त के लिये हमें पद्मिनी सम्बन्धी साहित्य को ही आधार रूप में ग्रहण करना पड़ता है। यदि पद्मिनी सम्बन्धी सब साहित्य पद्मावत मूलक हो और पद्मावत सर्वथा कल्पनामूलक, तो पद्मावती की ऐतिहासिकता को हम बहुत कुछ समाप्त ही समझ सकते हैं। किन्तु वास्तव में ऐसी बात नहीं है। जायसी ने रूपक की रचना अवश्य की है, किन्तु उसने हर एक गुण और द्रव्य के अनुरूप ऐतिहासिक पात्र चुना है। इसमें अलाउद्दीन, चित्तौड़ और सिंहल ही नहीं, पद्मिनी और राघवचैतन्य भी ऐतिहासिक व्यक्ति हैं।

मन्त्रवादी के रूप में राघव चैतन्य का उल्लेख वृद्धाचार्य प्रबन्धावली के अन्तर्गत जिनप्रभसूरि प्रबन्ध में वर्तमान है। श्री लालचन्द भगवानदास गाँधी ने इसे पन्द्रहवीं और श्री अगरचन्द नाहटा ने सोलहवीं शती की कृति मानी है। श्री नाहटा जी ने सम्भवतः इसके संवत् १६२६ की एक प्रति भी देखी है। एपिग्राफिआ इंडिका, भाग १, पृष्ठ १६२-१६४ में

प्रकाशित ज्वालामुखी देवी का स्तव भी राघवचैतन्य मुनि की कृति है। यह राघवचैतन्य सम्भवतः जिनप्रभसूरि प्रबन्ध के राघव चैतन्य से अभिन्न है। शार्ङ्गधर पद्धति का रचयिता शार्ङ्गधर राघव का पौत्र था और उसने अत्यन्त आदर पूर्वक श्री राघव चैतन्य के श्लोकों को उद्धृत किया है। इससे सिद्ध है कि राघवचैतन्य की ऐतिहासिकता जायसी के पद्मावत पर निर्भर नहीं है। और यही बात अब दृढ़ता के साथ पद्मावती के विषय में भी कही जा सकती है।

छिताई चरित्र का एक सस्करण प्रकाशित हो चुका है। दूसरा श्री अगरचन्द जी नाहटा द्वारा सम्पादित होकर शीघ्र ही इन्दौर से प्रकाशित होने वाला है। इसकी रचना के समय महानगर सारंगपुर में सलहदी शासन कर रहा था। सलहदी की मृत्यु ६ मई, सन् १५३२ के दिन हुई। इससे स्पष्ट है कि छिताई चरित की रचना इससे पूर्व हुई होगी। विशेष रूप से ग्रन्थ रचना का वर्णन इस पद्य में है।

पन्द्रह सइ रु तिरासी माता।
कछूक सुनी पाछली बाता ॥१०॥
सुदि आषाढ सातइं तिथि भई।
कथा छिताई जंपन लई॥

इसके अनुसार छिताई चरित की रचना वि० सं० १५८३ तदनुसार सन् १५२६ ई० में हुई। पद्मावत का रचनाकाल सन् १५०० है। अतः यह निश्चित है कि छिताई चरित अपनी

कथा के लिये पद्मावत का ऋणी नहीं हो सकता। अलाउद्दीन के देवगिरि पर आक्रमण के समय जब समरसिंह वहाँ से निकल गया और अलाउद्दीन को यह आशंका हुई कि यादवराज रामदेव की पुत्री भी वहाँ से निकल गई होगी तो उसने राघव चैतन्य से कहा—

मेरो कहिउ न मानइ राउ।
बेटी देई न छांडइ ठाऊं ॥४२३॥
सेवा करइ न कुतबा पढई।
अहि निसि जूझि बराबर चढई।
धसि मौरसी देसतरु गयो।
अति धोखउ मेरे जीय भयो ॥४२४॥
रनथंभौर देवल लगि गयो।
मेरो काज न एकौ भयो।
इउं बोलइ ढीली कउ धनी।
मइ चीत्तौर सुनी पदुमिनी ॥४५५॥
बंध्यौ रतनसेन मइ जाइ।
लइगो बादिल ताहि छंडाइ।
जो अबके न छिताई लेऊं।
तो यह सीसु देवगिरि देऊं ॥४५६॥

"राजा (रामदेव) मेरा कहना नहीं मानता। वह न बेटी देता है और न स्थान छोड़ता है। वह न सेवा करता है, और न (आधीनता सूचक) खुत्बा पढ़ता है। समरसिंह निकल

कर देशान्तर में चला गया है। इससे मेरे जी में अत्यन्त धोखा हुआ है। मैं देवल (देवी) के लिए रणथंभोर गया ; किन्तु मेरा एक काम भी सिद्ध न हुआ।" (फिर) दिल्ली के स्वामी ने कहा, "मैंने चित्तौड़ में पद्मिनी की सत्ता के बारे में सुना। मैंने जा कर रत्नसेन को बाँध लिया, किन्तु बादल उसे छुड़ा ले गया। जो अबकी बार मैंने छिताई को न लिया तो यह सिर मैं देवगिरि को अर्पण करूँगा।"

इस अवतरण से सिद्ध है कि जायसी के पद्मावत से पूर्व ही पद्मिनी की कथा और अलाउद्दीन की लम्पटता पर्याप्त प्रसिद्ध प्राप्त कर चुकी थी। जायसी ने पद्मावती, रत्नसेन और बादल का सृजन नहीं किया। ये जनमानस में उससे पूर्व ही वर्तमान थे। समयानुक्रम से इस कथा में अनेक परिवर्तन भी हुए होंगे। यह सम्भव नहीं है कि पद्मावती की कर्णपरम्परागत गाथा सोलहवीं शताब्दी तक सर्वथा तथ्यमयी ही रही हो। किन्तु उसे जायसी की कल्पना मानने की व्यर्थ कल्पना को अब हम तिलाञ्जलि दे सकते हैं। सन् १३०२-३ में रत्नसेन (रत्नसिंह) की सत्ता निर्विवाद है। राघवचैतन्य ऐतिहासिक व्यक्ति हैं। परम्परा-सिद्ध पद्मावती की सत्ता भी असम्भावना की कोटि में प्रविष्ट नहीं होती। विषय-लोलुप अलाउद्दीन, सती पद्मिनी, वीरव्रती गोरा और बादल ये सब ही तो स्वचरित्रानुरूप हैं। हर्षचरित में भ्रातृजाया की रक्षार्थ कामिनी-वेष को धारण कर शत्रुशिविर में पहुँच कर

शकाधिपति को मारने वाले साहसाङ्क चन्द्रगुप्त के इतिवृत्त को पढ़ने वालों के लिए तो बादल का वीर कार्य भी भारतीय परम्परा के अनुकूल है। बादल ने केवल अपने स्वामी की रक्षा की। चन्द्रगुप्त ने तो अपनी भ्रातृजाया को बचाया और 'परकलत्रकामुक' विजयी शकराज का भी हनन किया था[१]। शौर्य और साहस के ऐसे कार्यों से भारतीय इतिवृत्त देदीप्यमान है, और इन्हीं से भारतीय सांस्कृतिक परम्परा की रक्षा हुई है।

'नवीन बसन्त'
आश्विन शुक्ला चतुर्थी, — दशरथ शर्मा
वि० सं० २०१८

१—"अरिपुरेच परकलत्रकामुकं कामिनीवेशगुप्तश्च चन्द्रगुप्तः शकपतिम शातयत्" (पृ० १९९-२००)।
इसी पर टीका में शङ्कर ने लिखा है, "शकानामाचार्यः शकाधिपतिः। चन्द्रगुप्तभ्रातृजायां ध्रुवदेवीं प्रार्थयमानश्चन्द्रगुप्तेन ध्रुवदेवी वेष-धारिणा स्त्रीवेषजनपरिवृतेन रहसि व्यापादित इति।"

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति में संतपुरुष व सतियों के जीवनचरित का बड़ा भारी महत्व है। महान् व्यक्तियों के उदार चरित युग-युग तक जनता के जीवन-पथ में दीपस्तंभ का काम करते हैं। कथानायक चाहे पौराणिक हो या ऐतिहासिक उनकी जीवन सौरभ समान रूप से जनमानस को अनुप्राणित करती रहती है। सती पद्मिनी और गोरा बादल का चरित सतीत्त्व और स्वामीधर्म का प्रतीक होने से मेवाड़ के कण कण में व्याप्त हो गया और विभिन्न कवियों ने उस पर काव्य बना कर श्रद्धाञ्जली अर्पण की। सं० १६४५ में कवि हेमरत्न ने, सं० १६८० में नाहर जटमल ने, फिर सं० १७०७ में लब्धोदय ने, उसके बाद कवि दलपतविजय ने 'खुमाण रासो' में सती पद्मिनी की गौरव-गाथा गायी है। इनमें हेमरत्न की कृति को छोड़कर अवशिष्ट तीनों कृतियाँ इस ग्रंथ में प्रकाशित की जा रही हैं। इन तीनों से पूर्ववर्ती रचना 'गोरा बादल कवित्त' है, जो प्राचीन व महत्त्वपूर्ण होने से इस ग्रंथ के पृ० १०६ में प्रकाशित किया गया है। सभी कवियों ने अपने काव्यों में इस अज्ञात कर्तृक कृति के कवित्तों को उद्धृत कर प्रामाणिक माना है। किस कवि की कृति में कहाँ कौनसा पद्य अवतरित है यह नीचे की पंक्तियों में बताया जाता है।

गोरा बादल कवित्त का २२वाँ कवित्त हेमरत्न ने पद्याङ्क ५७ और लब्धोदय ने पृ० २८ में उद्धृत किया है।

पद्याङ्क २३ व २६ को हेमरत्न ने पद्याङ्क ६६-६६ में दिया है।

प० ३१ को हेमरत्न ने थोड़े पाठान्तर से प० ८६ में दिया है।

प० ३५ कवित्त हेमरत्न ने प० ९७ में उद्धृत किया है।

प० ४१वें छन्द को लब्धोदय ने पृ० ५८ में एवं खुमाणरासो पृ० १४३ में उद्धृत किया है।

प० ४२ व प० ४३ को हेमरत्न ने प० २५३ व प० २८८ में उद्धृत किया है।

प० ५२ को हेमरत्न ने प० ३९८ में लिया है।

प० ५८ कवित्त को हेमरत्न ने प० ३४२ में व खुमाणरासो पृ० १५५ में लिया गया है।

प० ५९-६० को हेमरत्न ने प० ३४४-४५ में उद्धृत किया है।

प० ७२-७३-७४ को हेमरत्न ने प० ३६६-३६७ व ५९९ में लिया है।

प० ७७-७८ को हेमरत्न ने प० ६१२-१३ में एवं खुमाणरासो पृ० १७६ में लिया है।

प० ८१ को हेमरत्न ने प० ६२० तथा खुमाणरासो प० १८० में उद्धृत किया है।

इस में राणा रतनसिंह को गुहिलोत व गोरा बादल को चौहान वंशीय बतलाया है। गाजन्न के पुत्र बादल की आयु २३ वर्ष की बतलाई है जो समीचीन प्रतीत होती है। इसमें

राघव को परदेशी विप्र बतलाया है जिसके पाण्डित्य से प्रभावित होकर राणा ने अपने पास रखा। एक दिन खेल में राघव के पराजित होने पर राजा ने उससे द्रव्य मांगा तो वह कुपित हो गया। राजा द्वारा निर्वासित हो वह चित्तौड़ से निकला और उसने राणा के पैरों में बेड़ियाँ डलवाने की प्रतिज्ञा की। राघव ने मंत्रसिद्धि द्वारा योगिनी को आराधन किया और वर प्राप्त कर दिल्ली चला गया। उसने सुलतान अलाउद्दीन को निशिचर्या में दरवेश के भेष में आने पर दिल्ली का सुलतान होने का आशीर्वाद दिया और प्रतीति प्राप्त कर शाही दरबार में प्रविष्ट होकर राजमान्य हो गया। छन्द पद्याङ्क ५० में लिखा है कि गोरा ५ वर्ष से राणा के ग्राम-ग्रास को अस्वीकार कर अपने घर बैठा है।

प्राचीनता की दृष्टि से हेमरत्न की कृति का स्थान गोरा बादल कवित्त के बाद आता है। इसके छन्द भी परवर्ती कवियों ने उद्धृत किये हैं। पद्याङ्क १७०-७१-७२-७३ को लब्धोदय ने पृ० ३१-३२ में उद्धृत किये हैं तथा खुमाणरासो में दलपत-विजय ने पद्याङ्क ७०-७१-७२-७३ में उद्धृत किये हैं। पद्याङ्क २८८ को खुमाणरासो (पद्याङ्क २४६३) में उद्धृत किया है। जटमलनाहर ने इसके पद्याङ्क ५६७ छन्द को पद्याङ्क ११० में उद्धृत किया है। लब्धोदय ने अपनी चौपाई के प्रारम्भ में "पूरव कथा संपेख" शब्दों द्वारा जिस पूर्व रचना का उल्लेख किया है वह कृति जटमल की न होकर हेमरत्न की ही होनी

चाहिए क्योंकि वह रचना मेवाड़ में और विशेष कर नररत्न भामाशाह के भाई कावेड़िया ताराचन्द के आग्रह से गुंफित हुई थी। अतः इसका पर्याप्त प्रचार हो गया था।

हेमरत्न के पश्चात् जटमल नाहर की गोरा बादल चौपई निर्मित हुई, यह कृति अपेक्षाकृत छोटी है और इसमें कुल १४३ छन्द हैं। इस सुन्दर हिन्दी रचना का निर्माता कवि जटमल नाहर पंजाब का निवासी था अतः हेमरत्न व लब्धोदय आदि इतर कवियों की भांति राणा वंश से अभिज्ञ न होने के कारण रतनसेन को जायसी की भांति चौहान वंश का लिखा है जब कि वे गुहिलोत वंश के थे। जटमल ने राघव चेतन को सिंहलद्वीप से पद्मिनी के साथ आया हुआ लिखा है जब कि अन्य कवि उसे चित्तौड़ निवासी मानते हैं। जटमल एक कथा और भी लिखता है कि राणा ने मोहवश पद्मिनी का मुंह देखे बिना अन्नजल न ग्रहण करने को नियम ले रखा था। एक दिन वह दो घड़ी रात रहते राघव चेतन को साथ लेकर शिकार को चल पड़ा। उसके अत्यन्त तृपातुर होने पर नियम पालनार्थ राघव ने त्रिपुरा की कृपा से पद्मिनी की तादृशमूर्त्ति बनाई जिसके जंघा पर तिलका चिन्ह कर दिया। राना ने राघव के चरित्र पर संदेह लाकर घर आते ही रुष्ट होकर उसे निर्वासित कर दिया। वह योगी का भेष धारणकर वाद्य-यंत्र बजाते हुए दिल्ली पहुँचा और वनखण्डमें निवास करने लगा। एक दिन सुलतान अलाउद्दीन शिकार खेलने के लिए वन में आया तो

राघव ने संगीतध्वनि से सारे मृगों को अपने पास आकृष्ट कर लिया। शिकार न पाकर सुलतान राघव के स्थान में आया और घोड़े से उतर कर उसके पास गया। वह उसकी संगीत-कला से इतना प्रभावित हुआ कि उसे अपने साथ दिल्ली ले आया। राघव चेतन ने सुलतान से ५०० गांव प्राप्त किये ऐसा पद्मिनी चरित्र चौपई पृ० २७ में उल्लेख है।

जटमल पद्मिनी के सौन्दर्य्य की ओर सुलतान को आकृष्ट करने के लिए जीवित शशक की कोमलता व हेमरत्न पाँख लाने का उल्लेख करता है जबकि जायसी का राघव सीधा ही सुलतान के समक्ष पद्मावती का रूप वर्णन करता है।

जटमल ने लिखा है कि सुलतान १२ वर्ष तक चित्तौड़ पर घेरा डाले बैठा रहा (जो कि कवि की अतिरंजना मात्र लगती है) अन्त में राघवचेतन की सलाह से सुलतान ने छलपूर्वक रतनसेन को गिरफ्तार कर लिया और प्रतिदिन उसे गढ़ के नीचे लाकर सब लोगों को दिखाते हुए राणा के कोड़े मरवाया करता जिसकी वेदना से व्याकुल हो कायरता लाकर राणा के मुंह से कवि पद्मिनी को देने के लिए खास रुक्का प्रेषण करने की स्वीकृति कराता है (कवित्त ८०) जोकि राणा और उसके राजवंश की शान के विपरीत कायरतापूर्ण कदम है। आगे चलकर जब बादल कपट प्रपंच रचना द्वारा पद्मिनी को देने के प्रलोभन से सुलतान को वशवर्त्ती कर राणा को छुड़ाने आता है तो कवि फिर राणा द्वारा बादल को इस जघन्य कार्य

(रानी को देकर राणा को छुड़ाने) के लिए धिक्कार दिलाता है। ये दोनों बातें एक दूसरे से विपरीत हैं अतः कवि ने यहाँ विरोधाभास किया है।

जटमल तथा अन्य सभी कवियों ने पद्मिनी को सिंहलद्वीप की पुत्री बतलाया है जो निरी कवि-कल्पना मात्र है। ओझा जी के अनुसार चित्तौड़ से ४० मील पूर्व स्थित सिंघोली गांवही सिंघल होना सम्भव है। सिंहलद्वीप के जल-वायु ने पद्मिनी जैसी श्रेष्ठ लावण्यवती स्त्री पैदा की हो एवं इतने दूर से राजस्थान आई हो यह संभव नहीं। राजस्थान में जैसे पूगल की पद्मिनी प्रसिद्ध रही है उसी प्रकार सम्भव है मेवाड़ में भी सिंघोली जैसा कोई स्थान रहा हो। खुमाणरासो हमे सूचना देता है कि महाराणा राजसिंह औरंगमीर की मांग मान कमंध की पुत्री को ब्याह कर लाया था, उस सुन्दरी को भी कवि ने पद्मिनी लिखा है, जिसने राणा को पत्र लिख कर मुसलमान के घर जाने से बचाकर अपनी रक्षा करने की प्रर्थना की थी। राणा उसे ब्याह कर ले आया इसके बाद राणा शिकार के लिए गया, उसने गंगा त्रिवेणी गोमती और नागद्रह को देखकर बाँध कराने के विचार से गजधर को बुलाकर शिरोपाव दिया। खुमाणरासो में यहाँ तक का वर्णन प्राप्त है। अतः राजसिंह की पद्मिनी की भाँति रतनसेन की परिणीता पद्मिनी सती भी मेवाड़-राजस्थान में ही जन्मी हुई वीरांगना होनी चाहिए।

इस ग्रंथ में कवि लब्धोदय कृत पद्मिनी चरित्र चौपई ही सर्व प्रथम और प्रधान रचना है अतः यहाँ कवि लब्धोदय का यथाज्ञात जीवन परिचय दिया जाता है।

महोपाध्याय लब्धोदय और उनकी रचनाएँ

राजस्थानी साहित्य की श्री वृद्धि करने में जैन कवियों का योगदान बहुत ही उल्लेखनीय है। अपभ्रंश से राजस्थानी भाषा का विकास हुआ तब से लेकर अबतक सैकड़ों कवियों ने हजारों रचनाएं राजस्थानी गद्य व पद्य में निर्मित की। नीति, धर्म सदाचार के साथ-साथ जीवनोपयोगी प्रत्येक विषय की राजस्थानी जैन रचनाएं मिलती हैं। राजस्थानी साहित्य की विविधता और विशालता जैन विद्वानों की अनुपम देन है। पन्द्रहवीं शती तक राजस्थान और गूजरात, सौराष्ट्र, कच्छ और मालवा जितने व्यापक प्रदेश की एक ही भाषा थी। तेरहवीं शती से पन्द्रहवीं शती तक की जैनेतर रचनाएं बहुत ही अल्प मिलती हैं पर जैन कवियों की प्रत्येक शताब्दी के प्रत्येक चरण में विविध काव्य रूपों एवं शैलियों की सैकड़ों रचनाएं उपलब्ध होती है। पन्द्रहवीं शती तक की जैन रचनाएं अधिकांश छोटी-छोटी है, पन्द्रहवीं के उत्तरार्द्ध से कुछ बड़े रास रचे जाने लगे और सतरहवीं शताब्दी से तो काफी बड़े-बड़े रास अधिक संख्या में रचे गये। रास, चौपाई, फागु, विवाहला आदि अनेक-काव्य पहले विविध प्रसंगों में व मन्दिरों आदि में खेले भी जाते थे अतः उनका छोटा होना स्वाभाविक व जरूरी भी था और जब रास

बड़े-बड़े रचे जाने लगे तो वे केवल गेय-काव्य रह गये, खेलने के नहीं। साधारण जनता, अपनी परिचित स्वरलहरी और बोल-चाल की भाषा में जो रचनाएं की जाती हैं उनको सरलता से अपना लेती है। प्राकृत संस्कृत भाषा में प्राचीन विस्तृत साहित्य होने पर भी उससे लाभान्वित होना जन साधारण के लिए सम्भव नहीं था, इसलिए बहुत कुछ उनके आधार से और कुछ लोककथाओं को धार्मिक बाना पहना कर जैन कवियों ने सरल राजस्थानी भाषा में प्रचुर चरित काव्य बनाए। प्रातः, मध्यान्ह और रात्रि में उन्हीं रास, चौपाइयों को गाकर व्याख्या की जाती थी। लोकगीतों की प्रचलित देशियों में उनकी ढालें बनाई जाने से जनता उन्हें भाव-विभोर होकर सुनती और उन चरित्र-काव्यों से मिलने वाली शिक्षाओं को अपने जीवन का ताना बाना बना लेती। फलतः उस समय का लोक-जीवन इन रचनाओं से बहुत ही प्रभावित था। नीति, धर्म और सदाचार की प्रेरणा देने में इन रचनाओं ने बहुत बड़ा चमत्कार दिखाया।

अठारहवीं शताब्दी में अनेक राजस्थानी जैन कवि हुए हैं जिन में महोपाध्याय लब्धोदय की साहित्यसेवा चालीस पचास वर्षों तक निरन्तर चलती रही। उन्होंने छः उल्लेखनीय बड़े रास बनाए। लघु-कृतियां भी अनेक बनाई होगी किन्तु वे या तो नष्ट हो गई या किसी भंडारों में छिपी पड़ी होंगी। लब्धोदयजी का विहार मेवाड़ प्रदेश में अधिक हुआ

और वहां के भंडारों की जानकारी भी कम प्रकाश में आई है। उनके उल्लिखित, रासों में पद्मिनी चौपाई ही अधिक प्रसिद्धि प्राप्त है, अन्य ३ रासों की एक-एक दो-दो प्रतियां मिली हैं। तीन रासों के तो नाम व प्रतियां भी कहीं नहीं मिली, पर कवि की अन्य रचनाओं में उनकी सूचना प्राप्त होती है।

आज से ३२-३३ वर्ष पूर्व जब हमने हस्तलिखित-ज्ञान भण्डारों का अवलोकन प्रारम्भ किया और अपने संग्रहालय के लिए प्रतियों का संग्रह प्रारम्भ किया तो कवि लब्धोदय की पद्मिनी चरित्र चौ० की प्रतियां ज्ञानभंडारों में देखने को मिली तथा हमारे संग्रह में भी १ प्रति संगृहीत हुई। सं० १६६१ में 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' भाग १५ अङ्क २ में श्री मायाशंकर याज्ञिक ने अपने 'गोरा बादल की बात' नामक लेख में पद्मिनी चरित्र का सर्व प्रथम परिचय हिन्दी जगत को दिया। उनके संग्रह में इसकी एक प्राचीन हस्तलिखित प्रति थी। उन्होंने पद्मावत और 'गोरा बादल की बात' के कथानक से इस पद्मिनी चरित्र में जो अन्तर है उसका संक्षिप्त परिचय उस लेख में दिया था। इस ग्रन्थ के रचयिता का नाम उन्होंने भ्रमवश लक्ष्योदय लिख दिया था और वह भूल काफी वर्षों तक दुहराई जाती रही। अतः हमने 'सम्मेलन पत्रिका' वर्ष २६ अंक १-२ में 'जैन कवि लब्धोदय और उनके ग्रन्थ' नामक लेख प्रकाशित करके इस भूल को संशोधन करते हुए कवि की रचनाओं का परिचय भी प्रकाशित किया। सं० १६६२ में 'युगप्रधान श्रीजिन-

चन्द्रसूरि' के पृष्ठ १६३ में श्रीजिनमाणिक्यसूरिजी की शिष्य-परम्परा का परिचय देते हुए इनकी दो रचनाओं का उल्लेख किया था। कवि ने दूसरी रचना गुणावली चौ० में इससे पूर्ववर्ती ६ रचनाओं का उल्लेख किया है, इसका भी उल्लेख किया गया था पर उस समय तक हमें केवल दो ही रचनाएँ मिली थी। इसके बाद खोज निरंतर जारी थी और उसके फलस्वरूप दो रचनाओं की और प्रतियाँ मिलीं एवं दो स्तवन भी देखने में आए।

आपकी गुरु-परम्परा युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजी के गुरु श्रीजिनमाणिक्यसूरिजी से प्रारंभ होती है। इस परम्परा में कई और भी अच्छे अच्छे विद्वान हो गए हैं जिनमें गुणरत्न व महिमोदय आदि उल्लेखनीय हैं। आपने अपने ग्रंथों में अपनी गुरु-परम्परा का परिचय इस प्रकार दिया है :—

श्री जिनमाणिकसूरि प्रथम शिष्य, श्री विनयसमुद्र मुनीशजी।
श्री हर्षविशाल विशाल जगत में, सुवदीता जसु सीसजी ॥व०
महोवझाय श्री ज्ञानसमुद्र गुरु, वाणी सरस विलासजी।
तासु शिष्य उवझाय शिरोमणि, श्री ज्ञानराज गुणराशिजी ॥व०
विद्यावंत अने बड़ भागी, सोभागी सिरदारजी।
तासु शिष्य लब्धोदय पाठक, सम्बन्ध रच्यो सुखकार जी ॥व०

[रत्नचूड़ मणिचूड़ चौ० प्रशस्ति]

यही परम्परा कवि ने पद्मिनी चरित्र चौ० की प्रशस्ति में दी है जो इसी ग्रंथ के पृ० १०६ में देखना चाहिए।

जन्म समय और दीक्षा

कवि की सर्वप्रथम रचना पद्मिनी चरित्र चौपई सं० १७०६ में प्रारम्भ होकर सं० १७०७ चैत्री पूनम के दिन सम्पूर्ण हुई है। इस समय ये गणि पद से विभूषित थे, अतः उनकी आयु २७ वर्ष के लगभग होना संभव है इससे इनका जन्म सं० १६८० के लगभग माना जा सकता है। आपका जन्म नाम लालचन्द था उस समय दीक्षा प्रायः लघुवय में ही हुआ करती थी अतः दीक्षा का समय सं० १६६५ के आसपास होना चाहिए। और आपका दीक्षा नाम लब्धोदय रखा गया था।

अध्ययन और विहार

आपकी गुरु-परम्परा एक विद्वद्-परम्परा थी। विनयसमुद्र वाचक पद से विभूषित थे। उनके शिष्य वाचक गुणरत्न तो जैन साहित्य के अतिरिक्त साहित्य और तर्कशास्त्र के भी अद्भुत विद्वान थे। इनके रचित १ काव्यप्रकाश टीका (श्लोक १०५००), २ सारस्वत टीका (क्रियाचन्द्रिका ४००० श्लोक) ३ रघुवंश सुबोधिनी टीका (६००० श्लोक), ४ तर्कभाषा (गोवर्द्धनी प्रकाशिका-तर्क तरंगिणी श्लो० ७४५०) ५ शशधर के न्याय सिद्धान्त पर टिप्पण ६ मेघदूत पंजिका ७ नमस्कार प्रद्युम्न-पद अर्थ के अतिरिक्त १ संयतिसंधि २ श्रीपाल चौपई, दो राजस्थानी काव्य उपलब्ध हैं। इनमें से 'तर्कतरंगिणी' की एकमात्र प्रति ब्रिटिश म्युजियम, लंदन में है और 'न्यायसिद्धान्त' की सम्पूर्ण प्रति अनूपसंस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर में है। 'मेघदूत पंजिका' की भी

एक मात्र प्रति श्रीमोहनलालजी ज्ञानभंडार, सूरत में मिली है। हर्षविशाल के शिष्य ज्ञानसमुद्र महोपाध्याय तथा उनके शिष्य ज्ञानराज भी महोपाध्याय पदविभूषित थे। पद्मिनी चरित्र चौ० की प्रशस्ति में उन्हें साधु शिरोमणि 'सकल विद्या गुण शोभता' लिखा है। अतः ऐसे गुरुओं की सेवा में रहते हुए आपने अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया, यह आपने स्वयं अपनी मलयसुन्दरी चौ० में लिखा है :—

"प्रौढोपाध्याय पदधारी, श्री लब्धोदय गुण खाणिजी।
व्याकरण तर्क साहित्य छन्दकोविद, अलंकार रस जाणिजी॥६॥"

आपकी सर्व प्रथम रचना स० १७०६ उदयपुर की है उसमें आपने खरतर गच्छाचार्य श्रीजिनरंगसूरिजी की आज्ञा से उदयपुर में आने का उल्लेख किया है। उसके बाद की प्राप्त सभी रचनाएँ उदयपुर, गोगूंदा, धुलेवा में रचित हैं। अतः आपका विहार मेवाड़ प्रदेशमें ही अधिक हुआ प्रतीत होता है।

वाचक व उपाध्याय पद

आपने अपनी प्रथम रचना में अपने को गणि पद विभूषित लिखा है उसके बाद दीर्घकाल तक कोई रचना नहीं मिलती। अतः आपको वाचक पद कब मिला, नहीं कहा जा सकता पर सं० १७३६ की रत्नचूड़ मणिचूड़ चौ० में आपने अपने को पाठक (उपाध्याय) पद से सम्बोधित किया है। अतः इतःपूर्व आचार्य श्री द्वारा आपको उपाध्याय पद मिल चुका था। खरतर गच्छमें यह मर्यादा है कि उपाध्यायों में जो सब से बड़ा हो वह महो-

पाध्याय कहलाता है। आपके गुरु और प्रगुरु दोनों महोपाध्याय थे अतः उनकी काफी लंबी आयु थी। आपकी मलयसुन्दरी चौ०में प्रौढोपाध्याय पद का उल्लेख ऊपर आ चुका है।

रचनाएँ

राजस्थान में पद्मिनी और गोराबादल कथा की काफी प्रसिद्ध रही है और इस सम्बन्ध में कई रचनाएँ प्राप्त होती हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रकाशित 'गोराबादल कवित्त' संभवतः सब से प्राचीन रचना है। इसी के आसपास मलिक मुहम्मद जायसी ने 'पद्मावत' नाम का महत्वपूर्ण काव्य बनाया। अल्लाउद्दीन और पद्मिनी संबधी घटना का सर्व प्रथम उल्लेख जायसी से पूर्ववर्त्ती कवि नाराइणदास के छिताई चरित्र में मिलता है जो सं० १५८३ में रचा गया है। जायसी के बाद सं० १६४५ में जैन कवि हेमरत्न ने गोराबादल चौ० की रचना भामाशाह के भाई ताराचन्द के लिए सादड़ी में की। तदनन्तर सं० १६८० में जटमलनाहर ने गोराबादल कथा* हिन्दी भाषा में बनाई तदनन्तर कवि लब्धोदय ने 'पद्मिनी चरित्र चौपाई' की रचना की।

शील धर्म पर पद्मिनी चरित्र मेवाड़ के राणा जगतसिंह की माता जंबूवती के मन्त्री खरतर गच्छीय कटारिया केसरी

---

* इसके आधार से सं० २०१३ तेरापंथी संत शतावधानी श्रीधनराजजी स्वामी ने हिन्दी पद्य में 'पद्मिनी चरित्र' नामक गेय काव्य बनाया है।

के पुत्र हंसराज और भागचन्द के आग्रह से मुनि श्री लब्धोदय गणि ने पूर्व रचित कथा को देखकर पद्मिनी चरित्र चौ० की रचना सं० १७०६ में प्रारम्भ कर ४६ ढाल व ८१६ गाथाओं में सं० १७०७ चैत्रीपूनम के दिन पूर्ण की। इससे पूर्ववर्त्ती रचना हेमरत्न की है उसमें 'गोराबादल कवित्त' का उपयोग हुआ है और लब्धोदय ने तो इन दोनों ही रचनाओं का उपयोग किया है। हेमरत्न की रचना में गा० ६३२ हैं और लब्धोदय की गाथा ८१६ है। अतः कवि ने कथा प्रसङ्ग विस्तृत किया है।

इसके पश्चात् कवि ने तीन चौपाइयां और भी रची थी पर वे अबतक अनुपलब्ध है। उपलब्ध रचनाओं में रत्नचूड़ मणिचूड़ चौपाई सं० १७३६ की है जो ५वीं रचना होनी चाहिए क्योंकि इसके बाद की मलयसुन्दरी चौ० में उससे पूर्व ५ चौपाई रचने का उल्लेख स्वयं कवि ने किया है।

रत्नचूड़ मणिचूड़ की प्राचीन कथा को दान-धर्म के माहात्म्य में कवि ने राजस्थानी पद्य (३८ ढालों) में संकलित किया है। सं० १७३६ बसन्तपचमी को उदयपुर में इसकी रचना हुई। पद्मिनी चरित्र चौ० जिस मन्त्री भागचन्द के आग्रह से बनाई गई थी उसी के आदर से यह चौपाई रची गई है। इसकी प्रशस्ति में मन्त्री भागचन्द के पुत्र व पौत्रों का अच्छा परिचय दिया गया है। मन्त्री भागचन्द के सम्बन्ध में ५ पद्य हैं, उससे उसका महत्व भली-भाँति स्पष्ट है। उसके पुत्र दशरथ, समरथ

और अमृत थे इनमें से समरथ के ३ पुत्र महासिंह, मनोहर दास व हरिसिंह थे। दशरथ के पुत्र आसकरण और सुजाण सिंह थे। अमृत के पुत्र गोकुलदास व इन्द्रभाण थे। इस प्रकार मन्त्री मुकुट भागचन्द का परिवार काफी बड़ा था। ७ पाट के बाद मेवाड़ में खरतर गच्छ की पुनः प्रतिष्ठा करने का श्रेय कवि ने उसे दिया है। इस रचना के समय मन्त्री भागचन्द काफी वृद्ध हो चुके थे, फिर भी उनकी धर्म भावना और शास्त्र श्रवण प्रेम ज्यों का त्यों बना हुआ था। इस चौपाई की एक मात्र प्रति 'हितसत्क ज्ञानमन्दिर' घाणेराव से अभी अभी हमें प्राप्त हुई है। काव्य बड़ा सुन्दर और रोचक है।

कवि की छट्टी चौपाई सबसे बड़ी कृति है—मलयसुन्दरी चौपाई। यह भी शील-धर्म के माहात्म्य पर १४२ पत्रों में रची गई है। प्रस्तुत मलयसुन्दरी चौ० सं० १७४३ श्रावण वदी १३ के दिन प्रारम्भ कर गोघूंदा (मेवाड़) में धनतेरस के दिन पूर्ण की। केवल ३ मास में इतने इतने बड़े काव्य का निर्माण वास्तव में कवि की असाधारण प्रतिभा का द्योतक है। इसकी रचना कवि के उल्लेखानुसार उनके गुरु महो० ज्ञानराज द्वारा स्वप्न* में दी हुई प्रेरणा के अनुसार की थी। मलयसुन्दरी कथा जैन साहित्य में काफी प्रसिद्ध है।

---

* "महोपाध्याय ज्ञानराज गुरु, कह्यो सुपन में आय।
पांच चौपाई थे करी, ए छट्ठी करो बणाय॥"

कवि की सातवीं रचना गुणावली चौपाई ज्ञानपंचमी के माहात्म्य पर निर्मित हुई है। सं० १७४५ के मिती फाल्गुण सुदि १० को उदयपुर में कटारिया मन्त्री भागचन्द जी की पत्नी भावलदे के लिए यह रची गई थी। फा० ब० १३ को प्रारम्भ कर फा० सु० १० को अर्थात् केवल १२ दिनमें आपने यह काव्य रच डाला था।

उपर्युक्त बड़ी रचनाओं के अतिरिक्त कवि ने बहुतसी छोटी रचनाएँ अवश्य बनाई होंगी, पर हमें उनमें से केवल २ ही रचनाओं की जानकारी मिली है। प्रथम धुलेवा ऋषभ-देव स्तवन १३ पद्यों का है और उसकी रचना सं० १७१० ज्येष्ठ बदि २ बुधवार को हुई है। दूसरा ऋषभदेव स्तवन १५ गाथा का है जो सं० १७३१ मि० ब० ८ बुधवार को रचा हुआ है।

स्वर्गवास

सं० १७४५ के पश्चात् आपकी कोई रचना नहीं मिलती और उस समय आपकी आयु लगभग ६५-७० वर्ष की हो चुकी थी। अतः सं० १७५० के आस-पास आपका स्वर्गवास मेवाड़-उदयपुर के आसपास हुआ होगा।

शिष्य परम्परा

कवि लब्धोदय बड़े प्रभावशाली व्यक्ति थे। उनके धार्मिक उपदेशों से प्रभावित होकर अनेक भावुक आत्माओं ने उनका शिष्यत्व स्वीकार किया था। कवि ने अपने 'रत्नचूड़ मणिचूड़ चौपाई' और 'मलयसुन्दरी चौ०' की प्रशस्ति में अपने शिष्यों की नामावली इस प्रकार दी है :—

"शिष्य रत्नसुन्दर गणि वाचक, कुशलसिंह मन हरषइ जी।
सांवलदास शिष्य सोभागी, पासदत्त परसिद्ध जी।
खेतसी परमानन्द रूपचन्द, वांची ने जस लिद्ध जी।"
[रत्नचूड़ मणिचूड़ चौ०]

जसहर्ष शिष्य वाचक सोभागी, रत्नसुन्दर सिरदार जी।
शिष्य कल्याणसागर ज्ञानसागर, पदमसागर पंडित श्रीकारजी ॥
[मलयसुन्दरी चौ०]

कवि के शिष्य ज्ञानसागर के शिष्य भुवनधीर अच्छे विद्वान थे, इनके रचित भुवनदीपक बालावबोध सं० १८०६ में रचित उपलब्ध है।

उपर्युक्त शिष्योंमें से कुछ की शिष्य-परम्परा अवश्य ही लम्बे समय तक चली होगी व उनमें कई कवि व विद्वान भी हुए होंगे पर हमें उनकी जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी।

संवत् १७०६ से सं० १७४५ तक की रची हुई उपर्युक्त रचनाओं से स्पष्ट है कि महोपाध्याय लब्धोदय ने ४० वर्ष तक राजस्थानी भाषा और साहित्य की विशिष्ट सेवा की थी। उनकी पद्मिनी चरित्र चौ० को यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है। अवशिष्ट रचनाओं के प्रकाशन से कवि की काव्य-प्रतिभा का सही मूल्याकन हो सकेगा, क्योंकि यह तो कवि की प्राथमिक रचना है, उसके बाद अन्य रचनाओं में प्रौढ़त्व अवश्य ही मिलेगा।

प्रतिष्ठा लेख आदि

आपके जीवनचरित्र की उपर्युक्त सामग्री में हम देख चुके हैं कि आपका विहार विशेषकर मेवाड़ में हुआ था। आपने वहाँ जिनमंदिर, प्रभु-प्रतिमाएँ व गुरु-पादुओं की प्रतिष्ठा भी

करवायी थी। मंत्रीश्वर कर्मचन्द्र के वंशजों द्वारा निर्मापित उदयपुर की बीराणी की सेरी में स्थित ऋषभदेव जिनालय के मूल-नायक भगवान के लेख से विदित होता है कि आपके कर-कमलों से उपर्युक्त प्रतिष्ठा हुई थी। वहाँ के यतिवर्य ऋषि श्री अनूपचन्द्रजी द्वारा प्राप्त लेख यहाँ दिये जा रहे हैं :—

"संवत् १७३३ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्री बृहत् खरतर गच्छे प्रतिष्ठितं युगप्रधान श्री जिनरंगसूरि भट्टारकस्यादेशात् महोपाध्याय श्री ज्ञानराज गुरुणां शिष्य महोपाध्याय श्री लब्धोदय गणिभिः श्री ऋषभदेव बिम्बं कारितं च वच्छावत मं० लखमी चन्देन पुत्र मं० रामचन्द्रजी भ्रातृ सा० रघुनाथ जी भ्रातृजयं सबलसिंह पृथ्वीराज बाई हरीकुमरीकया श्रेयोर्थं।

संवत् १७४३...श्री जिनरंगसूरि विजये युगप्रधान श्री जिनकुशलसूरिणां पादुके कारिते प्रतिष्ठिते च महोपाध्याय श्रीलब्धोदय।

संवत् १७२१ (?) वर्षे चैत्र द्वादशी.........श्री लब्धोदय गणि।

श्री जिनकुशलसूरि च० प्रतिष्ठितं महोपाध्याय श्री ज्ञानसमुद्राणां शिष्य महोपाध्याय ज्ञानराज महोपाध्याय श्रीलब्धोदयवाचक रत्नसुन्दरयुक्त।

इसके अतिरिक्त सं० १७४८ की भी एक जोड़ी चरणपादुका प्रतिष्ठित विद्यमान है। टाइल्स लगा देने से लेख अब दब गए हैं, एक लेख का निम्नलिखित अंश पढ़ने में आता है :—

"शिष्य महोपाध्याय श्री ज्ञानसमुद्राणां महो० श्री ज्ञानराजानां शिष्य लालचन्द्रोपाध्यायैः।

गोरा बादल कथा के रचयिता नाहर जटमल

कवि जटमल नाहर की गोरा बादल कथा गद्य में होने की भ्रान्ति हिन्दी के विद्वानों में चिरकाल तक रही है। एसियाटिक सोसायटी-कलकत्ता की जिस प्रति के आधार से यह भ्रान्ति फैली थी, उस प्रतिका निरीक्षण कर भ्रान्ति का निराकरण स्वर्गीय पूरणचन्दजी नाहर व स्वामी नरोतमदास जी के प्रयत्न से 'विशाल भारत' पोष १९९० व नागरी प्रचारणी पत्रिका वर्ष १४ अंक ४ में प्रकाशित लेखों द्वारा हुआ। यह निश्चित हो गया कि वास्तव में जटमल ने गोरा बादल कथा पद्य में ही लिखी थी पर उन्नीसवीं शती में गद्य में लिखे गए अर्थ के कारण जटमल के गद्यकार होने की भ्रान्त परम्परा चल पड़ी। उसके बाद डा० टीकमसिंह तोमरने 'गोरा बादल कथा' की एक प्रति का पाठ गलत पढ़ कर जटमल की जाति जाट होने का उल्लेख शोध प्रबन्ध में किया जिसका निराकरण भी नागरी-प्रचारणी पत्रिका द्वारा किया गया।

हिन्दी के विद्वानों को जटमल की केवल 'गोरा बादल कथा' नामक एकही रचना की जानकारी थी। हमने जब बीकानेर के ज्ञानभंडारों का निरीक्षण किया व अपने ग्रन्थालय के लिये हस्तलिखित प्रतियों का संग्रह प्रारम्भ किया तो जटमल की अन्य कई रचनाओं की प्राप्ति हुई। फलतः हमने हिन्दुस्तानी वर्ष ८ अं० २ में 'कवि जटमल नाहर और उनके

ग्रंथ' नामक लेख द्वारा जटमल की समस्त रचनाओं पर सर्व प्रथम प्रकाश डाला।

कवि जटमल नाहर ने अपना परिचय अपनी रचनाओं में इस प्रकार दिया है :—

(१) धरमसी कौ नन्द नाहर जाति जटमल नाउ।
तिण करी कथा बणाय के, बिचि सिंबला के गांउ ॥
इति जटमल श्रावक कृता गोरा बादल की कथा संपूर्णा

(२) वसै अडोल 'जलालपुर', राजा थिरु 'सहिबाज';
रइयत सयल वस सुखी, जब लगि थिर ध्रू राज; ८३
तहाँ वसें 'जटमल लाहोरी', करने कथा सुमति मति दोगी,
'नाहर' वंम न कछु सो जानै, जो सरसती कहै सो आनै; ८४

इति प्रेमविलास प्रेमलताह्व सबरसलता नाम कथा नाहर गोत्र श्रावक जटमल कृता (सं० १७५३ लिखित प्रति)

इस से सिद्ध होता है कि कवि जटमल लाहोर निवासी जैन श्रावक थे और नाहर गोत्रीय थे। आपके रचित (१) गोरा बादल कथा की रचना सं० १६८० में सिंबला ग्राम में हुई है जिसे स्वामी नरोत्तमदासजी व सूर्यकरणजी पारीक द्वारा सम्पादित कापी से यहां साभार प्रकाशित किया जा रहा है। दूसरी कथा प्रेमविलास प्रेमलता की रचना स० १६९३ भाद्रपद शुक्ला ४ रविवार को जलालपुर में हुई है। (३) बावनी—पंजाबी भाषा के ५४ पद्यों में है, इसे 'पंजाबी दुनिया' में गुरुमुखी में छपवा दिया है। (४) लाहोर गजल—इसमें लाहोर नगर का

महत्त्वपूर्ण वर्णन पद्य ६० में है। नगर वर्णनात्मक हिन्दी पद्य संग्रह में मुनि श्रीकान्तिसागरजी द्वारा यह प्रकाशित है। (५) स्त्री (सुन्दरी) गजल, (६) झिंगोर गजल, (७) फुटकर कवितादि, हमारे संग्रह में है। उदयपुर में एक और रचना भी देखने में आई थी।

गोरा बादल कथा की प्रशस्ति में मोछ ग्राम का उल्लेख है। कविवर समयसुन्दर कृत मृगावती रास के एक गुटके की लेखन प्रशस्ति में मोछ ग्राम एवं जट्टू नाहर का उल्लेख मिलता है। अतः वह गुटका जटमल नाहर के लिखित प्रतीत होता है। प्रशस्ति इस प्रकार है :—

संवत् १६७५ वर्षे माघ सुदि ११ तिथौ शनिवारे। पतिस्याह नूरदी आदिल जहांगीर राज्ये लिखतं जट्टू नाहर नागउरी मोछ ग्रामे मा० कवरपाल सुतसा बाला देवी पासा तोड़ा रंगा गंगा पुस्तिका बापणा गोत्रे। लिखतं जट्टू पठनार्थं।

खुमाणरासो रचयिता दौलतविजय

खुमाणरासो के सम्बन्ध में हिन्दी साहित्य के विद्वानों में बड़ी भ्रान्ति रही है। खुमाण का नाम देखकर उसका काल ९वीं शताब्दी ही रासो का रचनाकाल मान लिया गया। इस में महाराणा प्रताप का भी वृतान्त है अतः यह धारणा बना ली गई कि इस में पीछे से परिवर्द्धन होता रहा है अतः

वर्त्तमान रूप १६वीं शताब्दी में प्राप्त हुआ मान लिया गया। माननीय शुक्लजी जैसे विद्वान ने भी अपने इतिहास में यही लिख दिया कि—'यह नहीं कहा जा सकता कि दलपतविजय असली खुमान रासो का रचयिता था अथवा उसके पिछले परिशिष्ट का।' वास्तव में हिन्दी के विद्वानों ने इसकी प्रति को देखा नहीं, अतः अन्य लोगों के उल्लेखों के आधार से विविध अनुमान लगाते रहे। लगभग २५ वर्ष पूर्व श्री अगरचन्द्र जी नाहटा ने वीर-गाथा-काल की बतलाई जानेवाली रचनाओं को परीक्षा की कसौटी पर रखा और जैनगूर्जर कविओ भाग १ से खुमाणरासो की १३६ पत्रों की अपूर्ण प्रति का पता लगा कर पूना के भंडारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट से प्रति को प्राप्त कर इसके तथ्यों पर सर्वप्रथम निश्चयात्मक प्रकाश डाला। 'नागरी प्रचारणी पत्रिका' वर्ष ४४ अङ्क ४ में प्रकाशित उनके लेख से वह निश्चित हो गया कि यह ग्रंथ १८वीं शताब्दी में ही रचित है कवि का नाम दलपतविजय नहीं पर उसका प्रसिद्ध नाम दलपत और जैन दीक्षा का नाम दौलतविजय था।

खुमाण रासो की अद्यावधि एक ही प्रति मिली हैं जो अपूर्ण है और उसमें महाराणा राजसिंह तक का विवरण है। टॉड के संग्रह तथा नागरी प्रचारिणी सभा में भी इसी प्रतिकी प्रतिलिपि है। कविने प्रस्तुत ग्रन्थ में अपनी गुरु-परम्परा का परिचय इस प्रकार दिया है :—

त्रिपुरा शक्ति तणे सुपसाय, रच्यो खण्ड दूजो कविराय।
तपगच्छ गिरुआ गणधार, सुमतिसाधु वंशे सुखकार॥
पंडित पद्मविजय गुरुराय, पटोदयगिरि रवि कहेवाय।
जयबुध शांतिविजय नो शिष्य, जंपे दौलत मनह जगीश॥"

अर्थात्—कवि त्रिपुरादेवी का भक्त था और तपागच्छ के सुमतिसाधुसूरि की परम्परा में पद्मविजय शिष्य जयविजय शि० शान्तिविजय का शिष्य था।

खुमाण रासो (अपूर्ण) में खुमाण से लेकर राजसिंह तक का ही विवरण मिलता है, पर इसके प्रथम खण्ड के अन्तिम दोहे में महाराणा संग्रामसिंह (द्वितीय) तक का उल्लेख होने से इसकी रचना सं० १७६७ से सं० १७९० के बीच में हुई निश्चित है।

बिउ सांगउ अमरेस सुत, सीसोद्यो सुवियाण।
राण पाट प्रतपे रिधू, मन हेला महिराण॥

खुमाण रासो के छठ्ठे खण्ड में रत्नसेन-पद्मिनी और गोरा बादल का वृतान्त आया है अतः उसे इस ग्रंथ के [पृ० १२६ से १८१] में प्रकाशित किया गया है। यह अंश स्वामी नरोत्तमदासजी द्वारा प्राप्त श्री श्रोत्रिय के की हुई प्रेस कापी से लेकर दिया गया है अतः इसके लिए आदरणीय स्वामीजी और श्रोत्रियजी धन्यवादार्ह हैं।

इस ग्रंथ के पृ० १०६ में गोरा बादल कवित्त प्रकाशित किया गया है, जिसकी प्रति हमारे संग्रह में है। लब्धोदय कृत चौपई की प्रति हमारे संग्रह की है, जिसके पाठान्तर गुलाबकुमारी लाइब्रेरी, कलकत्ता स्थित बड़ौदा के गायकवाड़ ओरयण्टल-इन्स्टीट्यूट की नकल से दिये गये हैं। हमारे आदरणीय मित्र डा० दशरथ शर्मा ने अनेक कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी भूमिका रूप में "रानी पद्मिनी—एक विवेचन" शीघ्र लिख भेजा था, पर ग्रथ का कलेवर बढ़ जाने से उसमें और अभिवृद्धि करने के लिए उन्हें दिया गया था, जिसे उन्होंने यथासमय ठीक कर भेजा पर वह डाक की गड़बड़ी में गुम हो गया। तब उसे पुनः नये रूप में लिख कर भेजने का कष्ट किया है। पूज्य काकाजी श्री अगरचन्द्रजी नाहटा तो इसके श्रेय के वास्तविक अधिकारी हैं ही, अतः इन सभी आदरणीय विद्वानों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करने के हेतु उपयुक्त शब्द मेरे पास नहीं है, वह तो हृदय की भाषा जाननेवाले सुधीजन स्वतः अवगाहन कर लेंगे। सुज्ञेषु किं बहुना,

कलकत्ता
पौष कृष्णा १०
पार्श्वनाथ जन्म दिवस

भँवरलाल नाहटा

पद्मिनी चौपाई का कथासार

भगवान ऋषभदेव, महावीर, शारदा और ज्ञानराज गुरू को नमस्कार कर कवि लब्धोदय सती पद्मिनी का चरित्र निर्माण करते हैं। इसमें वीर शृंगार प्रधान नवरसों का सरस वर्णन है। वीर गोरा, बादल की स्वामीभक्ति और शौर्य, सती के शीलव्रत के साथ क्षीर घृत और खांड के संयोग की भांति सुस्वादु हो जाता है। पहली ढाल में कवि ने चितौड़ का वर्णन किया है। वे कहते हैं—मेवाड़ का चितौड़ दुर्ग सब गढ़ों में प्रधान हैं यह गगनस्पर्शी कैलाश से टक्कर लेता है। यहां बहुत से तापस तीर्थ, चित्रा नदी, गोमुख कुण्डादि हैं, कूप, सरोवर, जिनालय, शिवालय, ऊंचे ऊंचे महल हैं, यह बाग बगीचों और करोड़पतियों की लीलाभूमि है। चितौड़ में महाराणा रतनसेन नामक प्रतापी राजा राज्य करता था. जिसकी सेवा में दो लाख सुभट एवं कई राजा थे। पटरानी प्रभावती अत्यन्त सुन्दर और सब रानियों में सिरमौर थी, वह राजा की प्रियपात्र और प्रतापी कुमार वीरभाण की माता थी। रानी प्रतिदिन राजा को अपने हाथ से परोस कर प्रेमपूर्वक भोजन कराती थी। एकदिन रत्नजटित थाल में नाना व्यंजन युक्त स्वादिष्ट भोजन आरोगते हुए हास्य-विनोद में राणा ने कहा—

आजकल भोजन बिलकुल निरस और स्वादरहित होता है! तुम्हारी चतुराई कहां चली गई? रानी ने तमक कर कहा—मैं तो कुछ भी नहीं जानती, मेरे में चतुराई है ही कहां? स्वादिष्ट भोजन के लिए नवीन पद्मिनी व्याह कर ले आइये। रानी प्रभावती के वाक्य राणा के हृदय में तीर की तरह चुभ गए, वह भोजन त्याग कर उठ खड़ा हुआ और रानी का मान मर्दन करने के निमित्त पद्मिनी से पाणिग्रहण करने के हेतु दृढ़-प्रतिज्ञ हो गया।

राणा ने दो घोड़ों पर बहुत सा धनमाल लेकर खवास के साथ गुप्तरूप से चितौड़ से प्रस्थान किया। जब वे बहुतसी भूमि उल्लंघन कर गये तो सेवक के पूछने पर राणा ने अपनी यात्रा का उद्देश्य प्रगट किया, पर दोनों ही व्यक्ति पद्मिनी स्त्री का ठाम ठिकाना नहीं जानते थे। उन्होंने एक वृक्ष के नीचे विश्राम किया तो एक भूख-प्यास से व्याकुल पथिक आकर राणा के चरणों में उपस्थित हुआ। राणा ने उसे खान-पान और शीतोपचार से संतुष्ट किया और स्वस्थ होने पर पूछा कि तुमने कहीं पद्मिनी स्त्री का ठाम-ठिकाना देखा-सुना हो तो बताओ! पथिक ने कहा—राजन्! दक्षिण समुद्र के पार सिंघल-द्वीप में अप्सरा की भांति पद्मिनी स्त्रियाँ होती हैं! राणा ने दक्षिण का मार्ग पकड़ा और नाना जंगल पहाड़ों को उल्लंघन करता हुआ खवास के साथ समुद्र तट पर पहुंचा।

राणा को दुर्लंघ्य समुद्र को पार करने की चिन्ता में घूमते हुए सहसा औघड़नाथ योगी से साक्षात्कार हुआ। राणा ने उसे विनय-भक्ति से संतुष्ट कर पद्मिनी के हेतु सिंघलद्वीप पहुँचाने की प्रार्थना की। योगी ने अपने दोनों हाथों में दोनों सवारों को लेकर आकाशमार्ग द्वारा सिंहलद्वीप पहुँचा दिया और स्वयं अदृश्य हो गया। राणा प्रसन्नचित्त से भ्रमण करता हुआ सिंहलद्वीप की शोभा देखने लगा। जब वह नगर के मध्य भाग में पहुँचा तो उसने ढंढोरे का ढोल सुना और पूछने पर ज्ञात हुआ कि सिंहलपति की तरुण बहिन पद्मिनी उसी व्यक्ति को वरमाला पहनायगी, जो उसके भ्राता को सतरंज के खेल में जीत लेगा। राणा ने पटह-स्पर्श किया, वह पद्मिनी के समक्ष सिंहलपति के साथ शतरंज खेलने लगा, पद्मिनी भी राणा के सौन्दर्य से मुग्ध होकर मनही मन उसके विजय की प्रार्थना करने लगी। पुण्य प्राग्भार से राणा ने सिंहलपति को जीत लिया, पद्मिनी की वरमाला राणा के गले में सुशोभित हुई। सिंहलपति ने राणा के साथ पद्मिनी का पाणिग्रहण बड़े भारी समारोह से कराया और अपनी प्रतिज्ञानुसार राणा को आधा देश भंडार समर्पित किया। पद्मिनी को दहेज में हाथी, घोड़े, वस्त्रालङ्कार और दो हजार सुन्दर दासियाँ मिलीं। पद्मिनी तो अद्भुत रूपनिधान थी ही, उसके देह सौरभ से चतुर्दिक् भौंरे गुंजार कर रहे थे। कुछ दिन सिंहलद्वीप में रहने के पश्चात् सारे धनमाल और परिवार को जहाजों में भरकर

राणा स्वदेश के लिए रवाने हुआ। सिंहलपति से प्रेमपूर्वक विदा लेकर राणा स्वदेश लौटा।

इधर चित्तौड़ में राणा के एकाएक चले जाने से चिन्तित वीरभाण ने माता से सत्य वृतान्त ज्ञात किया और लोगों के समक्ष राणा के जाप में बैठने की प्रसिद्धि कर स्वयं राज काज चलाने लगा। लोगों को जब छः मास से भी अधिक बीत जाने पर राणा के दर्शन न हुए तो नाना प्रकार की आशंकाएँ उठ खड़ी हुई। इसी समय राणा रतनसेन दो हजार घोड़े, दो हजार हाथी एवं पालकियों के परिवार से परिवृत चित्तौड़ के निकट पहुँचा। पद्मिनी की स्वर्ण-कलशों वाली पालकी, मध्य मे सुशोभित थी। दूर से विस्तृत सेना आती हुई देखकर परदल की आशंका से वीरभाण ने सैनिक तैयारी प्रारम्भ कर दी। इतने ही में राणा का पत्र लेकर एक दूत राजमहल में पहुँचा, सारा वृतान्त ज्ञात कर चित्तौड़ में सर्वत्र आनन्द छा गया और स्वागत के लिए जोर-शोर से तैयारियाँ होने लगी।

स्थान स्थान में मोतियों से वधाते हुए, ध्वजा पताका सुशोभित उल्लासपूर्ण वातावरण में महाराणा ने चित्तौड़ में प्रवेश किया। रानी प्रभावती को राणाने अपनी प्रतिज्ञापूर्ण कर दिखा दी। राणाने पद्मिनी के लिए विशाल एवं सुन्दर महल प्रस्तुत किया, जिसमें वह अपनी सखियों के साथ आनन्दपूर्वक रहने लगी। महाराणा अहर्निश पद्मिनी के प्रेमपाश में बँधा हुआ

नाना क्रीड़ा, विलास में रत रहता था। एक बार 'राघव चेतन' नामक प्रकाण्ड विद्वान ब्राह्मण, जोकि महाराणा द्वारा सम्मानित होने के कारण बेरोकटोक महलों में जाया करता था, पद्मिनी के महलमें जा पहुँचा। महाराणा अपने क्रीड़ा-विलास के समय उसे आया देखकर कुपित हो गए और असमय में व अनाहूत आने की मूर्खता पर बहुत सी खरी-खोटी सुनाई। धक्का देकर निकाल दिये जाने पर अपमानित व्यास राघव चेतन शीघ्र ही चित्तौड़ त्यागकर दिल्ली चला गया। थोड़े दिनों में उसकी विद्वता की प्रसिद्धि शाही-दरबार तक पहुँच गई। सुलतान अलाउद्दीन ने उसे दरबार में बुलाया और प्रसन्न होकर पाँचसौ गाँव देकर अपना दरबारी बना लिया।

राघव चेतन ने राणा से प्रतिशोध लेने के लिए एक भाट और खोजे से घनिष्टता कर ली। राघवचेतन ने उसे किसी प्रकार पद्मिनी स्त्री की बात छेड़ने के लिए कहा, तो भाट राज-हंस की पाँख लेकर दरबार में आया और सुलतान के किसी अनोखी वस्तु की बात पूछने पर पद्मिनी स्त्री के सौन्दर्य्य व सुकुमारता की प्रशंसा की। सुलतान ने कहा कि तुमने कहीं पद्मिनी देखी सुनी हो तो कहो! भाट ने कहा—श्रीमान् के महल में हजार स्त्रियाँ हैं जिनमें कोई अवश्य होगी! खोजे ने कहा कि रावण की लंका में पद्मिनी स्त्री सुनी गई थी और तो कहीं भी संसार में नहीं है। यहाँ तो सब संखिनी स्त्रियाँ हैं। भाट-खोजे के विवाद में सुलतान ने रस लिया और पूछा

क्यों बे, हमारे महल में सभा संखिनी है ? पद्मिनी एक भी नहीं ? खोजे ने कहा—यह तो लक्षण, भेदादि के शास्त्र-मर्मज्ञ राघवचेतन ही बतला सकते हैं ! सुलतान के पूछने पर व्यास ने चारों प्रकार की स्त्रियों के गुण-लक्षणादि विस्तार से समझाये। सुलतान ने अपने महल की स्त्रियों की परीक्षा कर पद्मिनी जाति की स्त्री बताने की आज्ञा दी और उनका प्रतिबिंब देखने के लिए मणिगृह का आयोजन किया। राघव-चेतनने सबको देखकर कहा कि आपके महल में एक एक से बढ़कर रूपवती हस्तिनी, चित्रणी तो है, पर पद्मिनी स्त्री एक भी नहीं है।

सुलतान ने कहा--बिना पद्मिनी स्त्री के मेरा जीवन ही वृथा है, पद्मिनी स्त्री कहाँ मिलेगी ? व्यास ! मुझे बतलाओ ! राघव चेतन ने कहा—सिंघलद्वीप में पद्मिनी स्त्रियाँ होती हैं। तो सुलताननें १६ हजार हाथी और २७ लाख अश्वारोही सेना के साथ सिंहलद्वीप की ओर प्रस्थान कर दिया। समुद्र-तट पर पहुँचने पर हठी सुलतान ने सिंहलपति पर आक्रमण करके गिरफ्तार करने की आज्ञा दी। सुभट लोग नौकाओं में बैठ कर दरिया के बीच गए तो भँवरजाल में पड़कर वाहण टूट-फूट गए। सुलतान ने कुपित होकर और सुभटों को भेजने की आज्ञा दी। उसे केवल एक ही धुन थी कि लाखों सेना भले ही समुद्र में समाप्त हो जाय, पर सिंहलपति को अवश्य हराकर पद्मिनी प्राप्त की जाय ! सुभटों ने राघव चेतन से कहा—

किसी प्रकार सुलतान को लौटाने की युक्ति सोचो, अन्यथा बेकार लाखों की प्राणाहुति हो जायगी। राघव चेतन की सलाह से ५०० हाथी ५००० घोड़े, करोड़ दीनार एवं नाना प्रकार की भेंट वस्तुएँ प्रस्तुत कर अज्ञात व्यक्तियों द्वारा वाहनों में भरकर प्रातःकाल होने से पूर्व ही समुद्र में उपस्थित कर दिये और उन्हें सिंहलपति के प्रधान लोग दण्ड स्वरूप लाये हैं, बतला कर विनय वचनों से सुलतान को समझाकर सुलह करा दी। सुलतान ने सिंहलपति की कथित भेंट स्वीकार कर उनके प्रतिनिधियों को सिरोपाव देकर लौटा दिया और सिंहल से आई हुई भेंट को अपनी सेना में बाँट कर दिल्ली की ओर लौटने का आदेश दे दिया।

जब सुलतान दिल्ली आये, तो बड़ी बेगम ने कहा—आप कैसी पद्मिनी लाए हैं, हमें भी दिखाइये! सुलतान के मन में फिर पद्मिनी प्राप्त करने की तमन्ना जग उठी और राघवचेतन से कहा—सिंघलद्वीप के सिवा और कहीं पद्मिनी स्त्री हो तो बतलाओ! राघव चेतन ने कहा—चित्तौड़ के राणा रतनसेन के यहाँ पद्मिनी अवश्य है, पर शेषनाग की मणि को कौन ग्रहण कर सकता है? सुलतान ने अभिमान पूर्वक बड़ी भारी सेना तय्यार कर चित्तौड़ पर चढ़ाई कर दी। राणा की सेना ने सुलतान के साथ बड़ी वीरता से युद्ध किया और उसके सारे प्रयत्न विफल कर दिये। सुलतान ने सफलता पाने के लिए गुप्त छल करने का विचार करके अपने प्रधान पुरुषों को सुलह करने

के लिए राणा के पास भेजा। उन्होंने राणा से कहा—सुलतान चाहते हैं कि अपने परस्पर प्रीति की वृद्धि हो। अतः वे गढ़ देखकर, पद्मिनी के दर्शन व उसके हाथ से भोजन कर बिना किसी प्रकार के दण्ड, भेंट लिए वापस दिल्ली लौट जायेंगे। राणा रत्नसेन कपटी सुलतान की मीठी बातों के चक्कर में आ गया और सुलतान के अधिकारियों के संम-प्रतिज्ञा पूर्वक कहने पर उसने थोड़े लश्कर के साथ चित्तौड़ दिखा कर गोठ जिमाने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

सुलतान अलाउद्दीन के पास व्यास राघव चेतन राणा के घर का पूरा भेदू था। इसकी मंत्रणा के अनुसार ही वह अपना कपट-चक्र संचालन करता था। सरल स्वभावी राणाने मंत्रियों को स्वागत के लिए भेजकर सुलतान को बुलाया। गढ़ के द्वारा खोल दिये गए। सुलतान तीस हजार सैनिकों के साथ गढ़ में प्रविष्ट हो गया। इतने सैनिक देख राणा के मन में खटका हुआ और उसने अपनी सेना को तैयार होने का संकेत कर दिया। सुलतान के यह कहने पर कि क्यों सेना एकत्र करते हो, हम गढ़ देखकर लौट जावेंगे, तो राणा ने कहा— अपने वचनों के विपरीत आप तीस हजार सवार क्यों लाये? मेरी सेना के वीर इन्हें क्षण मात्र में पीस डालेंगे। सुलतान ने छलपूर्वक कहा—राणा! आप संदेह क्यों करते हो! मेहमान थोड़े हों या अधिक, आ जावें उनका तो सत्कार करना ही चाहिए। आज तो खाद्यपदार्थ सस्ते हैं, सुकाल है, यदि भोजन-

व्यय का विचार आता हो तो हम लौटे चलें ! राणा ने कहा— भोजन के लिए ऐसी क्या बात है, तुच्छ बात न कहें, इससे दुगुने हों तो भी खान पान की कमी नहीं ! इस प्रकार दोनों मेल-जोल से बातें करते महलों में आये। राणा ने शाही भोजन के लिए बड़ी भारी तय्यारी की। राणा ने जब पद्मिनी को आज्ञा दी कि वह सुलतान को परोसे ! तो उसने अपने जैसी ही रूप रंगवाली दासी को इस कार्य के लिए नियुक्त कर दिया। राणा के सजे हुए मंडप में सुलतान को पद्मिनी की दासी ने नाना वेश परिवर्त्तन कर विविध व्यंजन परोसे। सुलतान उसकी रूप-माधुरी से विह्वल होकर कहने लगा—राणा के घर में तो इतनी पद्मिनियां है, और मेरे यहां एक भी नहीं तब मेरी बादशाही में क्या रखा है ! राघव चेतन ने कहा—यह तो पद्मिनी की दासी है ! पद्मिनी तो ऊँचे महलों के समृद्ध कक्ष में रहती है, उसके तो दर्शन ही दुर्लभ है ! इतने ही में पद्‌मिनी ने सहज भाव से शाही भोजन-समारोह को देखने के लिए रत्नजडित गवाक्ष की जाली में से झाँका। राघव चेतन ने संकेत से पद्‌मिनी को दिखाया और रूप मुग्ध सुलतान को विह्वल और मूर्छित होते देख, उसे किसी युक्ति से प्राप्त करने की आशा देकर आश्वस्त किया।

भोजनान्तर राणा ने सुलतान को हाथी, घोड़े, वस्त्राभरण भेंट कर परस्पर हाथ मिलाये हुए चित्तौड़ दुर्ग में घूम घूम कर सारे विषम घाट-स्थान दिखलाए। सुलतान ने राणा से मां-

जाये भाई के सदृश प्रेम प्रदर्शित करते हुए विदा मांगी और हाथ पकड़े पकड़े प्रेमालाप पूर्वक पहुँचाने के बहाने वह उसे गढ़ के बाहर तक ले आया और राघव चेतन की सलाह से सुभटों द्वारा राणा को कब्जे कर गिरफ्तार कर लिया। राणा के साथ में जो थोड़े बहुत सुभट थे वे हक्के बक्के और किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो गए। राणा के हाथ पैर में बेड़ी डाल दी गई। गढ़ में यह खबर पहुँचने पर सुभटों के बीच बैठकर वीरभाण अपना कर्त्तव्य स्थिर करने के लिए विचार विमर्श करने लगा। इतने ही में दो शाही दूत आये और उन्होंने यह शाही सन्देश सुनाया कि—सुलतान पद्मिनी को प्राप्त करके ही राणा को मुक्त कर सकता है, उसे और किसी वस्तु की वांछा नहीं है! यदि आप लोग पद्मिनी को नहीं दोगे, तो शाही सेना द्वारा दुर्ग को चूर कर राज्य छीन लिया जायगा। वीरभाण ने सोच-विचार कर प्रातः काल उत्तर देने का कह कर दूतों को विदा किया।

वीरभाण ने सुभटों से नाना विचार विमर्श कर निश्चय किया कि पद्मिनी को देकर राणा को छुड़ा लेना ही श्रेयस्कर है! निर्नायक सुभट निरुपाय होकर सत्वहीन हो गए। वीरभाण के हृदय में अपनी माता के सौभाग्य उतारने में कारणभूत पद्मिनी के प्रति सद्भाव की न्यूनता थी ही। अतः पद्मिनी के लिए अपना रास्ता स्वयं निर्धारित करने के सिवा और कोई चारा नहीं रहा। वह अपनी शीलरक्षा के लिए प्राणों

की आहूति देने के लिए प्रस्तुत थी ही, पर किसी युक्ति से राणा भी मुक्त हो जांय और उसे भी तुर्कों के कब्जे में न जाना पड़े, ऐसा उपाय सोचने लगी।

पद्मिनी ने सुना था कि गोरा बादल नामक वीर काका-भतीजा किसी बात पर राणा से नाराज होकर घर जा बैठे हैं और उन्होंने ग्रास-गोठ को भी त्याग दिया है। वे चित्तौड़ त्याग कर काम-काज के लिए अन्यत्र जाने को प्रस्तुत हो रहे थे, उसी समय अचानक शाही आक्रमण हो गया; अतः उन्होंने चित्तौड़ छोड़ना स्थगित कर दिया है। अपने गाँठ का खर्च खाकर वे घर पर बैठे हुए हैं, (खेद है) ऐसे आत्माभिमानी वीरों को कोई नहीं पूछता। अतः उपस्थित समस्या का न्यायपूर्वक हल भी कैसे हो? पद्मिनी उनके शौर्य्य की प्रसिद्धि से प्रभावित हो चकडोल पर बैठकर स्वयं वीर गोरा के घर गई। गोरा ने उसका स्वागत करते हुए कहा—माताजी! आज मेरे घर पधार कर आपने बड़ी कृपा की, घर बैठे गंगा प्रवाह आने से मैं पवित्र हो गया, मेरे योग्य जो काम सेवा हो उसे फरमाइये! पद्मिनी ने दुःख भरे शब्दों में कहा—क्या करूं? ऐसे विकट समय में सुभटों ने क्षत्रवट खो कर मुझे तुर्कों के यहाँ भेजना स्वीकार कर लिया है, अब मुझे एकमात्र आपका ही भरोसा है, मैं इसी हेतु आपके पास आई हूँ! गोरा ने कहा—माताजी! हमें कौन पूछता है? हम तो अपनी गांठ का खर्च खाकर घर में बैठे हैं, पर आपने हमारे घर को चरण-धूलि से पवित्र कर

दिया तो अब किसी प्रकार का भय न लाकर निश्चिन्त रहें ! आप जैसी रानी को देकर राजा को छुड़ाने का घटिया दाव खेलने से तो मर जाना ही श्रेयष्कर है ! रानी ने कहा—इस तुच्छ बुद्धि के धनी तो राजा की तरह गढ को भी खो बैठेंगे ! अतः इसीलिए मैं तुम्हारे शरण में आई हूँ। गोरा ने कहा— (तो ठीक है) मेरा भाई गाजण बड़ा भारी शूर वीर था, उसके पुत्र बादल से भी चल कर सलाह कर ली जाय !

गोरा और पद्मिनी, बादल के यहां गए। उसने सविनय जुहार करते हुए आने का कारण पूछा। गोरा ने सारा वृतान्त बताते हुए कहा कि—अपन दो व्यक्ति किस प्रकार शाही सेना को शिकस्त दें। पद्मिनी ने कहा भैया ! मैं तुम्हारे शरणागत हूँ, यदि बचा सको तो बोलो, अन्यथा एक बार मरना तो है ही, मैं हर हालत में अपनी शील रक्षा तो करूंगी ही। पद्मिनी की प्रेरणा दायक बातें सुनकर बादल ने तत्काल राणा को छुड़ा लाने की प्रतिज्ञा की। पद्मिनी कृत-कार्य होकर अपने महल लौटी। बादल की माता और स्त्री ने उसे इस दुस्साहसपूर्ण प्रतिज्ञा से विचलित करने के लिये नाना मोह जाल फैलाया पर उस दृढ़-प्रतिज्ञ बादल को विचलित करना तो दूर, उलटे वीरोचित प्रेरणा उत्साह दिला कर अपने हाथों हथियार बँधा कर बिदा करना पड़ा। वह काका गोरा के पास अश्वारूढ़ होकर कार्यक्षेत्र में उतरने की आज्ञा माँगने के लिए गया। जब गोरा ने उसे अकेले न जाने का कहा तो बादल ने उसे

यह कहकर आश्वस्त किया कि युद्ध में अपने दोनों साथ चलेंगे, अभी तो मैं केवल चास-भाष देखकर आता हूँ।

बादल तत्काल मेवाड़ी सुभटों की सभा में पहुंचा। उसे अचानक आये देखकर सब लोगों ने खड़े होकर सम्मान प्रदर्शित किया। वीरभाण कुमार आदि से खूब विचार-विमर्श करने के अनन्तर वह अकेला अश्वारूढ़ होकर शाही सेना की खबर लेने के लिए चल पड़ा। सुलतान ने जब अकेले बादल को आते देखा तो चमत्कृत होकर सम्मानपूर्वक उसे अपने पास बुलाया। बादल ने कहा मैं पद्मिनी का भेजा हुआ आया हूँ। अपना पूरा परिचय देते हुए उसने कहा—पद्मिनी ने जब से आपको देखा है, आपसे मिलने के लिए तड़फ रही है, वह उस घड़ी की प्रतीक्षा में है, जब आप से उनका मिलना होगा। यह लीजिये उसने मुझे आपको देने के लिए चिट्ठी भी दी है, जिसमें अपनी आंतरिक अवस्था और विरह गाथा यत्किञ्चित प्रदर्शित की है। आपका संदेश जब पद्मिनी को आपके यहाँ भेजने के लिये गढ़ में पहुंचा तो सुभटों ने तो मरने मारने की तैयारी कर ली; पर मैं किसी प्रकार कुँवर वीरभाण व सुभटों को समझा-बुझाकर आया हूँ और आशा करता हूँ कि आपका व पद्मिनी का मनोरथ पूर्ण करने में मुझे अवश्य सफलता मिलेगी।

बादल के प्रस्तुत किये नकली प्रेमपत्र को पढ़कर सुलतान पानी-पानी हो गया। उसके हृदय पर इसका सीधा असर हुआ

और वह बादल की बात को सर्वथा सत्य मानकर गारुड़ी मन्त्र-प्रभावित सांप की भांति पूर्णतया उसके अधीन हो गया। सुलतान ने कहा—मेरी लाज तुम्हारे हाथ है, बादल! जिस किसी प्रकार से सुभटों को समझा-बुझाकर पद्मिनी को मेरे पास भेजने में उन्हें सहमत कर लो! सुलतान ने बादल को सिरोपाव सहित लाख स्वर्णमुद्राएं देते हुए कहा कि काम बन जाने पर तुम देखना, मैं तुम्हारी कितनी इज्जत बढ़ाऊंगा! सुलतान ने पद्मिनी को प्रेम-पत्र भेजना चाहा तो बादल ने कहा—पत्र किसी अन्य व्यक्ति के हाथ लग जाने से ठीक नहीं। अतः मैं आपके सारे समाचार मौखिक ही सुनाऊंगा! इस प्रकार बादल ने मीठे वचनों से सुलतान को प्रसन्न कर विदा ली, सुलतान उसे पोलि द्वार तक पहुंचाने आया। बादल जब प्रचुर धन राशि लेकर घर लौटा तो माता व स्त्री को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। गोराजी ने कहा—बादल अवश्य ही अपने काम में सफल होगा। पद्मिनी को भी अपने पति-मिलन का विश्वास हो गया। सब लोग उसके बुद्धिचातुर्य से हर्ष विभोर हो गए।

बादल ने राज-सभा में जाकर गुप्त मन्त्रणा की और तय किया कि दो हजार सुन्दर चकडोल जरी के वस्त्र और स्वर्ण-कलश मंडित तैयार हों, और प्रत्येक में दो दो शस्त्रधारी सुभट सन्नद्ध बद्ध रहें। बीच की प्रधान पालकी में गोराजी को बिठा-कर पद्मिनी के रूप में उनका परिचय दिया जाय। उसे वस्त्रों

से इस प्रकार वेष्टित किया जाय कि मानों पद्मिनी के सौरभ से आकृष्ट भ्रमर-गुंजार से बचने के लिए ही ऐसा किया गया हो ! सुभटों वाली पालकियों में पद्मिनी की सखियाँ हैं ऐसा प्रचारित किया जाय। गढ़ से लेकर सेना पर्य्यन्त इस प्रकार पालकियाँ आयोजित हों कि उनकी कड़ी सी जुड़ जाय। इस सारे काम को सम्पन्न करने में कुछ विलम्ब करना इधर मैं सुलतान के पास जाकर पहले राणाजी को छुड़ा लूं उसके बाद घात किया जायगा ! इस प्रकार बादल अपनी सारी योजना समझा कर सुलतान के पास गया। सुलतान हर्षपूर्वक उससे मिला और पूछने लगा कि काम बनाया कि नहीं ? बादल ने कहा—किसी प्रकार समझा-बुझाकर पद्मिनी को सखियों के परिवार सहित लाया हूँ, सारी पालकियाँ गढ़ से उतर कर आ ही रही हैं ! पर सब लोग इस बात से शंकित है कहीं राणा भी न छूटे और रानी भी चली जाय। अतः उनके आश्वस्त होने के लिए आपकी सेना का यहां से प्रयाण हो जाना आवश्यक है ! यदि आपको भय हो तो पांच हजार सेना अपने पास रख सकते हैं ! पद्मिनी से मिलनोत्सुक सुलतान ने कहा—मैं भला किससे डरूं ? जगत मेरे से भय खाता है। तुमने भी बादल, चतुर होते हुए यह खूब कही ! उसने तुरंत चार हजार सुभटों को छोड़कर बाकी समस्त सेना को तुरन्त कूच करने की आज्ञा दे दी।

सुलतान ने पुनः बादल को सिरोपाव पूर्वक लाख स्वर्ण-

मुद्राएँ दीं। वह सारा धन घर में रख आया और सुभटों को सारे संकेत समझाकर सुखपाल के आगे आगे स्वयं चलने लगा। बादल को देखकर सुलतान ने उसे अपने पास बुलाया। संयोग की बात थी कि राघवचेतन बड़ा भारी बुद्धिमान था, पर स्वामिद्रोह के पाप के कारण उसकी बुद्धि पर पत्थर पड़ गये, अस्तु। बादल ने निवेदन किया—पद्मिनी ने संदेश भेजा है कि आपकी सब रानियों में मुझे पटरानी स्थापित करना होगा। सुलतान के सहर्ष स्वीकार करने पर वह बार-बार स्वर्णकलश वाली तथा कथित पद्मिनी के पालकी और सुलतान के बीच संदेश लाने के बहाने फिरने लगा। उसने कहा—पद्मिनी ने कहलाया है कि हमें आते-आते बहुत देर हो गई, अब कृपाकर राणाजी से एक बार अंतिम मिलन का अवसर दें, क्योंकि लोक व्यवहार में मैं उनके साथ ब्याही गई थी, तो दो बात कर, उनसे अन्तिम विदा तो ले आऊँ! सुलतान को पद्मिनी का यह शिष्टाचार योग्य लगा और उसने तत्काल राणा रतनसेन को बन्धन मुक्त-कर देने का आदेश दे दिया। जब यह शाही आज्ञा लेकर बादल राणा के पास गया तो राणा ने कुपित होकर बादल से कहा—धिक्कार हो बादल! तुमने क्षत्रियत्व को लजाने वाला यह क्या सौदा किया? स्वामीद्रोह करने के साथसाथ तुमने सदा के लिये मेरे कुल में भी कलंक लगा दिया! बादल ने कहा—चिन्ता न करें, यह खेल दूसरा है, आपके भाग्य से सब अच्छा ही होगा।

इन वचनों से राणा मन ही मन सब कुछ समझ गया। सुलतान ने उसे पद्मिनी को जल्दी विदा देने की आज्ञा दी। राणा पालकियों के बीच में से बादल के संकेतानुसार तीर की तरह निकलता हुआ तुरन्त गढ़ में जा पहुँचा। उसके सकुशल पहुँचने के उपलक्ष में संकेतानुसार जंगी नगारे निसाण बजा दिये गये। चित्तौड़ गढ़ में राणा के पहुँचने से सर्वत्र हर्ष उल्लास छा गया।

जब गढ़ में नौबत बजते हुए सुने तो गोरा बादल ने समस्त सन्नद्धबद्ध सुभटों के साथ शाही सेना में मार काट मचा दी। विस्तृत शाही सेना तो पहले ही कूच कर कोशों दूर पहुँच चुकी थी। अतः जो चार हजार सुभट सुलतान के पास थे, गोरा और बादल ने घमासान युद्ध करके उनका सफाया कर डाला। अन्त में गोरा ने जब सुलतान पर आक्रमण किया तो वह भागने लगा। यह देख बादल ने कहा—काकाजी इस कायर निर्बल को छोड़ दो। भगते पर वार करना क्षात्र धर्म के विपरीत है। किले पर खड़े राणा आदि सभी लोग गोरा के वीरत्व की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे।

इस युद्ध में गोराजी काम आये, बादल ने सुलतान को जीवित छोड़ कर शाही लश्कर को लूट लिया। दो दिन के बाद सुलतान एक खवास के साथ मारा मारा फिरता नमाज के समय लश्कर के निकट पहुंचा। खवास के खबर करने पर अमीर उमराव आकर सुलतान से मिले। उसे भूखा प्यासा

और बेहाल देखकर उन लोगों ने पूछा कि अपना कटक और पद्मिनी आदि सब कहाँ रह गये ? सुलतान ने कहा—बादल ने हमारे से धोखा किया, पद्मिनी के भरोसे आई हुई पालकियों में से सुभट कूद पड़े और हमारे लश्कर को समाप्त कर डाला। मैं तो रहमान की कृपा से बड़ी मुश्किल से बच पाया हूँ। मैं वस्तुतः पद्मिनी के मोहजाल में भ्रान्त हो गया था, अन्यथा हिन्दू लोगों की मेरे सामने क्या बिसात थी। इसके बाद सुलतान अपने लश्कर के साथ दिल्ली चला गया। जब बेगमों ने सुलतान से पद्मिनी दिखाने की प्रार्थना की तो उसने कहा—पद्मिनी का मुँह काला किया, खुदा की दुआ से खैरियत हुई। सुलतान की बेगमें खमा! खमा! करने लगी, माता ने कहा—स्त्री के कारण रावण जैसों का राज गया, अब तो खुदा का ध्यान करते हुए आनन्द से राज करो।

सुलतान के भगने पर रणक्षेत्र शोधकर बादल चित्तौड़ दुर्ग में प्रविष्ट हुआ राणा ने उसे हाथी पर बैठाकर छत्र ढुलाते हुए गढ़ में लाकर नाना प्रकार से सन्मानित किया। पद्मिनी ने आशीर्वाद की झड़ियाँ लगा दी। उसे तिलक करके मोतियों से बधाते हुए पद्मिनी ने उसे अपना भाई करके माना। क्या घरों में और क्या बाजार में सर्वत्र बादल के यशोगान किये जा रहे थे। माता ने बादल को चिरंजीवी होने का आशीर्वाद दिया और स्त्रियों ने धवल मंगलपूर्वक हर्ष व्यक्त किया। काकी ने पूछा! तुम्हारे काका ने किस प्रकार शत्रुओं से लोहा

लिया ? बादल ने कहा—माता ! काकाजी की वीरता का कहाँ तक वर्णन करूँ । उन्होंने तो शत्रुसेना का इतना सफाया किया कि मात्र सुलतान अकेला किसी प्रकार बच पाया । काकाजी का शरीर इस महायुद्ध में तिल तिल-सा छिद्रित हो गया और वे स्वर्गपुरी के मेहमान हो गये । उन्होंने गढ़ की लज्जा रखी और अपने वंशको उज्वल किया ।

पति की वीरता का बखान सुनकर गोरा की स्त्री के रोम-रोम में वीरत्व छा गया और वह पतिपरायणा सतवंती सत में अभिभूत होकर बादल से कहने लगी—बेटा ! ठाकुर स्वर्ग में अकेले हैं और विलम्ब होने से अन्तर पड़ता जा रहा है । अतः अब काकी को शीघ्र ही ठिकाने लगाओ । बादल ने काकी के सत्त की प्रशंसा की । वह सुसज्जित होकर अश्वारूढ़ हुई और राम-राम उच्चारण करते हुए (गोरा के शव के साथ) अग्नि-प्रवेश कर गई ।

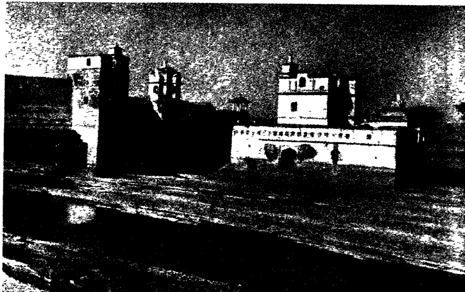
बादल ने अपने बुद्धिबल, स्वामिभक्ति और शौर्य्य के बल पर राणा को छुड़ाया, दिल्लीपति को जीता और पद्मिनी की रक्षा की । उसका यश नवखण्ड में फैला । इस तरह पद्मिनी के शील-प्रभाव और बादल के सानिध्य से रत्नसेन राणा निर्भय राज्य करने लगे ।

इसके बाद कवि लब्धोदय पद्मिनी चरित्र को सुखान्त समाप्त करता है और प्रशस्ति में अपनी गुरु परम्परा, वर्त्तमान आचार्य तथा राणा जगतसिंह की माता जंबूवती के प्रधान

कटारिया मंत्री भागचंद—जो इस रचना के प्रेरक थे—के वंश का परिचय देता है। अलाउद्दीन के पुनराक्रमण और पद्मिनी के जौहर की घटनाओं के सम्बन्ध में लब्धोदय तथा दूसरे सभी कवि मौन हैं।

मलिक मुहमद जायसी के 'पद्मावत' में लिखा है कि राणा को सुलतान अलाउद्दीन गिरफ्तार कर दिल्ली ले गया था पर जटमल प्रतिदिन गढ़ के नीचे राणा को लाकर उसके कोड़े मरवाने का उल्लेख करता है। तथा लब्धोदय आदि ने भी स्पष्ट लिखा है कि राणा को शाही शिविर में कैद किया गया था, और छुड़ा कर लाने की सारी घटनाएँ और संकेत इसी बात को पुष्ट करते हैं। नाभिनंदनोद्धार प्रबन्ध (रचना सं० १३७३) में श्री कक्कसूरि चित्रकूटपति को पकड़ कर गले में रस्सी बाँध कर नगर नगर में घुमाने का उल्लेख करते हैं जो चित्रकूट से अन्यत्र गमन के पक्ष में हैं। संभव है यह घटना पुनराक्रमण से सम्बन्धित हो। ऐतिहासिक तथ्यों को शोध कर प्रकाश में लाना विद्वानों का काम है।

पद्मिनी चरित्र चौपई



पद्मिनी महल, चित्तौड़

[फोटो—सार्वजनिक संपर्क विभाग-राजस्थान]

कवि लब्धोदय कृत

पद्मिनी चरित्र चौपई

प्रथम खण्ड

मंगलाचरण

दोहा

श्री आदीसर प्रथम जिन, जगपति ज्योति सरूप।
निरभय[1] पद वासी नमुं, अकल अनंत अनूप ॥ १ ॥
चरण कमल चितस्युं नमुं, चउवीसम जिणचंद।
सुखदायक सेवक भणीं, साचो सुरतरु कंद ॥ २ ॥
सुप्रसन सामणि सारदा, होयो[2] मात हजूर।
बुद्धि दियौं मुझ नै बहुत, प्रगट वचन पंडूर ॥ ३ ॥
ज्ञाता दाता दान[3] धन, 'ज्ञानराज' गुरुराज।
तास प्रसाद थकी कहुं, सती चरित सिरताज ॥ ४ ॥

कथा-प्रसङ्ग

गौरा बादल अति सगुण[4] सूर वीर सिरदार।
चित्रकूट कीधो चरित, स्वामीधर्म साधार ॥ ५ ॥
सरस कथा नवरस सहित, वीर शृंगार विशेष।
कहस्युं कवित कल्लोल स्युं, पूरव कथा संपेख ॥ ६ ॥
पदमणी पाल्यो शीलव्रत, बादल गौरा वीर।
शील वीर गावत सदा, खांड मिली घृत खीर ॥ ७ ॥

१—निरभय २ हुइज्यो ३ ज्ञानभर ४ गुणी

ढाल १—चउपई नी, राग रामगिरी

चित्तौड़-वर्णन

देश बड़ो 'मेवाड़' दयाल, प्रारथियां दुखियां प्रतिपाल।
'चित्रकूट' तिहां चावो अछै, पहोवी गढ़ बीजा तसु पछै॥१॥
गावै मीठे सुर गंधर्व, सुरनर किन्नर देखे सर्व।
तापस तीर्थ तिहां अति कह्या, राम जिहां वनवासै रह्या॥२॥
ऊंचो गढ लागो आकास, हर भूल्यो जाण्यो कविलास।
हर राणी तव कीधो हास, हिम[1] गढ चढ़ीयो[2] हेमाचल पास॥३॥
वले[3] अति बांको छै गढ घणो, ऊंची पोलि अनैं सोहामणो।
कोसीसा जे ऊंचा कीया, गयण आलंबन थांभा दिया॥४॥
बहैं नदी सीप्रा[4] विस्तार, कूप सरोवर[5] वावि अपार।
गौमुखकुंड प्रमुख बहुकुंड, पाणी जास पीइं षट खंड॥५॥
संचा वस्त अनेको तणा, का न रहइ मननी कामिणा।
ऊंचा तोरण महल अनेक, एक-एक थी अधिका एक॥६॥
सोवन दण्ड ध्रजा करि सोहता, मनड़उ भविक तणा मोहता।
दीपै तिहां जिन शिव देहरा, मोटा सिहर सरद मेहरा॥७॥
वारू चउरासी बाजार, हुँसी बैठा हारो हार।
राज महल अति रलीयामणा, पुण्य बिना ते नहिं पावणा॥८॥
च्यारे वर्ण वसइ अति चंग, पवन अढारें मन नें रंग।
माणिकचउक न लहैं माग, वन वाड़ी फल फूल्या बाग॥९॥

१ इम २ रच्यौं ३ वलय तीन ४ सिप्रा ५ कुवा सरवर

इन्द्रपुरी जाणे अवतरी, कोडीधज लोके करि भरी।
नगर वर्णनो नावे पार, देव रचई[1] ए गढ सार ॥१०॥
चतुर सुणयो देइ नइं चित्त, गुर मुख ढाल अरथ सुपवित्त।
'लब्धोदय' कहै पहली ढाल, आगइ सुणता अछै रसाल ॥११॥
[सर्व गाथा १८]

राजा वर्णन

दोहा

सूर वीर अति साहसी, सब राई मइ सिरमौर।
'रतनसेन' राणो तिहां, जा सम भूप न और ॥ १ ॥
जाकइ तेज प्रताप थइं, दुरजन[2] भागे सब दूर।
अंधकार कैसे रहइ, उदइ होइ जीहां सूर ॥ २ ॥
अविचल आज्ञा अवनि परि, न्याय निपुण निरभीक।
अरिगज भंजन केसरी, राखे खत्रीवट लीक ॥ ३ ॥
मानी मरदाना वली, दरबारइं दोय लाख।
सुभट खड़ा सेवा करइं, सुरपति वदइ ज्युं साख ॥ ४ ॥
हय गय रथ पायक हसम, करि न सकें कोउ माल।
रयण दूयुस ठाढइ रहे, सनमुख सब राय राण ॥ ५ ॥

पटराज्ञी वर्णन

पटराणी 'परभावती', रूपे रम्भ समान।
देखत सुरनर किन्नरी, अइसी नारि न आन ॥ ६ ॥

---

१ नीमीयो २ अरिजन गये ज दूर

चंदवदन गजराज गति, पनग वेणि मृग नयण ।
कटि लचकनी कुच भार तइं, रति अपछर हुइं अयन ।।७।।

ढाल २ योगिना रा गीतनी राग-मल्हार

राणी अवर राजा तणें जी, रूप निधान अनेक ।
पिण मनड़ो परभावती जी, रंज्यो करीय विवेक । राजेसर ।।१।।
चतुराई चित दीध, राजेसर, मन मोती गुण बींध ।।रा० च०।।

सतर भक्ष भोजन सझें जी, नित-नित नवली[१] भांति । रा०
व्यंजन रूड़ी विध करइजी, खातां उपजै खांति । रा० ।।२।। च०।।

रूपवंत नइ रागणी जी, गुणवंती गज गेलि ।रा०।
मन राजा रो मोहीयो जी, सोक्यां सहुइ ठेलि । रा० ।।३।।च०।।

भोजन तो परभावती जी, हाथ परुसइ हूँस ।रा०।
बीजी राणी वारणै जी, सहजें जावा सुंस ।रा० ।। ४ ।। च० ।।

मांहो मांही मोहत्युं जी, रति सुख माणइ राय । स० ।
खिण एक विरह नवी खमइ जी, दीठां दोलति थाय ।रा०।।५।।च०।।

पालइ राम तणी परइ जी, न्यायइं राज नरेस । रा०
आप भुजा अरीअण हण्या जी, सरद कीया सहुदेस ।।६।।च०।।

राजकुमार वर्णन

जनम्यो पुत्र महाजसी जी, प्रतापी पुण्यवंत । रा०
'वीरभाण' वखते वड़ो जी, दिन दिन अधिक दीपंत।।७।।च०।।

१ नव नव

भोजन प्रसंग

एकण दिन भोजन समइं जी, दासी बोलैं राज । रा०
पीउ पधारो भोजन समइं जी, ठाढो होवै नाज ।।रा०।।८।।च०।।
सिंहासन सोवन तणो जी, आवै बैठा राज ।रा०।
रतन जड़ित थाली बड़ी जी, कनक कचोला बाज[1] रा०।।९।।च०।।
रुड़ी परइं परुसइं रसवती जी, राजा जीमइ राग ।रा०।
खाटा मीठा चरपरा जी, सखर वणाया साग ।रा०।।१०।।च०।।
कदली दल हाथैं करी जी, ढोलै सीतल वाय ।रा०।।
विचि विचि मीठी वातड़ी जी, जोमतां घणो जीमाय।।११।।च०।।
मोसा दोसा मसकरी जी, हासैं वीनती तेह ।रा०।
कहिबो हुवै ते सहु कइइं जी, भोजन अवसर जेह ।।१२।।च०।।
जीमतां रूड़ी जुगति स्युं जी, कहि राजा किण हेत ।रा०।
स्वाद रहित सब रसवती जी, कां न करो चित चेत ।।।१३।।च०।।
आजकालिए रसवती जी, निपट करो निसवाद ।रा०।
कहि चतुराइ किहां गइ जी, कै पकस्यो परमाद ।।१४।।च०।।
तब तटकी बोली तिसइं जी, राणी मन धरि रोस ।रा०।
राणी[2] आणो कां नवी जी, द्यो मति मुझनै[3] दोस।।१५।।च०।।
म्हे केलवि जाणां नहीं जी, किसो अ करीजैं वाद ।रा०।
पदमणि का परणो नवी जी, जिम भोजन्न हुवै स्वाद ।।१६।।च०।।

१ साज २ नारी ३ झठउ

राजा गुरु स्त्री आगि नो जी, नवि कीजैं आसंग ।रा०।
'लब्धोदय' इण परि कहें जी, बीजी ढाल सुरंग[1] ॥१७॥च०॥
[सर्व गाथा ४२]

पद्मिनी पाणिग्रहण प्रतिज्ञा

दोहा

रीसाणो ऊठ्यो तुरत, तजि भोजन तिण वार ।
राणो तो हुं रतनसी, परणुं पदमणि नारि ॥ १ ॥
मोसा तो बोल्या मुनें, जइं में राख्यो मान ।
हिवें परणुं तरुणी पदमणी, गालुं तुज्झ गुमान ॥ २ ॥
मूरिख तें मुझ नें गण्यो, वचन कह्यो अविचार ।
जो पदमणि हाथे जीमस्युं, तो आवुं तुझ बार ॥ ३ ॥
मान गहेली माननी, विरुअउ बोल्यो वयण ।
विण आदर न रहें कदे, सिंह सूर नें सयण ॥ ४ ॥

गाहा

जणणी जण बंधू, भजा गेह धणं च धन्नं च ।
अवि माणया पुरिसा देस दूरेण छंडंति ॥ ५ ॥

दोहा

कीधी परतज्ञा इसी, मन सेती महाराय ।
पदमणि परणुं तो घरि रहुं, नहिं तो गिरि वनराय ॥ ६ ॥

---

१ सुचंग

सिंहलद्वीप प्रस्थान

ढाल (३) राग—मारू केदारो, चाल करतासुं तो प्रीति सहुँ हूँसी करै

इम चित[1] विमासी राय, अश्व दोय घन भर्या रे। अ०
साथें एक खवास, छाना नीसर्या रे। छा० ॥ २ ॥

छल करि दोन्युं असवार कि, चाकर नें धणी रे। चा०
जाता नवि जाणें कोइ कि, गया ते भूंय घणी रे॥ भू० ॥२॥

स्वामी कहूँ कारिज साच कि, सेवक इम भणें रे। से०
अणजाण्यां आंधि न सेठ कि, दोड्यां किम बणें रे। दो० ॥३॥

विण गाम किहा थी सीम कि, मेह विण बादलइ रे। मे०
ऊखर नवि ऊगे अन्न कि, न खेती विण हलइ रे। न० ॥४॥

तिण हेतइं भाखो मुझ कि, गुझ हिरदै तणो रे। गु०
कीजै तसु उपरि काज कि, विचारी आपणो रे। वि० ॥५॥

तब बोल्यो राजा एम कि, परणुं पदमणी रे। प०
आदरि करि करिहु उपाय कि, बात कहूँ सी घणी रे। बा० ॥६॥

बोलें सेवक धन्न मो पास कि, असंख्य गामे घणो रे। अ०
पिण नवि जाणुं गृह गाम कि, ठाम पदमणि तणो रे। ठा०॥७॥

थानिक जाणे विण मारग कि, कह्यो बूझयाँ किणे रे। क०।
तरु तलि लीधो विश्राम कि, ते बेहु जणें रे। ते० ॥८॥

---

१ चिंतवि मन मइं

तिण वेला पंथी एक कि, भूख त्रिस भेदीयउ रे। भू०
विण अमलें गहिलें देह कि, पंथ[1] अति देखियउ[2] रे। पं० ॥६॥

अटवी मांहि माणस एक कि, जोतां नवि जुड़यो रे। जो०
तदि देख्यो राजा तेण कि, पगि आवी पड़यो रे। प० ॥१०॥

कीधा सीतल उपचार कि, अमल पाणी दीयो रे। अ०
भोजन मेवा बहु भांति कि, राय संतोषीयो रे। रा० ॥११॥

पंथीक नै कोतिक बात कि, राय पूछें वली रे। रा०
देख्यो तें पदमणी देश कि, किहा हि सांभली रे। कि० ॥१२॥

सुणि राजन सिंघलद्वीप कि, दक्षिण दिशि अछै रे। द०
आडो बहै जलधि अथाह कि, पार जेहनो न छै रे। पा० ॥१३॥

तिहां पदमणि नारि अनेक कि, रूपें अपछरी रे। रू०
सुणि राजा देइ कान कि, सीख तिण सुं करी रे। सी० ॥ १४ ॥

मनि आणियो महाराय कि· दीप सिंघल भणी रे। दी०
चालविया चपल तुरंग कि, पवन थी गति घणी रे। प० ॥ १५ ॥

लांघ्या गिर नगर निवाण कि, सूर अति साहसी रे। सू०
दोन्युं आया दरिया तीर कि, मन मांहि अति खुशी रे म०॥१६॥

जगि पुण्य सहाइ जास कि, तास पूजें मन रली रे। ता०
मुनि 'लब्धोदय' कहै एमकि, को न सकै कली रे। को० ॥ १७ ॥

---

१ पंख २ खेदियउ

समुद्र वर्णन

दोहा

जल भरीयो दरीयो घणो, उछलता उद्धांन।
कल्लोले कल्लोले थी, उदक वध्यो असमान ॥ १ ॥

मच्छ कच्छ मांहि घणा, न सकें जाय जीहाज।
न चले जोरो नीरस्युं, कीज्ये किसो इलाज ॥ २ ॥

चिंता मन भूपति चतुर, स्युं कीजै जगदीस।
वेलि महा बीहामणी, पूजें केम जगीस ॥ ३ ॥

पदमणि स्यु ं पाणीग्रहण, विचि वारिधि अति क्रूर।
ऊखाणो साचो हुओ, बाघ नदी जल पूर ॥ ४ ॥

गुड़ मीठो ऊंडी नदी, आय मिल्यो ए न्याय।
हिकमति सी बीजी हिवें, कीजें कोउ उपाय ॥ ५ ॥

योगी मिलन

जावइं आघो जेहवें, सेवक लीधो साथ।
जोग पंथ साधइ जुगति, निरख्यो अउघड़नाथ ॥ ६ ॥

काने मुद्रा कनक की, आसण चींता चर्म।
लगाय विभूति तप जप करें, ते साधें शिव धर्म[1] ॥ ७ ॥

---

१ शर्म

ढाल (४)—सिहरां सिहर मधुपुरी रे, कुमरा नंदकुमार रे एदेशी

राग—कालहरो

सिध साधक योगी भणी रे, जाय कीयो आदेश रे।
वार वार वीनति करी रे, लागो पाय नरेश रे ॥ १ ॥
वाल्हेसर सांमी, मानि नें तु अंतरयामी,
मानि नें शिवगति गामी, वीनतड़ी मुझ मानो वा० ॥ आंकणी ॥
मुझ मनि सिंघलद्वीप नी रे, पदमणि देखण चाह।
तुझ परसादे सहु हस्यें रे, हिव मुझ सी परवाह रे वा० ॥ २ ॥
विविध विनय वचने करी रे, सुप्रसन्न हुओ सांम।
आँखि उघाड़ी देखीयो रे, बोलायो ले नाम रे। वा० ॥ ३ ॥
भूपति मन अचरिज थयो रे, किम जाण्यो मुझनांम।
ए ज्ञानी आयस अछे रे, पूरवस्यें मुझ हांम रे ।वा०।४।
जोगी जंपे राणजी रे, तु आयो मुझ थांन।
कारिज थांरो हुँ करु रे, जो गुरु लागो कान रे ।वा०।५।
ईम कही सांही समरणी रे, हाथे बेऊं असवार रे।
आयस अंबर ऊडीयो रे, लागी बार न लिगार रे ।वा०।६।

सिंहलद्वीप प्रवेश

सिंघलद्वीपे मूकि नें रे, आयस हूअउ अलोप रे।
राजा रो मन रंजीयो रे, देख्यो नगर अनोप रे ॥ वा०।७।

पद्मिनी दर्शन

सोवन महल सोहामणा रे, इन्द्रपुरी अवतार।
रतनजड़ित गोखें भली रे, बैठी राजकुमार रे॥वा०॥८॥
साथें सखी रे झूलरें रे, गज गति चालें गेल।
चतुरां मनड़ो मोहती रे, साची मोहन वेलि रे।वा०॥६॥
थानिक थानिक नव नवा रे, नाटिक निरखें राय।
हय गय हाट पटण घणा रे, जोतां आघा जायरे।वा०॥१०॥

ढंढेरा श्रवण

नगर मध्य आया तिसें रे, ढंढेरा नो ढोल।
राजा वाजा सांभली रे, बोलैं एहवा बोल रे।वा०॥११॥
पटह छवी नइं पूछीयउ रे, ढोल बाजे किण काज।
तब बोल्या चाकर तिके रे, बात सुणो महाराज रे।वा०॥११॥
सिंहलद्वीप नो राजीयो रे, 'सिंघलसिंघ' समान।
तास बहिन पदमणी रे, रूपें रंभ समान रे॥वा०॥१३॥
जोवन लहरयां जाय छे रे, परणें नहिं ते बाल।
परतिज्ञा जे पूरवे रे, तासु ठवें वरमाल रे।वा०॥१४॥
जीपें बांधव नइं जिकोरे, ते परणै भरतार।
तिण कारण मुझ राजीयोरे, पडह दीयो तिण बार रे।वा०॥१५॥
'रतनसेन' राजा कहै रे, हुं जीपूं निरधार।
मल्लाखाड़े रण मुखें रे, रामति कउण प्रकार रे।वा०॥१६॥
राजा मन आणंदीयो रे, रामति जीपें एह।
सुणि पंथी शेत्रुंजनी रे रामति जीपें जेह रे।वा०॥१७॥

वाचा साची आपस्युं रे, आपुं अति सनेह।
अर्द्ध राज भंडार नो रे, भग्नीपति हुइ जेह रे।वा०॥१८॥
राजा मन आणंदियो रे, रामति जीपें एह।
'लब्धोदय' कहैं सदा रे, पुण्य सहाय तेह रे।वा०॥१६॥

क्रीड़ा विजय

दोहा

'रतनसेन' राजा कहें, पूछो सिंघल भूप।
कओल थकी चूके नहिं, कीजें खेल अनूप ॥ १ ॥
सेवक जाइ विनम्यो, हरख्यो सिंघल राय।
बोलावी बहु मानसुं, बइठण दीधौ ताय ॥ २ ॥
रामति रमवा रंग स्युं, बैठा बेऊं आय।
जाणै सूर अनें ससी, मिलीया एकण ठाय ॥ ३ ॥
पासे बैठी पदमणी, कोमल कंचन काय।
राणो रूड़ी विधि रमें, तिम तिम आवैं दाय ॥ ४ ॥
ए छै कोई राजवी, रूपवंत रति राज।
जो जीपें किम ही करी, तू तोठो महाराज ॥ ५ ॥

ढाल (५) ढुंढणीया री मेवाड़ी देशी, मेवाड़ि देशे प्रसिद्धास्ति

रमतां हे सखि रमतां रूड़ी रीत,
रसीयो हे सखि रसियो पदमणि मन वस्यो जी।
जीतो हे सखि जीतो हे राणो जोध,
सिंघल हे सखी सिंघल हार्यो मन उलस्यो जी ॥१॥

दोहा

पान पदारथ सुघड़ नर, अण तोल्या विकाय।
जिम-जिम पर भूयें संचरें, (तिम) तिम मोल मुहुंगा थाय ॥१॥
हंसा ने सरवर घणा, कुसुम घणा भमरांह।
सुगुणा[1] नें सज्जन घणा, देश विदेश गयांह ॥ २ ॥

पद्मिनी विवाह

ढाल तेहिज

रंगे हे सखि रंगे घालै वरमाल,
घालै हे सखि घालै हे जयमुख उचरें जी।
सिंघल हे सखि सिंघल भूप सनेह,
रूड़ी हे सखि रूड़ी हे साहमणि करें जी ।२।
बहिनी हे सखि बहिनी हे पद्मणि विवाह,
कीधो हे सखि कीधो लीधो जस घणो जी।
आधो हे सखि आधो हे देस भंडार,
दीधो हे सखि दीधो कओल सुहामणोजी ।३।
दासी हे सखि दासी हे दोय हजार,
रूपे हे सखि रूपे हे रति रम्भा वणी जी।
हाथी हे सखि हाथी हे हेवर हेम,
परिघल हे सखि परिघल यूँ पहिरावणी जी ।४।
राणी हे सखि राणी हे अति हे सरूप,
एहवी हे सखि एहवी नारि म को अछै जी।

१ सापुरिसां थानिक घणा

भमरा[1] हे सखि भमरा भमइं अनन्त,
नारी हे सखि नारि हे सहु तिण पछैं जी ।५।
परिमल हे सखि परिमल महकै पूर,
वासें हे सखि वासें हे भमरा चमकीया[2] जी ।
माणस हे सखि माणस केही मात[3],
हींसे हे सखि हींसे हे देव तणा हिया जी ।६।
राणो हे सखि राणो हे अति रंढाल,
घरणी हे सखि घरणी मनहरणी वरी जी ।
मननी हे सखि मननी हे पूगी आस,
सफली हे सखि सफली परतंग्या करीजी* ।७।
दिन दिन हे सखि दिन दिन नव नव भोग,
पूरें हे सखि पूरें हे सिंघल सुख सहु जी ।
रलीया हे सखि रलिया दिन नें रात,
रहतां हे सखि रहतां हे दिवस बहू जी ।८।
अवसर हे सखि अवसर हे पामी राय
मांगे हे सखि मांगे घर नी सीखड़ी जी ।
वीनती हे सखि वीनती हे तुम्ह स्युं एह,
मां सुं हे सखी मांसुं हे मति करयो अड़ी जी ।।६।।

---

१ रम्भा हे सखि रम्भा रति इंद्राणी, अपछर हे सखि अपछर पदमणि रइ अछै जी २ वसिकीयाजी ३ मात

* साहसियां लच्छी हुवइ, नहु कायर पुरुषांह
काने कुण्डल रयणमइ, मसि कज्जल नयणांह १ ·

राजा हे सखी राजा हे सिंघल नाम,
राणी हे सखि राणी हे पहुंचावण भणी जी।
साथें हे सखी साथे सैन्य अपार,
आवें हे सखि आवें हे तटि दरिया तणें जी ॥१०॥
पूर्या हे सखी पूख्या हे सच्थल जीहाज,
बैंठा हे सखी बैंठा दोन्यु राजा रंगस्यु जी।
पुहँच्या हे सखी पहुँच्या हे वारिधि पार,
सेना हे सखी सेना हे घणी चतुरंग स्युं जी ॥११॥
तंबू हे सखी तंबू हे दरीया तीर,
खांच्या हे सखि खांच्या हे दल बादल भला जी।
महीमांनी हे सखी महीमांनी हे घणे हेत,
मांडया हे सखी मांड्या हे भोजन भला[1] जी ॥१२॥
मांहो मांहिं हे सखी मांहो मांहि हे रंग,
गाढा हे सखि गाढा सुख दोन्युं सगा जी।
चलीयो हे सखी चलीयो हे सिंघल भूप,
पुंहुंचावी हे सखी पहुंचावी हे दरिया लगे जी ॥१३॥
जाणी हे सखी जाणी हे राणा जाति,
हरख्यो हे सखी हरख्यो हे सिंघलपति सही जी।
सीधा हे सखि सीधा हे वंछित काज,
पद्मणी हे सखि पद्मणी हे मन में गहगही जी ॥१४॥

---

१ मटकलाकी

पुण्यें हे सखी पून्ये हे सघला सुख,
रन[1] मइं हे सखि रन में हे रंग लीला लहै जी।
पांमें हे सखी पामें हे नव निधि सुख,
मुनिवर हे सखी मुनिवर हे लब्धोदय कहै जी ॥१५॥

परवर्त्ती चित्तौड़ प्रसंग

दोहा

बात सुणो हिव पाछली, राजा नी मन रंग।
छानो छटक्यो भूपती, कोई न लीधो संग ॥ १ ॥
राजा विण सोभे नहीं, राज सभा ने रात।
सोफो गढ सारैं कीयो, पिण नवी[2] जाणी बात ॥ २ ॥
जाय पूछ्यो महल में, राणी भाख्यो साच।
पदमणि परणेवा सही, चाल्यो पालण वाच ॥ ३ ॥
सभा मांहि बैठो सकज, वीरभाण बड़ वीर।
कूड़ी बातज केलवी, पालें राज सधीर ॥ ४ ॥
लोकां आगें इम कहै, मांहि बैठा जाप।
जपें प्रथवीपति जेहथी, पहवी वधइं प्रताप ॥ ५ ॥

ढाल ६—ता भव बंधण थी छोड़ि हो नेमीसर जी, ए देसी

इम पालता राज हो राजेसर जी,
वउल्या षट खंड मास उपर वलि दिन घणा ॥
संकाणा मन मांहि हो राजेसर जी,
सहु कोई सेवक राणा तणा जी ॥ १ ॥

---

१ रन्नइ हे सखि रन्नइ वेलाउल लहैजी २ नवि लाधी बात

बाहिर नव-नव खेल हो रा० राति दिवस करतो रहतो खड़ो जी।
मुंहल मूल न देइ हो रा० मास्यो होइ रखे राजा बड़ो जी ॥२॥

चित्तौड़ आगमन

करता एहवी बात हो रा० राजा आयो रतन सुहामणो जी।
हैंवर दोय[1] हजार हा रा० गैंवर दोय सहस गाजे घणा जी ॥३॥
पालखी परधान हो रा० दोय हजार सहेली सुंदरी जी।
पटराणी ता बीच हो रा० सोवन कलसे पालखी करी जी ॥४॥
मदमाता मातंग हो रा० हींसे हय पायक बल अति घणाजी।
आया ते चित्रकोट हो रा० शूरा पूरा सुभट सुहामणा जी ॥५॥
नेजा कुहक बाण हो रा० बाजे बाजा पंच शबद भला जी।
सूणीय नासें शत्रु हो रा० रजि ऊडी रवि छायो बादला जी ॥६॥
परदल आया जाणि हो रा० कोलाहल हलचल हुई अति घणीजी।
चित चमक्यो वीरभाण हो रा० धाया शूर सुभट
जूभण भणी जी ॥७॥
तेहवें नृप नउ दूत हो रा० कागल लेई राजमहलें गयो जी।
वांची सगली बात हो राजेसर जी
गढपति आयो गढ आणंद थयो जी ॥८॥

चित्तौड़ प्रवेशोत्सव

बोलावी कोटवाल हो रा० बूहारी[2] जल छांट्या वली जी।
फूल अबीर बिछाय हो रा०सिणगाख्या बाजार हो सोभाभलीजी॥६॥

---

१ चार २ बुहारीं जल छंटाव्या गली जी

तोरण बांध्या बार हो रा० पोलि आरीसा सूरीज जलहलें जी।
बाजे गुहीर नीसाण हो रा० घरि-घरि ऊँची गूढी ऊछलेजी ॥१०॥

सोवन साखित सार हो रा० मूलमती चाले आगे हीसता जी।
सीसें तेल सिंदुर हो रा० गयवर जाणे परबत दीसताजी ॥११॥

सूहव करि सिणगार हो रा० पूरण कलस ले आवे कामनी जी।
मलपति गावै गीत हो रा०
धन दिवस आयो अम्ह गढ़ धणी जी ॥१२॥

सोवन चउक पुराय हो राजेसरजी,
मोतीयां वधावे राय राणी भणी जी।
जीवो कोड़ि बरीस हो राजेसर जी,
गज गामनि असीस दीइ[1] घणी[2] जी ॥१३॥

पाए लागे दोड़ि हो रा० कुमर सकल सेवक साथें करी जी।
बात करें कुसलात हो रा० राजा प्रजा सगली राज रीजी ॥१४॥

गज चढ़े ढलकती ढाल हो रा० पाउ पधाख्या राजा गढ ऊपरेंजी।
जग हूवो जसवास हो राजेसर जी,
धन राजा राणी जगि उचरैं जी ॥ १५ ॥

छठी ढाल रसाल हो रा० सामहेलें घरि आयो राजियो जी।
'ज्ञानराज' गणि सीस हो राजेसर जी,
मुनि 'लालचंद' कहै हरख्यो हीयो जी ॥ १६ ॥

दोहा

राणौ आयो रतनसी, लोक सहू आणंद।
महिलां पउधारै तरै, मेट्यौ सगलौ दंद ॥ १ ॥
जाइ मिलिया परभावती, म्हे पाली बोली वाच।
अब थां सुं ऊरण हुया, पदमणी आणी साच ॥ २ ॥

ढाल (७) रागधन्यासी, १ जाइरे जीयरा निकसि कै एहनी देसी,
२ बात म काढो व्रत तणी ए देशी

मोटा महेंल मनोहरू, पदमणी वासा जोगो रे।
विचरै साथ सहेलीयां, भोगवती सुख भोगो रे ॥
मोटा महल मनोहरु ।आंकणी।
रतनसेन राणो गयो, पटराणी ने पासै रे।
परणे आया पदमणी, हिवै दीज्यो सबासो रे ॥२॥मो०॥
वचन तुम्हारो मैं कियो, अमनें केहो दोसो रे।
स्वाद करी जीमस्यां हिवै, करस्यां केहो[१] सोसो रे ॥३॥मो०॥
वचन सुणी दीवाण ना, वीलखी हुई ते नारी रे।
परभावती मन चिंतवै, हिवें कीज्यै किसुं विचारो रे ॥४॥मो०॥
में मारैं हाथें कियो, केहो कीजे सोसो रे।
दोस जिको मुझ वचन नो, कीजे किणसुं रोसोरे ॥५॥ मो०॥†

१ कायापोसोरे

† आत्मानो मुख दोषेन, बध्यन्ते शुक सारिका। बकास तत्र न बध्यंते, मौनं सर्वार्थ साधनः

प्रथम खंड प्रशस्ति

गिरुओ गच्छ खरतरतणो, जाणें सकल जीहानों रे।
गच्छनायक लायक बड़ों, जंगम युगिपरधानो रे ॥६॥मो०॥
श्री जिनरंगसूरीसरु, तसु श्राविक सिरताजो रे।
कुल मंडण कटारीया, मंत्रीसर हंसराजो रे ॥७॥मो०॥
जेहनो जस जगि महमहें, करणी सुकृत कुबेरो रे।
परम भगति गुरुदेव रा, बड़ दाता मन मेरो रे ॥८॥मो०॥
भाई डुंगरसी भलो, लघु बंधव गुण वृंदो रे।
दुखियां दलिद्र भंजणो, भागचंद कुलचंदो रे ॥९॥मो०॥
तास तणो आदर करी, संबंध रच्यो सिरताजो रे।
पाठक ज्ञानसमुद्र तणा, शिष्य मुख्य ज्ञानराजो रे ॥१०॥मो०॥
सुपसाइं श्री गुरु तणै, 'लब्धोदय' गणि भाखै रे।
प्रथम खंड पूरौ कियो, धरम तणै अभिलाषै रें ॥११॥मो०॥

*इति श्री राणा श्रीरतनसिंह पदमणी परणी पनोता प्रथम खण्ड ॥१॥*१

१ इति श्री पद्मिनी चरित्रे ढाल भाषा बंध श्रीज्ञानराजगणिराजानां शिष्यमुख्य पंडित लब्धोदय गणि विरचित कटारिया गोत्रीय मंत्रीश्रीहंसराज मंत्री श्रीभागचंदानुरोधेन राणा श्री रतनसिंह पदमणी परणवनो नाम प्रथम खंड ॥१॥

द्वितीय खण्ड

मंगलाचरण

वाणी निर्मल विस्तरै, नव खंडेहि नाम।
तिण हेतें श्री गुरुभणी, प्रथम करूं प्रणाम ॥१॥
सुगण सुणेज्यो श्रुतिधरी, परहो तजो प्रमाद।
बीजें खंड वखाणतां, सुणतां उपजै स्वाद ॥२॥

पद्मिनी सौंदर्य वर्णन

ढाल १ बागलीया री

राति दिवस भीनो रहै रे, पद्मणि स्युं बहु प्रेम रे रंग रसीया।
पंच विषय सुख भोगवै रे, दोगंधक सुर जेम रे रंग रसीया ॥१॥
राय राणी मन बसिया, अविहड़
जिम जोड़ी रसिया, जिम कंचन रस रसीया।
जिम जोड़ी सारसीयां रे, अविहड़ लागी प्रीत रे रंग रसीया।आ०।
जीव एक नइं जूजूई रे, देही दीसें दोइ रे रंग०।
चित लागो चतुरां तणो रे, चोल तणी परि जोइ रे रंग० ॥२॥

चंदवदन ऊपरि घटा रे, सोहैं वेणीदण्ड रे रंग०।
(अथ) मृगानयणी ऊपरइ रे, बांध्यो जाल प्रचण्ड रे रंग० ॥३॥
ताटी मरकत मणि तणी रे, अथवा जाणि भुजंग रे रंग०
घाटी मन घेरण तणी रे, पाटि वणीय सुचंग रे रंग० ॥४॥
सैंधो सिंदूरइ भर्यो रे, जाणे रविकर एक रे रंग०।
कब[1] तम पामो एकली रे, बाधी सब धरि टेक रे रंग० ॥५॥
सीसफूल तारा भला रे, अरधचंद सम भाग रे रग०।
विंदी जाणे मणि धरी रे, पीवत अमृत नाग रे रंग० ॥६॥
श्रवण किना सोवन तणी रे सीप सुघट मन फंद रे रंग०।
कुंडल रे मिसि देखवा रे, आया सूरज चंद रे रंग० ॥७॥
अणियाले काजल भरी रे, निपट रसीले नयण रे रंग०।
चंचल चतुरां चित हरइ रे, देखत उपजै चैन रे रंग० ॥८॥
नयण कमल ऊपरि वण्या रे, भूंहा भमर समान रे रंग०।
दीपशिखा सम नासिका रे, देखण रूप निधान रे रंग० ॥९॥
नासा शुक सोवन तणी रे, बेसर मोती जेह रे रंग०।
आंब[2] सोवट द्यै चंच में रे, विधु बालक सस्नेह रे रंग० ॥१०॥
काया सोवन तसु तणी[3] रे, गोरा गाल रसाल रे रंग।
आरीसा कंदर्प तणा[4] रे, चंद[5] सरीसो भाल रे रंग० ॥११॥
पाका बिंब मधु समा रे, ओपित विद्रुम जाण रे रंग०।
मामोल्या जिम रातड़ा रे, अधर सुधारस खाण रे रंग० ॥१२॥

१ कंचि २ अंब मउर ३ ताया सोवन तबक सा ४ नो ५ कुंकम जेवा लाल रे०

(जाणें) मोती लड़ पोई धरया रे, अधर विद्रम विचि दंत रे रंग०।
चमकै चूनी सारिखा रे, दाड़िम कूलीय दीपंत रे रंग० ॥ १३ ॥
कोकिल कंठ सुहामणो रे, पति भुज वल्ली खम्भ रे रंग०।
मोतिन की दुलड़ी वणी रे, त्रिवली रेख अचंभ रे रंग० ॥ १४ ॥
भुजादण्ड सोवन घड्या रे, कोमल कलस[1] सुनालि रे रंग०।
मृगफली चम्पा कली रे आंगुलियां सुविशाल रे रंग० ॥ १५ ॥
कनक कुंभ श्रीफल जिसा रे, कुच तटि कठिन कठोर रे रंग०।
पाका वील नारिंग सा रे, मानुं युगल चकोर रे रंग० ॥ १६ ॥
कोमल कमल ऊपरें रे, त्रिवली समर सोपान रे रंग०।
कटि तटि अति सूछिम कही रे, थूल[2] नितंब वखाण रे रंग० ॥१७॥
जंघा सुंडा करि वणी रे, उलटा कदली खंभ रे रंग०।
सोवन कच्छप सारिखा रे, चरण हरण मन दंभ रे रंग० ॥१८॥
सकल रूप पदमणि तणो रे, कहत न आवै पार रे रंग०।
'लब्धोदय' कहै आठमी रे, ढाल रसिक सुखकार रे रंग० ॥१६॥

दोहा

हंस गमणि हेजइं हीइं, राति दिवस सुख संग।
राणो लीण हुओ तुरत, जिम चन्दन तरुहि भुजंग ॥ १ ॥
दूहा गूढ़ा गीत स्युं, कवित कथा बहु भांति।
रीझवियो राणो चतुर, क्रीड़ा केलि करंति ॥ २ ॥

१—कमलसुनाल २ प्रथुल

राघव चेतन का दरबार प्रवेश

इम रहतां सुख सुं सदा, जे हूओ छै विरतंत।
सुणयो चित्त देइ[1] सुगण, मन थिर[2] करी एकंत ॥ ३ ॥
राघव चेतन दोइ वसे, चित्रकूट में व्यास।
राति दिवस विद्या तणो, अधिको अछे अभ्यास ॥ ४ ॥
राजा मान दियो घणो, भारथ वांचे आय।
राज लोक में रात दिन, महल अमहलें जाय ॥ ५ ॥

राघव चेतन पर कोप

ढाल (२) राग—गौड़ी, मन भमरा रे० ए देसी,

एकणि दिन पदमणि तणै मन रंगें रे,
संगइं बैठो राय लाल मन रंगेंरे।
क्रीड़ा आलिंगन करें मन रंगें रे, तेहवें व्यासजी जाय लाल० ॥१॥
राघव ऊपरि कोपीयो मन०, मूंह चढ़ाई राय लाल मन रंगें रे।
होठ बेहुं फुर फुर करइ मन०, किम आयो अण प्रस्ताव लाल० ॥२॥
फिट रे पापी बंभणा मन रंगें रे, मूरिख जट्ट गमार लाल मन रंगेंरे।
फिट रे थोथा[3] पंडीया मन रंगें रे,
मूल[4] न समझै गमार लाल मन रंगें रे ॥ ३ ॥
अणरुचती वातां करै म० अणतेड्यो आवें गेह लाल०
बोलै अणबोलावीयो म० साचो मूरिख तेह लाल० ॥४॥

---

१ कान २ तन ३ पोथा ४ साचउ मूरिखि विचार।

आपही बात कहीं इसें म० बेसणो आप ही लेह लाल०
बिहु आलोच करतां विचै म० जावै चतुर न तेह लाल० ॥५॥
गेंरमहेंल नृप मंदिरें म० एकंते नर नारि लाल०
लाज समें जावइं जिको म० ते मूरिख निरधार लाल० ॥६॥
निभ्रँछयो राघव भणी म० काढ्यो हाथ ज साहि लाल०
जातां भुँइ भारी पड़ी म० पहुतो निज घर मांहि लाल० ॥७॥
राजा रूठो इम कहें म० पदमणी देखी व्यास लाल०
आँखि कढावुं एहनी म० तो मुझ ने स्याबास लाल० ॥८॥
बात सुणी राजा तणी म० एम विचारै व्यास लाल०
राजा मित्र न जांणीइ म० सिंह किसो वेसास लाल० ॥६॥

काके सौचं, द्यूतकारेषु सत्यं ज्ञाने भ्रांतिः स्त्रीषु कामोपशांति
क्लीवेधैर्यं मद्यपे तत्वचिन्ता, राजा मित्रो केन दृष्टं श्रुतं वा ।१

अत्यासन्न विनासाय दूरस्था निष्फला भवेत् ।
सेव्यता मध्यम भावेन राजा वन्हि गुरुस्त्रियः

राजा री रीस भली नहीं म० चितचमक्यो राघव व्यास लाल०
न हुवे दोन्युं वातड़ी म० एक वैर नें वास लाल० ॥१०॥
आलोचे मन आपणे म० छोड्यो गढ चीतोड़ लाल०
द्रव्य देई नई नीकल्या म० राघव चेतन जोड़ लाल० ॥११॥

त्यजेदेकं कुलस्यर्थे, ग्रामार्थे च कुलंत्यजेत् ।
ग्रामं जनपदस्यार्थे, आत्मार्थेपृथिवी त्यजेत्

राघव चेतन दिल्ली गमन

१ दिन थोड़े दिल्ली गयो म० नगर हुओ जस नाम लाल०
योतिष जाणै अति घणो मन०
विविध विद्या गुण धाम लाल० ॥१२॥
शास्त्र अनेक वांचै भणै म० नव रस पोषइं नित लाल०
सौ सौ अरथ नवा करै म० चतुरां मोहै चित्त लाल० ॥१३॥
बल पूरो विद्या तणो म० तेहनें स्यो परदेश लाल०
'लालचन्द' कहै सांभलो म० विद्या मान नरेश लाल० ॥१४॥

शाही दरबार प्रवेश

दोहा

सद्विद्या धन सासतो, विद्या रूप सुहाग।
मान महातम[1] जस अधिक, विद्या मोटो भाग ॥१॥
पातिस्याह दिल्ली तदा, जास अखंडित आण।
अविचल तेज अलावदी, प्रतपो बारह भाण ॥२॥
एक छत्र महि भोगवैं, जस नव खंडे हि नाम।
सुर नरपति जाथें डरै, सेवकहि करै सिलाम ॥३॥
सेना सतावीस लख, भंजै अरि भड़वाह।
तिण सुणीया बांभण गुणी, तेड़ायो धरि चाह ॥४॥
श्लोक कबित अभिनव करी, आया आणंद पूर।
आदर सुं आसीस द्यै, हजरति साहि हजूर ॥५॥

---

१ महतजस भोग सुख

ढाल (३) अलबेल्या नो। कहिनइ किंहाथो आविया रे लाल ए चाल०

श्लोक कवित्त कथा करीरे लाल, रीझ्यो निपट[1] पतिसाहि रे सो०।
सकल लोक धन-धन कहे रे लाल, विद्यावंत अथाह रे सो० ॥१॥
चतुर पंडित ब्राह्मण गुणनिलो[2] रे लाल। आंकणी
पातिसाहि दिल्ली तणो रे लाल, द्यै नित मोज अनेक रे सोभागी
गांम पांचसै अति भला रे लाल,
मनमइं धरीय विवेक रे सोभागी ॥२॥च०॥
इम रहतां आणंद स्यु रे लाल, दिल्लीपति रै पास रे सोभागी।
एक दिन राणा जी दीयो रे लाल,
तेह वैर चितारें व्यास रे सोभागी ॥३॥च०॥

राघव चेतन का प्रतिशोध षड़यन्त्र

वयर वालूं हिवें माहरो रे लाल, छुड़ायो गढ गेहरे सो०
तो काढूं चित्रकूट थी रे लाल, अपहरी पदमणी तेहरे सो० ४
सैंमुखी काम न कीजिइं रे लाल, जे पर पूठें थायरे सो०
आलोची मन आपणै रे लाल, मांड्यो एह उपाय रे सो० ॥५॥
भाईपणो एक भाट स्युं रे लाल, खोजा स्युं मन खंति रे सो०
मान दान देई घणो रे लाल, मित्र कीयो एकंति रे सो० ॥६॥
साहि तणै दरबार में रे लाल, पदमणि केरी बात रे सो०
जिण तिण भांति काढ़्यो रे लाल, मुझ मन एह सुहात रे सो० ॥७॥

1—मानि २ गुणी

एक दिन कोमल पांखड़ी रे लाल, भाट लेइ निज हाथ रे सो०
आवी सभा में बीनवै रे लाल, चिरंजीवो नरनाथ रे सो० ॥८॥

अथ भाट वाक्यं

॥ कवित्त ॥

एक छत्र जिण पुहवी, निश्चल कीधी धर उप्पर।
आणं कित्ति नव खंड, अदल कीधी दुनीय प्पर ॥
नल वीनल विध्भाड़ि, उदधि कर पाउ पखालिय।
अंतेउर रति रंभ, रूप रंभा सुर टालीय ॥
हेतम दान कवि मल्ल कहि, अमर धुन्नि बे वखत गनि।
दीठो न कोइ रवि चक्क लगि, अलावदी सुलतान विणि ।१।

ढाल तेहिज

पातिसाह अलांवदी रे लाल, देखी अनोपम तेहरे सोभागी
साहि बूझ्यो तेरे हाथ में रे लाल, भाट कह्रो क्या एहरे सो० ९
राजहंस[1] पंखी रहें रे लाल, मान सरोवर मांहि रे सो०।
तिण पंखी नी पांखड़ी रे लाल, ते देखी पतिसाहि रे सो० १०
मोज देई में नें इम कहें रे लाल, वाह वाह बे वाह रे सो०।
कहुँ बे ऐसी अउर भी रे, चीज देखी कहिनाह रे सो०॥११॥च०॥

पद्मिनी स्त्री के प्रति आकर्षण

ता परि भाट कहै सुणो रे लाल,
सब गुण पदमणि मांहि रे सो०।

१ कर सलाम भट विनवई रे लाल सुण दिल्ली पति साह रे सो०

उआ की ओपम नें द्युं रे लाल,
अउर ऐमी कोई नाहिं रे सो० ॥ १२ ॥ च०॥
अदभुत जाणे अपछरा रे लाल,
अति सुन्दर सुकमाल रे सो०।
पतली कणयर कंबसी रे लाल,
पदमणि रूप रसाल रे सो० ॥१३॥च०॥
दीलीसर कहै भाट स्युं रे लाल,
ऐसी पदमणि नारि रे सो०।
तैं कहां ही देखी सुणी रे लाल,
कहि तुं साच विचारि रे सो० ॥१४॥च०॥
भाट कहै तुम महेंल में रे लाल,
नारी एक हजार रे सो०।
तामैं पदमणि सही होसी रे लाल,
दोय चारि निरधार रे सो० ॥१५॥ च०॥
दूजी ठाम न सांभली रे लाल,
कैसी कहिइं झूठ रे सो०।
इम निसुणी खोजो कहै रे लाल,
आसंग मन धरि दृढ रे सो० ॥१६॥च०॥
वात फरोसतइं क्या कहै रे लाल,
बांभण साहि हजूर रे। सो०।
कहाँ वे सुरनर मोहनी रे लाल,
पदमणि पुण्य पडूर रे सो० ॥१८॥ च०॥

रावण घरि पदमणि सुणी रे लाल,
अउर नहिं संसार रे सो०।
साहि घरे सब संखिणी रे लाल,
क्या[1] कहिइ अविचार रे सो० ॥१८॥ च०॥
मांहोमांहि संकेत म्यु रे लाल,
भाट[2] खोजें कियो वाद रे सो।०
'लालचंद' मुनिवर कहै रे लाल,
सुणतां उपजै स्वाद रे सो० ॥१६॥ च० ॥

दोहा

हसि के साहि कहै इसो, क्यु बे खोजा खूब।
हम महले सब संखणी, नहिं पदमणि महबूब ॥ १ ॥

तापरि खोजो वीनमें, बूझो राघव व्यास।
सब लक्षण गुण पदमणि[3] के, जाणे शास्त्र अभ्यास ॥ २ ॥

साहि कह्यो राघव भणी, स्त्री के केती जाति।
कैसा लक्षण पदमणी, साच कहो ए बात ॥ ३ ॥

सुविचारी राघव कहै, स्त्री की चारु जाति।
पदमणी[1] चित्रणी[2] हस्तणी[3] संखणी[4] अैसी भांति ॥४॥

१ साहि हस्यो तिण वार रे सो० २ बांमण ३ नारि का

पद्मिनी आदि स्त्री के लक्षण

॥ कवित्त ॥

रूपवंत रति रंभ, कमल जिम काया कोमल
परिमल पहोप सुगंध, भमर भर्म[1] बहुपरिकरे उत्पल
चंपकली जिम रंग, चंग गति गयंद समाणी
शशि वदनी सुकमाल, मधुर मुख जंपे वाणी
चंचल चपल चकोर जिम, नयण कांति सौहे घणी।
कहै राघव सुलतान सुणि, पद्दोवी हुवे[2] अइसी पदमणी ॥ १ ॥

कुच युग कठिन सरूप, रूप अति रूड़ी रामा।
हस्त वदन हित हेज, सेज नितु रमें सुकामा
रूसै तूसै रंग, संगि सुख अधिक उपावै
राग रंग छतीस, गीत गुण ज्ञान सुणावै।
स्नान मज्जन तंबोल स्युं, रहइ अहोनिशि रागणी
कहे राघव सुलतान सुणि, पद्दोवी हुइइसी पदमणी ॥ २ ॥
बीज जेम झलकंत, कांति कुंदण जिम सोहै।
सुर नर गण गंधर्व, रूप त्रिभुवन मन मोहै॥
त्रिवली तन वेउ लंक, वंक नहु वयण पयंपइ
पति सुं प्रेम अपार, अवर सुं जीह न जंपइ
स्वामी भगति ससनेहली, अति सुकुमाल सुहावणी।
कहै राघव सुलतान सुंणि, पहोवी हुइ इसी पदमणी ॥ ३ ॥

१ बहु मर्म बलाबल २ इसी हुई

धवल कुसुम सिणगार, धवल बहु वस्त्र सुहावै
मोताहल मणि रयण, हार हीइ[1] ऊपरि भावै
अलप भूख त्रिस अलप, नयण लहु नींद न आवै
आसण रंग सुरंग, जुगति सु काम जगावै
भगति जुगति भरतार री रहै अहोनिश रागणी
कहै राघव सुलतान सुणि, पहोवी हुवै इसी पमदणी ॥ ४ ॥

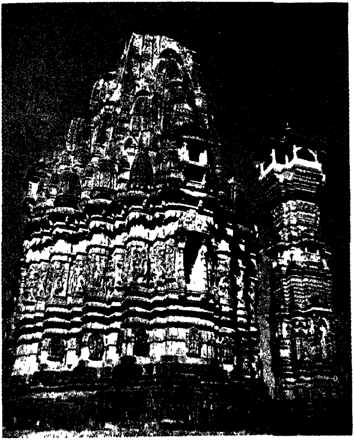
श्लोक

पद्मिनी पद्म गन्धा च पुष्प गन्धा च चित्रणी
हस्तनी मच्छ गन्धा च दुर्गन्धा[2]भवेत्संखणी ॥ १ ॥
पद्मिनी. स्वामिभक्ता च पुत्रभक्ता च चित्रणी।
हस्तिनी मातृभक्ता च आत्मभक्ता च संखणी ॥ २ ॥
पद्मिनी करलकेशा च लम्बकेशा च चित्रणी।
हस्तिनी उर्द्धकेशा च लठरकेशा च संखिणी ॥ ३ ॥
पद्मिनी चन्द्रवदना च सूर्यवदना च चित्रणी।
हस्तिनी पद्मवदना च शूकरवदना[3] च संखणी ॥ ४ ॥
पद्मिनी हंसवाणी च कोकिलावाणी च चित्रणी।
हस्तिनी काकवाणी च गर्दभवाणी च संखणी ॥ ५ ॥
पद्मिनी पावाहारा च द्विपावाहारा च चित्रणी।
त्रिपादा हारा हस्तिनी ॠया परं हारा च संखणी ॥ ६ ॥
चतु वर्षे प्रसूति पद्मन्या त्रय वर्षाश्च चित्रणी।
द्वि वर्षा हस्तनी प्रसूतं प्रति वर्षं च संखिनी ॥ ७ ॥

---

१ हृदयस्थल २ क्षीरगन्धा ३ काक

पद्मिनी चरित्र चौपई—



जैन मन्दिर व कीर्त्तिस्तंभ
[फोटो—सार्वजनिक संपर्क विभाग-राजस्थान]

पद्मिनी श्वेत शृंगारा, रक्त शृंगारा चित्रणी।
हस्तिनी नील शृंगारा, कृष्ण शृंगारा च संखणी ॥८॥

पद्मिनी पान राचन्ति, वित्त राचंति चित्रणी।
हस्तिनी दान राचन्ति, कलह राचंति संखिणी ॥६॥

पद्मिनी प्रहर निद्रा च, द्वि प्रहर निद्रा च चित्रणी।
हस्तिनी त्रय प्रहर निद्रा च, अघोर निद्रा च संखिणी ॥१०॥

चक्रस्थन्यो च पद्मिन्या, समस्थनी च चित्रणी।
उर्द्धस्थनी च हस्तिन्या, दीर्घस्थनी संखिणी ॥११॥

पद्मिनी हारदन्ता च, समदन्ता च चित्रणी।
हस्तिनी दीर्घदन्ता च, वक्रदन्ता च संखणी ॥१२॥

पद्मिनी मुख सौरभ्यं, उर सौरभ्यं चित्रणी।
हस्तिनी कटि सौरभ्यं, नास्ति गंधा च संखणी ॥१३॥

पद्मिनी पान राचन्ति, फल राचन्ति चित्रणी।
हस्तिनी मिष्ट राचन्ति, अन्न राचन्ति संखिणी ॥१४॥

पद्मिनी प्रेम वांछन्ति, मान वांछन्ति चित्रणी।
हस्तिनी दान वांछन्ति, कलह वांछन्ति संखिणी ॥१५॥

महापुण्येन पद्मिन्या, मध्यम पुण्येन चित्रणी।
हस्तिनी च क्रियालोपे, अघोर पापेन संखिणी ॥१६॥

पद्मिनी सिंघलद्वीपे च, दक्षिण देशे च चित्रणी।
हस्तिनी मध्यदेशे च, मरुधरायां च संखिणी ॥१७॥

अन्तः पुर की बेगमों में पद्मिनी गवेषणा

ढाल (४)

रागमारू, वाल्हाते विदेशी लागइं वालहो रे[१] ए गीतनी देशी—
इण परि पद्मिणी रा गुण सांभली रे, हरख्यो मन सुलतान ।
हम महेलैं पद्मणी केते अछैरे, परखो व्यास सुजाण ॥१॥ इण०॥
सुन्दर सहेली पद्मणी मन बसी रे ॥ आंकणी ॥
व्यास कहै आलिम साहिब सुणो रे, किम निरखुं तुम नारि ।
निरख्यां विगर न जाणु पद्मणी रे, कीजे कवण विचार॥२॥ सु०॥
तब दिल्लीपति महेल करावियो रे, मणिमय एक अनूप ।
व्यास बुलाय कहे पद्मणी रे, निरभया देखी स रूप ॥३॥ सुं०॥
सकल नारि प्रतिबिंब निरखियो रे, बैठी मणगृह मांहि ।
देखी हरम हस्तनी चित्रणी रे, यामें पद्मणी नांहि ॥४॥ सुं०॥
व्यास कहै सुर नर मन मोहनी रे, अद्भुत रूप अनेक ।
है चित्तहरणी तुरणी महल में रे, पिण नहीं पद्मणी एक॥५॥सुं०॥

पद्मिणी के लिए सिंहलद्वीप पर चढ़ाई

एह बात सुणी आलिमपति कहै रे, क्या मेरा अवतार[२] ।
कैसी पतिसाही विण पद्मणी रे, अउरति अउर असार ॥६॥सुं०॥
(विण) पद्मणी सेजे पोढुं नहीं रे, हेजे न करूं रे संग ।
पद्मणी ऊपरि कीजे उवारणा रे, राज रमणी सर्वंग ॥७॥ सुं०॥
मनड़ो लागो मारु भुरट ज्युं रे; पद्मणी परणवा चाह ।
व्यास बतावो चावी पद्मणी रे, इम बोले पतिसाह ॥८॥ सुं०॥

१ वालउं रे सवायउ वैर हुं माहरौ २ अमवार ।

सिंहलदीप अछै दक्षिण दिसइजी, आडो समुद्र अथाग।
व्यास कहै पद्मिणी ठावी तिहाजी, पिण महा दुर्घट माग ॥६॥
साहि कहै मुझ आगे व्यासजी, दरीया है कुण भात।
मुझ देखे सुरनर सहुको डरेरे, मोखुं सायर सात ॥१०॥ सुं०॥
तुरत चढ़ाई सिंहलदीप ने रे, कीधी दिल्लीनाथ।
धुं धुं धुं नीसाण घुरे भलाजी, शूर सुभट ले साथ ॥११॥सुं०॥
मोले सहस मेंगल मदझरता भला रे, जाणे घन गज्जंति।
लाख सतावीस हेंवर हींसतारे, चचल गति चालंति ॥१२॥ सु०॥
च्यार चक राजन संसय पड़्या रे, धर हर धूजेरे सेस।
रज ऊड़ीरे गयणे रवि ढांकियोरे, सक्यो मनहि सुरेस॥१३॥सुं०॥
इलगारें करि करी उलंघी मही रे, आया दरीया तीर।
रिण रंढाला मरदाना बली[1] रे, साथे बहु सूर नै वीर॥१४॥सुं०॥
देख्यो दरियो भरियो जल घणेजी, तब बोले नरनाथ।
वारिधि पूरो हल वीहला हुइ रे, मुंछा घाले हाथ ॥१५॥ सुं०॥
दल बादल डेरा ऊभा किया रे, ऊतरीयो सुलतान।
सिंहलदेश दुहाई फेरि के रे, पकड़ो सिंघल राण॥१६॥ सुं०॥
'लालचंद' कहै साहि अलावदी रे, बोलाया बड़ वीर।
सझ हुई[2] सिंहलद्वीप नै ते, जे मरदाना वीर ॥१७॥ सुं०॥

दुहा

हुकम लही आया वही, जिहा सायर गम्भीर।
जल सुं जोर न कोई चलें, बूडण लागा मीर ॥१॥

१ बड़ा, २ करि।

सायर ऊपरि हठ[1] कीयो, आलिम साहि अपार।
प्रवहण नवा घड़ावि ने, चोळ्या[2] बहु जूझार॥२॥
साहि कहै सुभटां भणी, आ वेला छें आज।
लड़ी भड़ी गढ भेलिज्यो, पकड़ज्यो सिंघलराय॥३॥
लाख लाख मोजां दीइं,[3] चलीइ[4] बकारें स्वामि।
कहें तदि पाछो कुण रहै, सूर सुभट रे नाम॥४॥
बैठा ते दरीया बिचै, जेहवें आघो जाय।
आय पड़्या भमरऱ्या बिचइ, बाजै सबलो वाय॥५॥

ढाल (५)—

राग-मल्हार सहर भलो पिण साकडो रे नगर भलो पण दूर, ए देशी।

तेहवे दरीयो उछल्यो रे, भागी बेड़ी भटाक मेरे साजना।
फिरी आदइ आलिम भणी रे, बूड़ें तेह कटक। मेरे साजना॥१॥
जल सु जोर न को चलै रे, सुभट रह्या जल मांहि मेरे०
पदमणी परही जाणि द्यो रे, छोडो केडो साहि मेरे०॥२॥
आलिमपति इणि परि कहै रे, मैं नवि छोड़ं केड़ि मेरे०
मो आगें दरीयो रहे रे, अब नांखुगो उथेड़ि मेरे०॥३॥
वरस रहुँ पदमणी वरु रे, पकडु सिंघलराय मेरे०
बीजा सुभट बुलाइये रे, मुंआ ति गइअ बलाय मेरे०॥४॥
सुभट मन में संकीया रे, फोकट दरीया मांहि मेरे०
काम बिना किम दीजिइं, रे, साहि विचारत नांहि मेरे०॥५॥

१ कोपियौ, २ चाल्या, ३ लहइ, ४ बलि बपुकारे।

आलिम अमरस मनि घणो रे,पिण दरीयो भरपूर मेरे०
खाणो पीणो परिहर्यो रे, बैठो चिंता पूर मेरे० ॥ ६ ॥
चिंता निद्रा परिहरइ रे, चिंता ले जाइ दुक्ख मेरे० ।
चिंता अहनिशि तन दहइ, चिन्ता फेड़इ भुक्ख मेरे० ॥ ७ ॥
चिंता चिता समाख्याता चितातो चिन्ताधिका ।
चिता दहति निर्जीवं चिन्ता जीवंतप्यहो ॥
साहि कहे तेहनें घणो रे, द्युंगा देश भंडार मेरे०
दरीयो खोदि मारग[1] करइ रे, जावइ वारिधि पार मेरे० ॥८॥
लालचिया निरधार[2] तिहां रे, मांनि हुकम तिहां जाय मेरे०
देखि दरीयो इम कहै रे, खोदे कुंण खुदाय मेरे० ॥ ६ ॥
जे सिंहल पहुँचै जाइ रे, ते पावइ लाख तुरंग मेरे० ।
ते दूणौ पावइ पटउ रे, जे भेलइ सास दुरंग मेरे० ॥ १० ॥
जे मारें सिंघल धणी रे, तिगुणो तास पसाय मेरे०
जे आणें पदमणी भणी रे, ते सब गढ़नो राय मेरे० ॥ ११ ॥
इम लालच देखाडीयो रे, तो पिण न वहै इम मन मेरे०
नव लख सुभट सर्फि थया रे, मानि नहि[3] साहि वचन मेरे ॥१२॥
दो तड़ बाघ तणउ बण्यउरे, लसकरिया ने न्याय मेरे०
इक दिस डर पतिसाह रउ, बीजे नांखे समुद्र बहाय मेरे० ॥१३॥
सुभटां ध्यास बोलाइयो रे, आलिम सुं इकान्त मेरे०
पापी ध्यास कुमतो कीयो रे, मांड्यौं सुभटा अन्त मेरे० ॥१४॥

१ पाथर २ निरधन घणा ३ मानना

दूहा

वचन विमासी बोलियइ, ए पंडित नो न्याय।
अविमासी कारिज करइ, ते नर मूरख राय ॥१५॥
स्त्री बालक पुहोवीधणी रे, ए तिहुँ एक सभाव। मेरे०
रढ नवि छांडै आपणी रे, भावें तो घर जाय। मेरे० ॥१६॥
आवी अनाथ जाणे नहीं रे, वालिम ए जण च्यार मेरे०
बालक मंगण प्राहुणो रे, लाड गहेली नार मेरे० ॥ १७ ॥
गहवो कोइ मतो करो रे, आलोची मन आप मेरे०
आलिमपति पाछो फिरै रे, तो चूकें सब पाप मेरे० ॥ १८ ॥
आपणो मन आलोचि ने रे, जे करसी निज काज मेरे०
ते पामें सुख सम्पदा रे, 'लालचन्द' मुनिराज मेरे० ॥ १६ ॥

शाही हठ का छल से प्रतिकार कर दिल्ली पुनरागमन

दूहा—

व्यास कहै तुमे सांभलो, सुभट होइ सब एक।
हिकमति एक करो हिवै, फिरै साहि रहे टेक ॥ १ ॥
मदझर मातंग[1] पांचसै, सोवन जड़ित[2] साधार।
पाखरिया[3] पंच सहस, कोड़ि एक दीनार ॥ २ ॥
सिणगार्‌या पटकूल सुं, नव नव भांते नाव।
सोवन कलस सरस[4] रच्यो, भरयो वस्तु बहुभाव ॥३॥

१ माता २ साखित सार ३ वलि पाखरिया सहससय ४ सा सिर ठवउ

अणजाण्या नर सीखवो, ए सिंघल मूक्यो दंड।
हुं तुम्ह नी पग खेह छुं, अब तुं[1] आलिम छंड ॥ ४ ॥
नाक नमण इण परि करो, और न कोई उपाय।
अहंकार इम राखज्यो, जिम आलिम फिर जाय ॥५॥

ढाल (६)—कोई पूछो बांभणा जोसी रे ए देशी। अथवा यत्तनी
इम व्यास वचन अवधारी रे, हरखी तब[2] सेना सारी रे।
सहू संच कीयो तिण रातें रे, दंड ल्याया ते परभातैं रे ॥ १ ॥
दिन ऊग्यां आलिम जागै रे, देख्या प्रवहण मन रागें रे।
कहो क्या बे आवत सूझें रे, अइंसउ सेवक कुं बूझें रे ॥ २ ॥
तब व्यास कहै सुणि सामी रे, सही तोहै एह सलामी रे।
सिंघल राजा तुम मुकी रे, सबली आग्या प्रभुजी की रे ॥ ३ ॥
सोना कलसे अति सौहै रे, चमकत चूनी मन मोहे रे।
फरहरें नेजा धजा फाबइ रे, बहु नेड़ा[3] प्रवहण आवै रे ॥ ४ ॥
देखत आलिम सुख पावै रे, वाहण दरीया तटि आवै रे
सुलतान चरण धाइ लागें रे, सब पेसकसी धरी आगे रे ॥ ५ ॥
सिंघल तुम पग नी खेहा रे, सेवक सुं राखो सनेहा रे।
बंदे कुं साहि निवाजै रे, ए चूनो तुम पान काजे रे ॥ ६ ॥
तुम दिलीसर जगदीसो रे, नमठेह सुं केही रीसा रे।
इम विनय वचन सुणीइजे रे, सिरपाव सिंघल नें भेजै रे ॥ ७ ॥
पहरायो ते परधानो रे, दीधो तेहनै बहु मानो रे।
सिंघल मूंक्यो ते लीधो रे, सुभटां ने बांटि दीधो रे॥ ८ ॥

१ कइ २ मानि ३ मतउबइ

सिंघल सों कीधो समेहो रे, मान देई मूंक्या तेहो रे।
समारी सहू राघव वातो रे, जिम तिम वणी आवै घातो रे ॥६॥

दूहा

जेहनइ घटि बहु बुद्धि हुवइ, तेसारइ सहु काम।
भंजइ गंजइ बल घड़इ, वलि आणइ निज ठाम ॥ १ ॥

ढाल (७) यतनी—मनसा जे आणो एह

अलिमपति कूच करायो रे, वेघो दिल्ली गढ आयो रे।
घरि घरि गूठी ऊछलीयाँ रे, बहु मंगल धुनी रंग रलीयाँ ॥ १ ॥
बैठो तखत पतिसाहो रे, गढ सकल थंयो उछाहो रे।
मिलि मिलि नर नारी भाखै रे, यो[1] आयो पदमणी पाखैं ॥२॥
आलिमपति महेलां आया रे, भितरि हथियार धराया रे।
सेवक घरि[2] पाछो जावै[3] रे, तब[4] बड़ी बीबी बुलावै ॥ ३ ॥
तुम साहिब पदमणी परणी रे, ते दिखलावो हम तुरणी रे।
देखां दीदार एकवार रे, केसी हुवे पदमणी नारि ॥ ४ ॥
जसु घरि नहिं पदमणि नारी रे, कैंसो कहीइं घर बार रे।
कैंसी तेरी पतिसाही रे, पदमणी नांहिं एकाही ॥ ५ ॥
विण पदमणी खाना[5] खावै रे, इम वार वार संतावै रे।
विलखो होय खोजौ आवै रे, आलिम नैं बहुत भखावै ॥ ६ ॥
गच्छ मोटो खरतर गायो, महावीर पाट चल आयो रे।
सूरीश्वर श्रीजिनरंग रे, तसुशासन श्रावक चंग रे ॥ ७ ॥

१ किम २ घरि ३ आवइ ४ बड़कण बीबी बलावइ ५ थाली आवइ

मंत्रीसर श्रीहंसराज रे, वड़ दातारां सिरताज रे।
पुण्यवंत महा परवीण रे, गुणरागी नइ धर्म लीण॥ ८॥
समरथ सगलइ ही कामइ रे, तासु भ्रात डुंगरसी नामइ रे।
भागचंद वड़उ भागवत रे, मन मोटइ लखमी कांत॥ ६॥
दीपक सम राजदुवारइ रे, कुल आभ्रण सोभा धारइ रे।
तसु आग्रहि कीधउ एह, खंड बीजउ संपूरण तेह॥ १०॥
पाठक श्री ज्ञानसमुंद रे, गणि ज्ञानराज मुनीचंद रे।
गुरुराज तणै सुपसाया रे, मुनिलब्धोदय गुण गाया रे॥ ११॥

॥ इति द्वितीय खण्ड सम्पूर्णम् ॥

इति श्रीपद्मिनीचरित्रे ढाल भाषाबंधे उपाध्याय श्री ज्ञान समुद्र गणि गजेन्द्राणां शिष्यमुख्य विद्वद्राज श्रीज्ञानराज वाचक वराणां शिष्य पं० लब्धिउदय मुनि विरचिते कटारिया गोत्रीय मंत्रिराज श्री हंसराज म० श्री भागचंदानुरोधेन राणा श्री रतन सिंहलद्वीप गमन श्री पद्मिनी पाणिग्रहणं श्री चित्रकूट दुर्गागमन सम्बन्ध प्रकाशो नाम द्वितीय खंड ॥

राघव चेतन दिल्लीगमन साहि वारिधि यावत् गमनागमन सम्बन्ध प्रकाशनो नाम द्वितीय खंड २ (बड़ौदा प्रति)

तृतीय खण्ड

मंगलाचरण

दूहा

मात पिता बंधव हितु, गुरु सम अवर न कोय।
तिण हेतइं गुरु प्रणमतां, मनवंछित फल होय ॥ १ ॥
तिणकुं राग करी नमूं, इष्ट देवता आप।
खंड कहुं अब तीसरो, सुणतां टलै संताप ॥ २ ॥

पद्मिनी की पुनर्गवेषणा

अणख[1] बोल बीबी तणा, सुणि के आलिम साहि।
धमधमीयो कोप्यो घणो, अति अमरस मन मांहि ॥ ३ ॥
ततखिण व्यास बुलाइ नै, इम पूछें सुलतान।
सिंहलद्वीप विना अवर, पदमणि आही ठाण ॥ ४ ॥
चावो गढ चीतोड़ छै, पहोवी मांहि प्रधान।
रतनसेन रावल[2] जिहां, राजें अमली माण ॥ ५ ॥
शेषनाग सिरमणी जिसी, तस घरि पदमणि नारि।
लेई न सकै कोइ तिण, किम कहिइं अविचार ॥ ६ ॥
एवड़ो सिंहलद्वीप नो, फोकट कीध प्रयास।
गढ चीतोड़ किसो गजो, साहि कहै सुणि व्यास ॥ ७ ॥

---

१ नाजुक २ राणउ तिहां।

चित्तौड़ पर चढ़ाई

ढाल (१) राग—आसा सिन्धू
भणइ मन्दोदरी दैत्य दसकंध सुणि एह कड़खा री चाल

चढयो अलावदी साहि सबलै कटक,
सकज सिरदार भड़ साथ लीधा।
मीर बड़वीर रिणधीर जोधा मुगल,
सलह कारी सावता तुरंत कीधा ॥१॥च०॥
इन्द्र ने चंद्र नागेन्द्र चित चमकीया,
धड़हड़्यो शेष नें धरा धूजें।
लचकि किचकीचकरें पीठ कूरंमतणी,
हलहलें मेरु दिगदंत कूजै ॥२॥च०॥
आवियो साहि चित्रोड़री तलहटी,
लाख सतबीस उमराव लीधा।
गाजती राजती जाणीइं गज घटा,
आप करतार नवी पार लीधा[१] ॥३॥च०॥
तरणि छिप गयो रयणि जिम तारिका,
खलकि खुरताल पाताल पाणी।
गुहीर नीसाण घन घोर जिम घरहरैं,
हलहिवे वेग ल्यो हिंदुवाणी ॥४॥
गजां सिर धजां बहू नेज वाजां करी,
उरझि मुरझि रहें पवँन बाधो।
हयवरा गेंवरां उमरा सांतरा,
आप करतार नवी पार लाधो ॥५॥च०॥

१ मसत गजराज गजथाह कीधइ

राण कुल भाण सुलतान आयो सुणी,
झटक दे कटक सहु सझ कीधो।
मुँछ बल घालि बहू रोस भाखे रतन,
हलाहिव साहि नइं करां सीधो ॥६॥च०॥
भलां तुं आवियो मुझ मन भावीयो,
दूत रजपूत मूं की कहायो।
हूं हिजें साहि हुसीयार हिवें जाइ मत,
भलां सिंघल थकी भाजि आयो ॥७॥च०॥
माहरा साथ रा हाथ हिवें देखज्ये,
ढीलिपति रहैं मति हिवै ढीलो।
भाजतां लाज तुझ कां ज आवे नहिं,
देखयो साहि मोटो अडीलो ॥८॥च०
कीयो गढ सांतरो नाल गोलां करी,
मांडीयां ढीकली अरहट्ट यंत्रं।
धान पाणी घणा वसत संचा किया,
मिली[1] बुद्धिवंत करे बहु मंत्रं ॥६॥च०॥
तुरल[2] रा तीर जिम वैंण रावल[3] तणा,
सुणत परमाण पतिसाहि[4] रूठो।
भभकति आग में जाणि घृत भेलीयो,
साहि कहै हलां करि सुभट रूठो ॥१०॥च०॥

१ महा मंत्री २ ततारा ३ राणा ४ सुलतान

कोट करि चोट उपाड़ि अलगो करो,
बुरज गुरजां करी करो हिवें भूक ।
ढाहि ढम ढेर गढ घेरि करि पाकड़ो,
करो हिवें बंदि दिन अंध घूक ॥११॥च०॥
करैं मुख रगत युवगत आलिमधणी,
डारि दूयुं फूंकि थकी[1] गढ चीतोड़ ।
राण सुं पदमणी चिडी जिम पाकडू,
कवण हिंदू करै हम तणी होड़ ॥१२॥च०॥

युद्ध वर्णन

होय हुसीयार हथीयार गहि ऊठीया,
मीर वड़ वीर रिणधीर रोसइं ।
सुणो पतिसाहि अल्लाह अब क्या करे,
देखि तुझ साथरा हाथ मोसें ॥१३॥च०॥
इम कहि मुगल सिर चुगल जिम मूडीया,
धाय गढ कंगुरे आय लागा ।
पीठ परि रीठ पाथर[2] तणी पड पडै,
अडवड़ै लड़थड़ै भिड़ै आंगा ॥१४॥च०॥
भड़ा भड़ि भड़ा भड़ि नाल छूटै भली,
कड़ाकड़ि कूट बाजैं कुठारां ।
तड़ातड़ि तड़ातड़ि सबद गढ ठावतां,
बड़ाबड़ि बाण लागै ऊठारां ॥१५॥च०॥

१ गढ सकल २ पाथर

झूंबीया लूंबीया मीर गढ ऊपरा[1],
गोफणा फण-फणा वहैं गोला ।
गड्डा गड़ि गिर तणा गडागरि गिर पड़ै,
चड़ाचड़ि ऊछलै मुगदल्ल[2] रहो ला ॥१६॥
जालमी आलमी जोध मिलि झूझीया,
धरहरै धरा धमचक धूजी ।
सरस संग्राम री ढाल ए पनरमी,
सुगुरुराज ग्यान 'लालचंद' वाजी[3] ॥१७॥च०॥

दूहा

एकण दिशि रावल[4] अनम्म, आलिमपति दिशि एक ।
भभकारे[5] बेहुं सुभट, राखण रजवट टेक ॥१॥
खाणो दाणो पूरवै, रावल रण रंढाल ।
भारथ में[6] योद्धा भिड़ै, रिणयोद्धा जिम काल ॥२॥
आलिम चिंता अति घणी, पदमणि पेखण प्रेम ।
गढ हाथैं आवै नहीं, कहो हवै कीजै केम ॥३॥
दिल्लीपति दाखै इसौ, सुभटां नै समझाय ।
सहु तुमे हिव सामठा, जुड़ो[7] तुरंगां जाय ॥४॥
नेड़ा होय गढ:सु'निपट, खोदो खानि सुरंग ।
बुरजां तणा पुरजां करो, देशी धड़ा दुरंग ॥५॥

---

१ कांगुरे २ मूषल होला ३ बांची ४ रणउ बपुकारे ५ भड़ ६ रिम
७ जड़उ दुरंगे

ढाल (२) चरणाली चामुंडा रण चढ़ै एहनी

साहि कहै सुभटा भणी, होज्यो हिवै हुसीयारो रे।
मरदानी मरदा तणी, देखेंगे इण वारो रे ॥१॥
रिण रसीयो रे अलावदी, मीर बड़ा रण-धीरो रे।
हलकारे हलां करे, मुगल मूंकी बड़धीरो रे ॥२॥ रिण०
मरण तणो डर कोई नहिं, मरना है इक वारो रे।
बहुत निवाज बड़ा करुं, द्युं बहु देश भंडारो रे ॥रिण०॥
दिल्ली अब दूरें रही, हिकमति[१] अब मति हारो रे।
रोड़ो इक-इक खेसतां, होय पाधर दरहालो रे ॥४॥ रि०॥
कुदका कोट तणा करो, खोदि करो खल खटो रे।
कूटे पाड़ो कागुरा, नेड़ा होइ निपटो रे ॥५॥ रि०॥
निसरणी ऊंची करो, सुभट करो पैसारो रे।
आणो रावल[२] इण घड़ी, कुदण क्यासु गमारो रे ॥६॥रि०॥
तुरत उठ्या तड़भड़ि करी, सुणि के साहि वचनो रे।
मीर मुगल मसती हुआ, सलह[३] पहरी यतनो रे ॥७॥ रि०॥
धेठा होय ने धपटीया, दड़वड़ लागा[४] डागा रे।
वानर जेम विलगीया[५], लपटी गढ नें लागा रे ॥८॥ रि०
गणण गणण गोला वहे, जाणे[६] सींचाण अजाणो रे ॥
सगग सगग सर छूटतां, बगग बगग कूहकबाणो रे ॥९॥ रि०॥

---

१ हिम्मति २ रावउ ३ जोसण पहर अतन्न रे ४ जाणै ५ विलंबिया
६ जाण सीचाणा जाणो रे

मारै मीर महाबली, ताके बाहै तीरो रे।
कूटे कोटनै कांगुरां, धुव[1] खंडै बड धीरो रे ॥१०॥ रि०॥
रिण रहीया हय हाथीया, कीधा जाणे कोटो रे।
रुधिर तणी रिण नय वहइ, सूर कमल दड[2] दोटो रे ॥११॥ रि०
आतसबाजी ऊछली गयणे घोर अंधारो रे।
आरा बे नर ऊछलै, जाणं मूरातन[3] रिण सारो रे ॥१२॥ रि०॥
नारद नाचें मन रुली, डिम डिम डमरू बाजें रे।
जोगणिया खप्पर भरै, रुहिर पीवै मन[4] छाजै रे ॥ १३ ॥ रि० ॥
डडकारा[5] डाकणि करै, राक्षस देवइ रासो रे।
रुंडतणी माला रचै, ऊमयापति उल्लासो रे ॥ १४ ॥ रि० ॥
सुर भणी सुरलोक स्युं, ऊतरै अमर विमाणो रे।
अपछर आरतीयां करइ, कामणि कंचन वानो रे ॥ १५ ॥ रि०॥
मुगल वसत लूंट घणी, माम कोठार[6] भंडारो रे।
माथें कीधी मेंदनी, हूओ गढ़ हाहाकारो रे ॥ १६ ॥ रि० ॥
हेरा करै डेरा हणौं, राति वाहैं राजो रे।
मुगल घणा तिहां मारीया, सबल लूटाणा साजो रे ॥१७॥ रि०
साफ लगै दिन प्रति लड़ैं, पिण कोई न सीझइ कामो रे।
फोकट मुगल मरावीया, आलिम चिंतै आमो रे ॥ १८ ॥ रि०॥
कल बला दोनउं जे करइ, तउ कारिज चढइ प्रमाणो रे।
'लालचंद' कहैं साहि सुं बीस कहइ इम वाणो रे ॥ १६ ॥ रि०

१ ध्रोव पढ़ै २ दल ३ सुत ४ मत बाजै रे, ५ डड़डाटा ६ गोठि

कपट प्रपंच रचना

दूहा

छानो कोइक छल करो, मति प्रकासो मर्म्म।
कपटै बात करो इसी, जिम रहै सगली सर्म ॥ १ ॥
करो सुंस जेतै कहै, बोल बंध सवि साच।
हम मुसाफ उपारि है, बिचलां नहिं वाच ॥ २ ॥
इम विचारि गढ मूंकीया, जे पाका परधान।
रावल[1] सुं इण परि कहै, करी तसलीम सुजाण ॥ ३ ॥
मेल करण हम मूंकीया, जो तुम मानो बात।
प्रीत वधें हम तुम प्रगट, सबही एह सुहात ॥ ४ ॥
दरस देखि पदमणि तणो, भोजन करि तसु हाथ।
आहीठाण गढ देखि नै, साहि चलंगे[2] साथ ॥ ५ ॥

ढाल (३) बात म काढो व्रत तणी ए देशी २ काचो कलो अनार की रे

तासु तणी वातां सुणी, बोलै राव रतनो रे। सुणि हो राजन्ना।
गढ तुम हाथ आव नहीं, जो करो कोड़ि जतनो रे ॥ १ ॥ ता०
पाणी[3] वलतो ही पतीजीइं, जो उठावै मुंसापो रे।
सुंस करै मन सुध स्युं, छोडै सकल कलापो[4] रे ॥ २ ॥ ता०
वलि प्रधान इम वीनवे, सुणि हिन्दू पतिसाहो रे।
देश गाम दूहवां नहीं, दंड तणी नहिं चाहो रे ॥ ३ ॥ ता० ॥
राजकुमारी मागां[5] नहिं, नहिं तुमस्युं दिल खोटो रे।
नाक नमणि हम[6] सुं करो, देखाड़ो चित्रकोटो रे ॥ ४ ॥ ता०

---

१ राणा २ चलेंगे ३ पिण जउ मेल करइ अछइ रेहां, तउ उठावो मसाफ ४ किलाफ ५ परणउ ६ जउ तुम।

मैं अपणा कृत कर्म सु, असुर कुले अवतारो रे ।
पूरब पुण्य प्रमाण सु, तूं हिंदूपति सारो रे ॥५॥ता०॥
जीव एक काया जूई, तूं पूरब भव मुझ भ्रातो रे ।
हम तुम सूं मेलो हुओ, बैठि करइं दोय बातो रे ॥६॥ता०॥
हरख बहुत हमकुं अछै, भोजन पदमणी हाथो रे ।
दीदार पदमणी देखियै, ओरण चाहै आथो रे ॥७॥ता०॥
पाछै[1] दिल्ली कुं चलें, हम तुम होय सनेहो रे ।
तब रावल[2] तिणसुं कहै, जो नवि जोर करेहो रे ॥८॥ता०॥
तो नचिंत पावधारिइं, लसकर थोड़ो लेइ रे ।
आरोगो आणंद सुं, हम घर प्रीति धरेइ रे ॥९॥ता०॥
साहि भणी बातां सहु, जाय कहै परधानो रे ।
सुंस सपति[3] निज बांह सुं[4], झूठे मनि सुलतानो रे ॥१०॥

श्लोक—मुखं पद्मदलाकारं, वाचाचंदन शीतलं ।
हृदयं कर्त्तरी तुल्यं, त्रिविधं धूर्त्त लक्षणम् ॥१॥

राघव मंत्र[5] उपाईयो, रावल झालण काजो रे ।
छेतरवा छल मांडियो, साहि कीयो बहु साजो रे ॥११॥ता०॥
घरभेदू राघव मिल्यो, सामिधरम दियो छेहो रे ।
घरभेदू थी घर रहै, खोवै पणि घर तेहो रे ॥१२॥ता०॥
घर भेदइ लंका गई रेहां, रावण खोयो राज ॥सु०
घरखउ उंदिर दोहिलउरेहां, सुगम अवर मृगराज ॥१३॥

१ पीछे दिल्ली कुच करेंगे २ राणो ३ सबदि ४ दूयइ ५ कीधउ मंत्रणउ, राणा ।

सुलतान का चित्तौड़ प्रवेश

पोलि उघाड़ी गढ तणी, सरल सभावै राणो रे।
मुंक्या तेडण[1] मंत्रवी, वेघ[2] पधारो सुलतानो रे ॥१४॥
तीस सहस लोह लुंबीया, ले पैठो सुलतानो रे।
समचा सुंते[3] संचर्‌या, जाण पड़ि नहिं राणो रे ॥१५॥
देखवा कोतिक मिल्या तिहां, नरनारी जन वृंदो रे।
पिण किणहि जाण्यो नहिं, दिलीपति रो छंदो रे ॥१६॥

सुत गुप्तस्य दम्भस्य, ब्रह्माप्यंतं न गच्छति।
कौलिको विष्णु रूपेण, राजकन्या निसेवते ॥२॥

कपट कोई नवी लिखी सकै, जो करी जाणै कोई रे।
'लालचंद' मुनीवर कहै, पिण भावी हुइ सो होई रे ॥१७॥

दूहा

आया दीठा सामठा, आलिम सुं असवार।
खुणस्यो मन मांहि खरो, रावल जी तिण वार ॥१॥
बूलाया आया तुरत, सम[4] कीयांइ सुभट।
दल बादल आई मिल्या, हिंदू मुगलां थट ॥२॥
दिलीपति ढीलो हुवो, पहुंचे कोई[5] न पाण।
अचरिज[6] आसंगी न सकै, बोलै पहुवी बाण ॥३॥
काइे कुं बेठो कटक, खोटो म करो खेव।
हुं लड़वा आव्यो नहीं, नहिं छै को कुछ भेव ॥४॥

---

१ मोटा २ पाछ वारउ ३ सब ४ सपनी किमें ५ र को उपाय
६ आसंग सकै न कोइ किम, आलम बोलइ दाव।

कोतिग देखी गढ़ तणो, हुं जास्युं निज ठाम।
वली रावल जी इम कहै[1] सुणि दिलीपति साम ॥५॥

ढाल (४)

१ तिण अवसर वाजै तिहां रे ढढेरा नो ढोल ए देसी।
२ मेवाड़ी दरजणी री ढाल

एतला[2] आण्या सा भणी रे, तीस सहस असवार।
विण कारण वानर जिसा रे, माता सुगल्ल जे इणवार रे ॥१॥
धुरत दिल खोटा रे, काइं रे तुं साहिब मोटा;
वाचा चूको रे, आलिम वाचा चूको। आंकणी।
चूक कियो तो चूरस्युं रे, सेक्या पापड़ जेम रे।
पीसी न्हांखुं पलक में रे, आटा मैं सिंधव जेम रे ॥२॥धु०॥
हलकारे[3] हलकां करी रे, ऊठै सुभट अपार।
सार मुखैं तिल तिल करै रे, एकेको एक हजार ॥३॥धु०॥
गढगंजन सुभटां भणी रे, तनक हुकम हुवै मुझ।
तो[4] चिड़ीया जिम पाकड़ै रे, ए तीस सहस दल तुझ रे ॥४॥धु०॥
आलिमपति इम चिंतवै रे, राय सुणो अरदास
निज घरि आया प्राहुणा रे, कहो किम कीजै उदास रे ॥५ धु०॥
सगतै केम सत्ता करे रे, कांय पचारो पाण।
थोड़ा ही होवै घणा रे, लीज्यें केलि महमान रे ॥६॥धु०॥

१ बदइ २ एतइ ३ हलकारनां हेकैं नइ रे ४ चिड़ियाँ री परि।

राणा का आतिथ्य

हम जीमवा आया हुँता रे, नहि लड़वानो काज।
घणो मामलो कांय नहीं रे, आज सुभक्ष सुंहगा नाज रे ॥७
जीमतां जो आणो अछो रे, खरच तणो मनि खेद।
कहो तो फिर पाछा फिरां रे, ते भाखो हम सुं भेद रे ॥८॥
भणइ रावल आलिम भणी रे, भलै पधार्या साहि।
बीजा बोलावो वले रे, जीमवा नी सी परवाह रे ॥९॥
ओछा बोल न बोलीइं रे, दिल में राखी योग।
बोल बोल बेऊं हस्या रे, हाथ देई तालि जोग रे ॥१०॥
मांहो मांहि मिलि गया रे, सबल हुओ संतोष।
दोष सहु दूरे किया रे, राख्यो रावल रो तोष रे ॥११॥
रावल भगति भोजन तणी रे, सहूअ कराई सम्म।
रूड़ी व्यंजन रसवती रे, आरोगण आलिम कज्ज रे ॥१२॥
पदमणि सुं प्रीतम कहै रे, खरी धरी मन खंति।
जिण विधइं जस रस रहै रे, भोजन दीजइ तिण भंति रे ॥१३॥
प्रीतम सुं पदमणि कहै रे, हुँ नहि परुसुं हाथ।
मो सम दासी माहरी रे, ते परुसस्यै दिलीनाथ ॥१४॥
मानि वचन महाराय जी रे, सिणगारी जब दासि।
काम तणी सेवा जसी रे, रूपे रंभा गुण राशि रे ॥१५॥
खांति करी खिजमति करें रे, आसण बैसण देह।
साख[१] तिहुँ साबती करी रे, तेड़इं दिलीपति तेह रे ॥१६॥

१ साखित सहु।

हरखित चित आवै हिवै रे, दिलीपति सुलतान।
'लालचन्द' मुनिवर कहै रे, सुणयो हिव चतुर सुजान रे ॥१७॥

दूहा

ऊंचा अमर विमाण सा, मोटा महैल अनेक।
गोख झरोखा जालियां, घोल ति शुद्ध विवेक ॥१॥
सरग मृत्य पाताल सब, सुन्दर वन आराम।
चात्रक मोर चकोर बहु, चितरीया चित्राम ॥२॥
कनक थंभ कलसे करी, मंडित मोहण गेह।
झिगमगि ज्योति जड़ाव की, चलकती चन्दरुएह ॥३॥
रंगित मंडप मांहि हिव, जाजिम लांबी जेह।
वारु करै वीछामणा, मोल घणा छैं जेह ॥४॥
मोखमल मोटा मोल रा, पंच रंग पटकूल।
जरी कथीपा जुगति सुं, सखर विछावै सूल ॥५॥
तरहदारविण मइं ठव्यो, सिंहासण तिण[१] बार।
माणिक मोती लाल बहु, जड़ीया रतन अपार ॥६॥
तिहां आवी बैठा तुरत, सबल साथ सुं साहि।
चितइं मानव लोक में, आणी भिस्त अझाह ॥७॥

भोजन सत्कार

ढाल (५) अलबेल्या नी

पहरी पटोली पांभड़ी रे लाल, दासी सुन्दर देह; मन मान्या रे
एक आवी आसण ठवै रे लाल, रूप अधिक गुण गेह; मन०॥१॥

१ सुखकार।

भोजन भगति भली करै रे लाल, सुंदर रूप अचंभ । मन०
दासी पदमणि सारखी रे लाल, रूपै जाणें रंभ । मन० ॥२॥
सोवन झारी जल भरी रे लाल, कनक कचोला थाल । मन०
ले आवै भावै घणे रे लाल, कामणि अति सुकमाल । मन० ॥३॥
नाना व्यंजन नव नवा रे लाल, चतुर समारया चाल । मन०
खाटा मीठा चरपरा रे लाल, रूड़े स्वादे रालि । मन० ॥४॥
आंबा नींबू कातली रे लाल, मांहि बूरो मेलि । मन०
कूंकणीया केलां तणी रे लाल, कीज्ये ठेला ठेलि । मन० ॥५॥
नीली चउला नी फली रे लाल, काकड़िया कालिंग । म०
काचर परवर टींडसी रे लाल, टींडोरी अति चंग । म० ॥६॥
मुंगवड़ी पेठावड़ी रे लाल, खारावड़ी मन खंति । मन०
डबकवड़ी दाधावड़ी रे लाल, व्यंजन नाना भंति । मन० ॥७॥
राय डोडी राजा दनी रे लाल वली खुरसाणी सेव । मन० ।
दाडिम दाख सोहामणा रे लाल, खरबूजा खुं टेव । मन० ॥८॥
खांति समारथा खेलरा रे लाल, राईता ईंमेलि; मन०
घोलवड़ा कांजीवड़ा रे लाल, माट भरया छै ठेलि । मन० ॥९॥
कारेली ने काचरा रे लाल, तली मूंकी घृत संगि । मन०
पापड़[1] एरंडकाकड़ी रे लाल, सीरावड़ीय सुचंग । मन० ॥१०॥
मीठ मठर चूंला फली[2] रे लाल, झमकाव्या देइ बघार । मन० ।
मुंल फूल फल पानड़ा रे लाल, अथाणा[3] सुखकार । मन० ॥११॥

१ पाखड़ कहर २ चिणा ३ संधाणा

सुंदरि परुस्या सालणा रे लाल, हिव पकवाने हूंस । मन० ।
खारिक तिमजा खोपरा रे लाल, प्रीसतां रूड़ी रुंस ।मन०।१२।।
दाख बिदाम चिरंजीया रे लाल, मेवा सगली जाति । मन० ।
खाजा ताजा खांडरा रे लाल, घेवर बूरो घाति । मन० । १३ ।।
सखरा लाडू सेवीया रे लाल, मोती मनोहर जाति[१] ।मन०।
घेवर [२]बड़लां हेसमी रे लाल, पैड़ा[३] कंद बहुभांति[४] ।मन० ।।१४।।
पेंडा[५] डीडवाणा तणा रे लाल, पूड़ी[६] लापसी तेर ।मन०।
सुहम तणीअ तिलंगणी रे लाल, जलेबी बीकानेर[७] । मन०।।१५।।
पहुआवर धनपुर तणा रे लाल, गुप चुप गढ ग्वालेर ।
करणसाही लाडू भला रे लाल, वारु बीकानेर ।।१६।।
बयानइ रा नीपना रे लाल, गुदवड़ा गुणखाण । म०
[गुंदवड़ा पाया तणा रे लाल, आंबा रायण आण ।मन०।]
रुस्तक रा दाणा भला रे लाल, गुंदपाक सुख खाण ।मन०१७।।
सीरा फीणी सूंहालीयां रे लाल, साबूनी सुखकार । मन० ।
इन्द्रसा नै दहीथडा रे लाल, इम पकवान अपार ।मन० ।।१८।।
रायभोग गरड़ा तणी रे लाल, साठी सखरी सालि ।मन०।
देव जीर परुसै भला रे लाल, दिल मानै ते दालि । मन०।।१९।।
मूंग मोठ तूअर तणी रे लाल, राती दाल मसूर ।मन० ।
उड़द चिणा ऊपरि घणा रे लाल, सुरहा घृत भरपूर ।मन०।।२०।।

१ रूप २ बाबरह समी ३ केला ४ रूप ५ गट्टा ६ पेंडा नागपुरीय
७ गुपचुप गढ ग्वालेर; जलेबी सुंजीय

भोजन री मुगलें भली रे लाल, कीधी झाड़ा झाड़ि ।मन०।
ऊपरि गोरस आथणी रे लाल, परुसै पद्मणि मांड ।मन० ।।२१।।
चळू करी मूंछण दीयारे लाल, लूंग सुपारी पान । मन० ।
'लालचंद' कहै सांभलो रे लाल, तुरक करै अति तान ।मन०।।२२।।

दासी के सौन्दर्य पर मुग्ध सुलतान को राघव चेतन का पद्मिनी दिखाना

दोहा

ज्युं ज्युं दासी नव नवी, सझि आवइ सिणगार ।
देखि देखि चित चमकीयो, आलिम भोजन वार ।। १ ।।
रूप अनूपम रंभसम, उवा पदमी कहै याह ।
वार वार विह्वल थको, जंपै आलिम साहि ।।२।।
एक नहीं अम घर ईसी, कैसा हम पतिसाहि ।
याकै एती पदमणी, देखत उपजै दाह ।।३।।
वार वार झवखो किसुं, राघव बोलै एम ।
ए दासी पदमिणी तणी, आप पधारइ केम ।।४।।
चुंप दे कै देखो चतुर, बिचली म करो बात ।
सहस दोय सहेलीयां, रहै संग दिन राति ।। ५ ।।

ढाल (६) हसला ने गलि घूघरमालकि हंसलउ भलउ, ए देशी

व्यास कहै सुणि साहिबा, पदमणि नो हे साचो सहिनाण कि ।
काची कंचन वेलसी, नहिं रूपे हे एहवी इंद्राणि कि ।। १ ।।
झबकै जाणै बीजली, अंधारै हे करती उजासकि ।
भमर सदा रुणझुण करइ, मोहा परिमल हे नवी छंडै पास कि
।।२।।सुन्दरि भनी ।

ते आवी न रहइ छिपी, जे मोहइ हे त्रिभुवन जन मन्न कि । सुं०
खिण विरहउ न खमि सकइ,
जतने करि राखइ राणउ रतन्न कि । सु० ।३।
(राणो) रात दिवस पासे रहै, धन्य देखे हे एहनो[1] आकार कि ।
साहि कहै सुणि व्यास जी,
किण विधसु[2] हे देखै दीदार कि । सु० ।।४।।
व्यास कहै सुणि साहिबा[3] अति ऊँचो हे पदमणि आवास कि ।
मुजरो कोई पामे नहिं,
रावल ही हे लहै भोगविलास कि । सु० ।।५।।

कवित्त

लाख दस लहै पलिंग सोड़ि तीस लख सुणीजैं
गाल मसूरया सहस सहस दोय गिंदूआं भणीजैं ।।
तस उपरि मसोड़ि[4] मोल दह लखे लीधी ।
अगर कुसम पटकूल सेफ कुंकम पुट दीधी ।।
अलावदी सुलतान सुणि विरह व्यथा खिण नवी खमैं ।
पदमणि नारि सिणगारि करि रतनसेन सेफां रमैं ।।१।।

ढाल तेहीज—

जे देखइ पदमिणि भणी, ते गहिलो हे होवे गुणवंत कि । सुं०
मान गलइ बहुनारि ना, इम बातां हे वे करि बुधवंत कि । सुं०६

1 ए रति रूप उदार कि 2 करि हे हम होइ० 3 सामिजी 4 दोवड़ि

इण[1] अवसरि पद्मणि कहैं,
सहीयां देखा हे केहवो पतिसाहि कि । सु० ।
जाली में मुख घाली नै,
गयगमणी हे देखै मन उच्छाह कि ॥७॥ सु०॥
ते देखी व्यासैं तिसें तब बोले हे देखो सुलतान कि ।सु० ।
रतन जडित जाली विचइ,
बइठी बाला हे गुणवंत सुजान कि । सु० ॥८॥
तुरत देखी ने पद्मणी, बोलइ आलम हे नागकुमारिकि । सु० ।
भद्र कि नाथा रुकमणी,
किन्नर किन होय अपछर नारि कि ॥६॥ सु०॥
वाह-वाह वे पदमणि ऐसी नहीं हे इन्द्र घरि इन्द्राणि कि । सुं०
या कइ अंगूठा समि नहीं,
नारी हे जगि मांहि सुजाण कि । सु०।१०।
देखी आलिम अचरिच थयो,
नहिं एहवी नारि संसारिकि । सु० ॥११॥
किती बात याकी कहों,
मुझ मन हे मृग पाड्यो प्रेम पास कि । सु० ।
मुरछित हो धरणी पड्यो,
वलि मूके हे मोटा नीसास कि सु० ॥१२॥
व्यास कहै सुणि साहिबा, स्युं खोवै हे फोकट निज साखि कि ।
और बुद्धि[2] इक अटकलां,
तब लगे हे मन धीरज देउ राखि कि । सु० । ॥१३॥

1 तिण 2 कोई बुधि

जो रावल जिम तिम करी, पकड़ीजे हे तो पहुँचे मन[1] हूँस कि।
आलोची मन आपण, धीरज धरि हे मन पूगै हूंस[2] कि ।।सु०।।१४।।
केसरि चन्दण कुमकुमा, छंटीज्ये हे कीज्ये रंग रोळ कि । सु० ।
वारू दीध पहिरावणी,

हय गय रथ हे आभरण अनेक कि । सु० । ।।१५।।
भगति जुगति राणइ भली, संतोष्या हे सकल राय राण कि। सु०
लालचंद कहि सांभलउ,

अस बोलइ हे सइंमुखि सुलतान कि सु० ।।१६।।

दूहा

बाँह झालि सुलतान कहें, राय सुणो महाराउ ।
महमानी तुम बहुत की, अब हम गढ़ दिखलाउ ।।१।।
रतनसेन साथे हुओ, विषमी विषमी ठोड़ ।
देखायो सुलतान नै, फिरि-फिरि गढ चीत्तोड़ ।।२।।
विषम घाट बांको घणो, देख्यां छूटै गरब ।
खोट नहीं किण बात नो, साज सांतरो सरब ।।३।।
कीज्यें कोड़ि कलप्पना, तोहि न आवै हाथ ।
इम विचारी आपणें, इम जंपे दिल्ली नाथ ।।४।।
काम काज हम सुं कहो, बंधव जीवन प्राण ।
बहु भगति तुम हम करी, अब सीख[3] मांगे सुलताण ।।५।।
एम कही बगसे वसत, आलम वारम्वार ।
कनक रतन माणक जड़ित, आभ्रण शस्त्र अपार ।।६।।

१ प्राणकि २ जीमिया धान ३ विदा देहु महाराण

आलिम कहै ऊभा रहो, करयो मया सदीव ।
रावल कहै आगे चलौ, ज्युं सुख पावै जीव ॥६॥
ईम कहि गढ बारणे,[१] संचरीयो महाराव ।
खुरसाणी खोटे मनै, देखैं दाव उपाव ॥७॥

राघव चेतन की कुमंत्रणा

ढाल (७)

राग-मारु. १ पंथी एक संदेसड़ो, २ कपूर हुवै अति ऊजलोरे एदेसो
व्यास कहै नहिं एहवो रे, औसर लहस्यें ओर ।
कहस्यो पछै न कह्यो किणै, थे मति चुको इन ठोर ॥१॥
साहिबजीथे मानल्यो मारी बात, वलि एहवी न पायवी घात ।
सुनि सुलतान मन चिंतवै रे, साच कहै छै एह ।
अवसर चूक गमाड़ियो, मौल न लहीइ तेर ॥२॥ सा० ।
हुकम कीयो हल्लां करी रे, विचल्यो साह वचन्न ।
जूझारे जाइ झालियो रे, कपटइ राण रतन्न ॥३॥ सा०॥

राणा की गिरफ्तारी

हम महिमानी तुम करी रे, अब तुम हम मेहमान ।
पेशकशी पदमणी कीयां, हिवैं छूटेवो राजान ॥४॥सा०॥
साथे सुभट हुंता तिके रे, तेह हुआ मति मंद ।
हिकमति[२] कांइ न केलवी, राय पड़यो बहु फंद ॥५॥सा०॥
बेड़ी घाली वेसाणीयो रे, राहु ग्रह्यो जिम चंद ।
जोरो कोई चालीयो, सिंह पड़यों जिम फंद ॥६॥सा०॥

---

१ बाहिरै २ हिम्मति

गढ ऊपरि वार्ता गई रे, हलहलियो हिंदुआन।
गढपति भाल्यो आपणो जी, कीज्यें केहोपान ॥७॥सा०॥
गढनी पोलि जड़ाइ नईरे, मिल्यो कटक गढ मांहि।
लोक सहु कहै राय जी, मुरिख अकलि सुनाइ ॥८॥सा०॥
कांई कीयो कपटी तणों रे, असुर तणो वीसास।
राय ग्रह्यो हिव पदमणी ने, गढनो करसी ग्रास ॥६॥सा०॥
आय बैठो सुभटां विचै रे, वीरभाण बड़ वीर।
आलोचै मिल एकठा जी, सूर सुभट रिणधीर ॥१०॥सा०॥
एक कहै गढ में थकां रे, सबलो करो संग्राम।
एक कहै रूड़ो हुवै रे, राति (दिवस) वाहैं काम ॥११॥सा०॥
टाणो न मिले जूझतां जी, संकट मांहि सामि।
एक कहै नायक विना जी, न रहै जूझयां मामि ॥१२॥सा०॥

हतं ज्ञानं क्रियाहीनं, अज्ञानं च हतं नरं।
हंतं निर्नायकं सैन्यं, अभर्त्तारि स्त्रियो हतं ॥१॥

सबलां सुं जोरो कीयां रे, कारिज न सरै कोय।
कहै एक मरवो अछे जी, ज्युं भावै त्यूं होय ॥१३॥सा०॥
मूआं गरज न का सरै जी, छल विण न सरै काज।
'लालचन्द' छल बल कीयां जी, अविचल पामै राज ॥१४॥

चितौड़ दुर्ग में शाही दूत द्वारा पद्मिनी की मांग

दूहा

मिलि मिलि मोटा मंत्रवी, सूर सुभट रजपूत।
इण विधि आलोचै तिसै, आयो आलिम दूत ॥१॥

आलिम[1] आया दूत बे, बूलाया देइ[2] मान।
आलिम साहि तणा वचन, ते परकासै परधान ॥२॥
आलिमसाहि अलावदी, मूंक्या करिवा प्रीति।
मानो जो ए मंत्रणो, तो रंग वाधइ बहु प्रीति ॥३॥

ढाल (८) मेवाड़ी राजा रे चीत्रोड़ो राजा रे, एहनी—

मुझ[3] मानो वातां रे; जिम होवै धाता रे;
वले एहवी रे घातां घांतां दोहरी रे ॥ १ ॥
साहि पदमणि तेड़े रे, तुम राजा छोड़े रे;
बहु कोडै कर तोड़ै बेड़ी लोहनी रे ॥ २ ॥
गढ कोट भंडारा रे, धन सोवन तारा रे;
हय गेवर सारा माणिक जवहरु रे ॥ ३ ॥
अवर[4] नहिं मांगै रे, तुम देश न भांगै रे;
मांगे मन रंगे पदमणी मनहरु रे ॥ ४ ॥
मन मांहि विचारै रे, बहु जूझ निवारै रे;
जो तुम देस्यो नारी सारी पदमणी रे ॥ ५ ॥
तो देस्यो राजा रे, धन मानै ताजा रे,
नहिं छूटण इलाजा बीजा तुम धणी रे ॥ ६ ॥
जो वातें सीधी रे, राणी नवि दीधी रे;
तो होडैं गढ तोड़ैं नांखु ईम घड़ी रे ॥ ७ ॥
भांजे तुम देस्यां रे, भांगी टूक[5] करेस्यां रे;
तुम राज हरेस्यां तुम सेती लड़ी रे ॥ ८ ॥

१ तिहां ने तेड़ो मूंकि नै २ बहुमान ३ तुम ४ अवम ५ मजबूर

ईम भाखी चाल्या रे, परधाने पाल्या रे,
बांहे करि झाल्या आल्या धन बहू रे ॥ ९ ॥
हम सिर तुम खोलै रे, वीरभाण इम बोलै रे;
हम [illegible] तुम ओलै राय राणी सहू रे ॥ १० ॥
आलोची राते रे, कहस्यां परभातै रे;
जानै [illegible]बातै सुख हम तुम सही रे ॥ ११ ॥
पाउधारेंउ डेरै रे, आलिम पंति हेरै रे;
विम[illegible] चर[1] पाछा फिरै इम कही रे ॥ १२ ॥
आलोचइं केड़ै रे, [illegible]ंता जे डेरै[2] रे,
आ[illegible] के तेड़ै हेडै स्युं होसी रे ॥ १३ ॥

[illegible]विचलित वीरभाण

आलिम अडीलो रे [illegible]किण ही परि ढीलो रे,
हांवे [illegible] रढीलो तुरक गयो गुसे रे ॥ १४ ॥
जो दीज्यैं राणी रे तो न रहै पाणी रे;
किण [illegible] गढ जाणी हाणि होवै पछै रे ॥१५॥
जोरें जो लेसी रे, [illegible]हु[3] बंद करेसी रे,
तो क[illegible] नव रहसी रजवट जे अछै रे ॥ १६ ॥
आ पदमणी दीजैं रे, घर सुत संधीजे रे,
विण [illegible] बंधीजे, छीजै जन घणो रे ॥ १७ ॥
कोई बोल्यो वाणी रे, ए मुँकी अडाणी रे,
राणी धर लीजे राणो आपणो रे ॥ १८ ॥

१ नेर २ नेड़ै ३ बंदि

वीरभाण विचारइ रे, मन वैर संभारइ रे,
इण सोहाग उतास्यो मुझ माता तणो रे ॥१६॥

जो परही दीज्ये रे, सहिजइ छूटीज्ये रे,
कीज्यें न विलंभ इण वातें घणो रे ॥ २० ॥

सुभट समझावै रे, ए वात सुणावै[1] रे,
सगला सुख थावै जउ दीजइ इणै रे ॥ २१ ॥

किणही मनमानी रे, भलीय न जाणी रे, सुभटां ने न सुहाणी रे
विण नायक न ताणी बोल कह्यो किणे रे ॥२२॥

यस्मिन्कुले यत्पुरुषः प्रधानः सएव यत्ने न हि रक्षणीय ।
तस्मिन विनष्टे सकलं विनष्टे नानाभि भंगे ह्यरकावहंति ॥

मन दुरमत[2] आवी रे, सगलां मन[3] भावी रे,
वीरभाण सोहावी[4] भावी जे हुवै रे ॥ २३ ॥

सगलां ही विचारी रे, परभातै नारी रे,
दीज्यै निरधार उठि ईम कहै रे ॥ २४ ॥

सुणि पदमणी सोचै रे, नयणे जल मोचै रे,
परधाने पौचे मन में खलभली रे ॥ २५ ॥

सुभटां सत हास्यो रे, राय बंधास्यो[5] रे,
अम काज विचास्यो भव हारण वली रे ॥२६॥

---

१ घणावै २ दुश्रीनी ३ समचावी रे ४ सोहागीजै सही रे ५ बंदि पधारूयो रे

पद्मिनी का स्वावलम्बन

किण सरणें जाऊं रे, दीन भाप सुणाउं रे,
सतहीण न थाउं मन कीज्ये खरो रे ॥ २७ ॥
ए सुभट कुजीहा रे, सी कीजइ ईहा रे
मुख असुर न पेखउं जीहा खण्डि मरउं रे ॥२८॥
समझी मन सेती रे, खत्री धर्म खेती रे,
मन[1] धीर धरेती जिम एनी सती रे ॥ २६ ॥
सीता ने कुंती रे, द्रोपदि बहु भंती रे,
लही संकट[2] न सील चूकी रती रे ॥ ३० ॥
सत सील प्रभावइ रे, दुख नइ मउनावइ रे,
बहु आणंद बधावइ, दिन रयणी गरवइ रे॥३१॥
हिवें[3] सील प्रभावें रे, सुणयो मन भावै रे,
मुनि 'लालचन्द' गावै पावै सुख ध्रुवै रे ॥ ३२ ॥

वीर गोरा के घर पद्मिनी गमन

दूहा

गोरो रावत तिण गढै, वादल तस भत्रीज।
बल पूरा सूरा सुभट[4], खत्री धर्म (राखै) तेहीज ॥१॥
तजी सेवा रावल[5] तणी, किणही कुबोल विशेष।
चाकर गयर थका रहै, ग्रास गोठ तजि रेख ॥२॥

१ बहु २ कष्ट न चूकउ सत एका रती रे ३ सत ४ बिहुं,
५ श्री राण न

जेहवै ते जाता हुता, अवर ज सेवा कर्म ।
तेहवें गढ रोहो हुवउ, रहिया खत्रीवट धर्म ।।३।।
गांठि खरच[१] खाता रहै, अभिमानी वड़ वीर ।
गढ रोहो किम नीसरै, पर दुख काटण[२] धीर ।।४।।
एहवा नें पूछै नहीं, न्याय हुवे तो केम ।
पंडित नै आदर नहीं, मूरख सुं बहु प्रेम ।।५।।

ढाल (६) एक लहरीलै गोरिलारै-ए देशी

गढ नी लाज वहै घणीरे, गोरो बादल राउरे ।
ते सुणीया मोटा[३] गुणी, बुद्धिवंत सूर साहाउरे ।।१।।
गढ नी लाज वहै रे । ।।आं०।।

चित सुं एहवो चिंतवै रे, चालि चढी चकडोलो रे ।
साथ सहेली नें भूलरै रे, ते गई गोरा नी पोलो रे ।।१।। ग०।।
बैठो दीठो बारणै, गोरोजी गात गयंदो रे ।
हरषित मनि पदमणी हुवैं, ए दूर करेसी दंदो रे ।।३।। ग०।।
सामो धायो उलही, प्रणमें पदमणी पायो रे ।
मया करी मो ऊपरै रे, गोरिल बोलै माय रे ।।४।। ग०।।
आज दिवस धन्य माहरो रे, आवी आलसुआ में गंगो रे ।
पवित्र थयो घर आंगणो, अधिक पवित्र मुझ अंगो रे ।।५।।ग०।।
काज कहो कुण आविया, माताजी मुझ आवासो रे ।
तब वलती पदमणि कहै, अवधारो अरदासो रे ।।६।। ग०।।

१ गरथ २ कातर ३ पदमिणी ।

सुभटें सीख दीधी[1] सहु रे, खोई खत्रीवट लीको रे।
असुरां घरि अमनें मोकलै, कुमतीयां लाज किसीको रे ।।७।।ग०।।

सीख द्यो हिव मुझ नै, आई छुं[2] इण कामो रे।
ग्यान किसै मुझ नें गिणै, कहै गोरा इण गामो रे ।।८।।ग०।।

खरच न खावां केहनो, कोई न पूछै कामो रे।
तोपिण हिव चिंता तजो, आया जो इण ठामो रे ।।९।।ग०।।

अलगो भय असुरां तणो, हुओ हिव मात निचिंतो रे।
जाण्या सुभट वड़ा जिके, जिण दीधो एह कुमंतो रे ।।१०।।ग०।।

वर मरवो इण बात थी, राणी देई राओ रे।
छूटावीज्ये एहवो, सुभट न खेलै डाओ रे ।।११।।ग०।।

करसी ते जीवी किसुं, थाप्यो जिण ए थापो रे।
कर जोड़ी राणी कहै, इण घरि एह अलापो रे ।।१२।। ग०।।

खोयो राय गढ खोवसी, इण बुद्धि सारू एहो रे।
तिण तुझ हुं सरणो तकी, आई छुं इण[3] गेहो रे ।।१३।। ग०।।

सिंह तणो स्यो स्यालीइ, कारिज करे समारो रे।
गज पाखर गजस्युं चलै, भींत निवाहै भारो रे ।।१४।।ग०।।

ए कारिज तुम स्युं हुवै, तूं हिज बीड़ो झालि रे।
सुभट बड़ो तुं माहरोरे, दोहरी वेला में ढालि रे ।।१५।।ग०।।

सुणि माता सुभटां बड़ो, गाजण थो मुझ भ्रातो रे ।
तस सुत बादल तेहनै, पिण पूछीजे वातो रे ।।१६।।ग०।।

[1] देह [2] इसलइ [3] हिव ।

गोरा के साथ बादल के घर जाना

बेऊ चाली आविया, बादल ने दरबारो रे।
विनय करी नें बादले रे, आय कीध जुहारो रे ।।१७।।ग०।।
पूछै कारिज पय नमी, कहो आया किण काजो रे।
'लालचंद' कहै[1] तस अखीइं, जस[2] मुख हुवै लाजो रे ।।१८।।ग०।।

दूहा

गोरो कहै बादल सुणो, पदमणि साटै राय।
छूड़ावीज्यै एहवो, सुभटे कीयो उपाय ।।१।।
ते ऊपरि ए पदमणी, आई आपां पासि ।
स्युं करिवो सूधो मतो, वेघो कहो विमासि ।।२।।
सरम छोड़ी बैठा सुभट, आपे अछां उदासि।
छोड़ी दीधो रायनो, गाम गोठि तजि[3] ग्रास ।।३।।
लाजत छै नीची दियां, कुल खत्री धर्म सार[4]।
डीलै दोय आपां सुभट, आलिम कटक अपार ।।४।।
किण विधि जीपीजइ किलो[5], ते भाखो भत्रीज।
तिणए[6] आवी तुम कन, पदमणि आपेहीज ।।५।।

ढाल (१८) नाहलिया न जाए गोरी रे वणहटै रे, ए देशी। राग-मारू

पदमणि बोले वीरा बादलारे, सुणि मोरी अरदास।
हुं सरणागति आवी ताहरै, सांभलि तुझ जसवास ।।१।।पद०।।
हिव आधार छै एक तुम तणो रे, दोहरी वेला दाखि।
सगति न हुवै तो सीख द्यो, राखि सकै तो राखि ।।२।।पद०।।

१ तसु दाखीय २ जेहनइ ३ जे ४ लार ५ एकिलो ६ तिणले आयो तुम्ह लगि

नहिंतर पाछे मन जाण्यो करूं रे, देखुं छुं तुम वाट ।
सील न खंडुं जीभड़ी खंडस्युं रे, कै नांखुं सिर काट ॥३॥पद०॥
पच्छिम ऊगै रवि पूरब थकी रे, बारिधि चूकै ठीक ।
जलणी जलुं कै जल में पड़ुं रे, पिण नहु लोपुं लीक ॥४॥पद०॥
एक वार आगै पाछै सही रे, इण भव मरवो होय ।
तो स्युं करुं हिव जीव नै रे, एक भव में हुवै दोय ॥५॥पद०॥
जउ उदयागत आवइ आपणइ, पूरब कृत पुण्य पाप ।
विण भोगवियां ते नवि छूटियइ, करतां कोड़ि कलाप ॥६प०॥
किण जाण्यो थो एहवा कष्ट में रे, पड़सी रतन[1] पडूर ।
पिण एहवी भावी बणी रे, जेहवो कर्म अंकूर ॥७॥प०॥
सिंहल देश किहां दरिया परै रे, किहां मेवाड़ सुदेश ।
किहां सिंघल वीरा री बइनडी रे, किहां महाराण नरेश ॥८॥
कोइक पूरब भव संबंधसुं रे, आइ मिल्यो संजोग ।
भवितव्यता रइ जोग मिलइ इस्यो रे, वणियो एम वियोग ॥९॥
पिण मन माहि हिवै जाणुं अछुं रे, कोइक पुण्य प्रमाण ।
बंधव जी तुम सुं भेटो हुओ रे, तो भय भागो सुलतान ॥१०॥
मात पिता थे बंधव माहरा रे, हिवै तुम सगली लाज ।
सील प्रभाव मुझ आसीस थी रे, जैत करो महाराज ॥११॥प०॥
अविचल नांम नव खंडे करी रे, भांजो अरि भड़वाय ।
राखो पदमणि रतन[2] छुडाइ ने रे, थंभो गढ जसवाय[3] ॥१२॥

१, २, राण ३ थाउ ।

जैत थायज्यो रिपु जीपिनें रे, पूरो सुजन जगीस ।
बादल वीरा ए मुझ वीनती रे, जीवो कोड़ि वरीस ॥१३॥प०॥
साहसि करतां मन वंछित सरै रे, वरदायक सुर होय ।
ए काची काया थिर नवि रहै रे, जग में थिर जस सोय ॥१४॥
इम सती वचने प्रेरियो रे, मन थयो मेरु समान ।
'लालचंद' कहै[1] चढती कला रे, सामीधर्म गुण जाण ॥१५॥

बादल द्वारा राणाको मुक्त कराने की प्रतिज्ञा

दूहा

सुणि वातां मन उल्लसी, बोलें बादल वीर ।
केहरि जिम त्राडकि नें, अतुली बल रिणधीर ॥१॥
बाबा सुणि बादल कहें, सोई रहो सुभट ।
तो भत्रीज हुं ताहरो, खलां करुं तिलवट्ट[2] ॥२॥
एकण पासे एकलो, एकणि साहि कटक ।
बाबा तो हुं बादलो, मारि करुं दहवट्ट ॥३॥
मात पधारो निज महल, पवित्र थयो मुझ गेह ।
चित में चिंता मती करो, जेर[3] करूं सब जेह ॥४॥
पाव धरुं पतिसाह ने, छोडावुं श्री राजान[4] ।
जो वांसे जगदीस छै, तो करस्युं वचन प्रमाण ॥५॥

ढाल (११) मधुकर नी

काम घणा श्री राम ना, कीधा श्री हणमंत रावत ।
तिमहुं श्री रावल तणा, करस्युं काम अनंत रावत ।१।

१ मुनिवर २ खलखट्ट ३ जोज्यो ४ राण ।

बीड़ो झाल्यो बादलइं, आप भुजाबल जोर रावत।
झूकउ मनधरी खलभली, घो नोबति सिर ठउर रावत ॥२॥
सामिधरम सुपसाउलैं, नइं तुम्ह सत पसाय रावत।
परदल नें भांजी करी, ले आवो महाराय रावत ॥३॥बी०॥
जिण तुम सुं इम दाखियो, जावो असुरां गेह रावत।
जीभ जलो[1] तिण मनुष्य री, खत्रीवट न्हांखी खेह रावत ॥४॥
विरुद वखाणी पदमणी, सिर पर लूण उतारि रावत।
सूर सुभट सिर सेहरो, तूं अमलीमाण संसारि रावत ॥५॥बी०
गोरो जी सुणि बोलड़ा, मन तन हरखित दोय रावत।
सुर होवे असुरां मिल्यां, कांयरे कायर होय रावत ॥६॥बी०॥
मन नचिंत तुमे करो, महल पधारौ माय रावत।
बादल बोल न पालटइ, जो कलि उथल थाय रावत ॥७॥बी०॥
सूरिज ऊगै पच्छिमें, मूंकै समुंद मरयाद रावत।
ध्रुव चले पिण न चलइ, सापुरिषां रा साद रावत।

बादल की माता के मोह वचन

महल पधार्या पदमिणि, तेहवै बादल माय रावत।
सगली बात सुणी करी, पासै ऊभी आय रावत॥६॥बी०॥
नैंण झरै मन दुख करइं, मुख मूकै नीसास रावत।
विनो करी सुत वीनवै, किम दीसो मात उदास रावत॥१०॥
मो जीवंतां मातजी, चिंता सी तुझ चित्त रावत।
कांय तूं आमणदूमणी, कहो मुझ स्युं धरी प्रीत रावत ॥११॥

१ बलो।

पूत सुणो माता कहै, सगतें स्यो जंजाल रावत ।
कांय मांड्यो किण रै बलै, ए घर जांणी ख्याल रावत ॥१२॥
पूठै स्युं देखो घणो, आगें पाछे तुम एक रावत ।
तूं मुझ आंधा लाकड़ी, तुं कुल थंभण टेक रावत ॥१३॥बी०॥
जीव जड़ी तुं माहरै, तूं मुझ प्राणआधार रावत ।
तो विण बेटा माहरै, सूनो ए संसार रावत ॥१४॥बी०॥
हिव तूं जूझण ऊमह्यां, पोति समाही काल रावत ।
दांत अछै तुझ दूधरा, अजी अछै तुं बाल रावत ॥१५॥बी०॥
तुझ नें लाज न कोई चढै, गढ में सुभट अनेक रावत ।
म्रास न कोई भोगवां, राय तणो सुविवेक रावत ॥१६॥बी०॥
कदी कीधा जाणो किसा, बेटा तें संग्राम रावत ।
लब्धोदय[1] कहै बहु परै, माय समझावै आम रावत ॥१७॥

दूहा

रिणवट रीत जाणै नहीं, विचि[2] विचि बोले एम ।
किम अणजाण्यो कीजिए, कारिज अनढ़[3] नि तेम ॥१॥
अजी न साधी घर घरणि, कहतां आवै लाज ।
अती उच्छक उतावलो, रखे बिगाड़ै काज ॥२॥
कीधा कदे न आज लगि, एक त्रिणा थी दोय ।
बालक बेटा वादला, किलो किसी परि होय ॥३॥

१ लालचंद २ बजि बजि बोले बोल ३ पूत निठोल ।

बादल का मां को प्रत्युत्तर

तब हसी बादल वीनवै, हुं कित बालो माय ।
पूछुं तुझ नें पय नमी, ते मुझ ने समझाय ॥४॥
पोढुं हिवै न पालणै, फिरि[1] फिरि न चूंखु धाय ।
आड़ो करतो आगलै, थांन[2] न मांगु माय ॥५॥

ढाल (१२) श्रेणिक मन अचरिज थयो, ए देशी

बादल इण परि वीनवैं, मात नहीं हुं बालो रे ।
रिणवट आलिम साह सुं, जोइ करूं ढक चालो रे ॥१॥वा०॥
थापी नै वली उथपुं, राय राणा सुलतानो रे ।
तो सुं कारज ए हुवै, कांय मन में डर आणो रे ॥२॥पा०॥
नान्हइ किसनइ नाथियो, वासिग नाग वडेरो रे ।
नास करइ रवि नान्हड़ो, अंधकार बहुतेरो रे ॥३॥वा०॥
बालूड़ो केहरी बचो, भांजे गैवर थाटो रे ।
तो हुं थारो छावड़ो, रिपु म्हांखुं दहवाटो रे ॥४॥वा०॥
मति जाणो थे मात जी, कुल नें लाज लगाऊं रे ।
गंजण छावो गाजतो, आज करी नें आऊंरे ॥५॥वा०॥
जो पाछा पग चातरुं तो जाणो मति रजपूतो रे ।
कायर वाणी किम कहैं, देखो सुत करतूतो रे ॥६॥वा०॥
सूर वचन रजपूत[3] ना, चित में चिंता व्यापी रे ।
मन मांही बहु खलभली, सीख न तास समापी रे ॥७॥वा०॥

---

१ धूढि न चूंधुं धाइ २ थान ३ सुनि पुत्र नउ ।

वादल की पत्नी का प्रयास

बहुआं नें आइ कहैं, माहरो वचन ज मानो रे।
थे समझावो जाय ने, जो क्युं ही नेह पीछाणां रे ॥८॥वा०॥
सोल श्रृंगार सझि करी, सुकलीणी सुविलासो रे।
जाणे झबकी बीजली, आवी प्रीउ नै पासो रे ॥६॥वा०॥
रूपइ रंभा सारिखी, मृगनयणी गज गेलि रे।
कंचनवरणी कामिनी, साची मोहन वेलि रे ॥१०॥वा०॥
विनय वचन करि वीनवइ, हसत वदन हितकारो रे।
साहिब वीनति सांभलो, तन मन प्राण आधारो रे ॥१२॥वा०॥
साथ सबल पतिसाह नो, मुगल महा दुरदंतो रे।
एकाकी इण परि कहो, किम पूजीजे[1] कंतो रे ॥१२॥वा०॥
कहें वादल सुण कांमनी, जोइ करूँ जे जंगो रे।
वज्र घणो नानो हुवइं, तोडै गिरि उत्तंगो रे ॥१३॥वा०॥
वात करंतां सोहिली, पिण दोहली रिण वेला रे।
सामी एहवइ मंत्रणइ, कांय करो जन हेलां रे ॥१४॥वा०॥
सूर पणै वादल कहै, स्यानैं भय देखावो रे।
तेह नाहिं हुं वादलो, हिव द्युं हेठो दावो रे ॥१५॥वा०॥
बोलइं मोटा बोल, निश्चइं निरवाहइ नहीं।
तिण माणस री मोल, कोड़ी कापड़ियो कहइ ॥१॥
गोला नालि वहै घणा, हय गय रथ भड़ झूझै रे।
घोर अंधार रिण रजकरी, सूरिज सोइ न सूझै रे ॥१६॥वा०॥

1 पहुंचीजइ।

मुगल महाभड़ साहसी, मूंकै दोय दोय बाणो रे।
'लालचंद' पतिसाह स्युं, पूजै केहो किम पाणो रे ॥१७॥बा०

दूहा

शस्त्र ग्रही मोटा सुभट, दयें चौकी दिशि च्यार।
साहि सबल पति एकलो, भलो न एह विचार ॥१॥
तब बादल हसि नें कह्यो, कही किसी थे बात।
रावल छोडावुं रतन, तो गाजन मुझ तात ॥२॥
हुं गंजुं हय गय सुभट, भांजि करुं भकभूर।
सताबीस लख दल सहित, साहि करुं चकचूर ॥३॥
नारि कहै[1] रहो रावलो, किसो जणावो पाण।
अजीस नारी आपणी, साधि न[2] हुवे सुजाण ॥४॥
नारी सुं न्हाठा फिरो, मिटी न बाली लाज।
तो कहो कसी परि जूझस्यो, करस्यौ केहो काज ॥५॥

दृढ़प्रतिज्ञ वीर बादल को स्त्री द्वारा सीख

ढाल (१३) नदी यमुना के तीर उडै दो पंखीया —ए देशी—
तउ वलतो बादल कहै सुण कामनी।
तिण दिन आवीस सेज तुमारे जामनी ॥१॥
जीपी आउं जिण दिन वैरी हुं एतला।
छोडावुं श्री राण कि लोह[3] करी कै भला ॥२॥

१ कहर हुवौ वड़ौ २ सीधी नहीं ३ ला करि भलि भला।

तो दस मास न झाल्यो भार मुझ मात जी।
तें भाखीज्यें वात करुं तिण में कजी ॥३॥

सूरातन मन देखी नारी तब इम कहै।
भलो भलो भरतार सु' मन में गह गहै ॥४॥

हम हैं तुमारी दास कि पग की पानही।
निरवाहैजो वात जेती मुख स्युं कही ॥५॥

मति किणही वातइ ढहि जाहु कि लाजवउ।
वंश बधानउ शोभ विरुद बहु छाजवउ ॥६॥

घालैयो नें घाव घणो साहस करी।
खेसवयों रिण खेत खडग हणी लसकरी ॥७॥

होय छछोहा लोह घणा थे वावयो।
हल करयो हथवाह अरी दल गाहयो ॥८॥

द्यो मति पाछा पाव मरण भय[1] मति गणो।
जीवण थी इणि वात सुजस कांइ द्यो घणो ॥९॥

भिड़तां भाजै जेह मरै निहचै करी।
कानि सुणउं एहवात मरुं लाजइ खरी ॥१०॥

सुभटां मांहि सोभ घणी थे खाटयो।
नव खंडे करी नाम अरी दल दाटयो ॥११॥

सुभट कहावै नाम सहू ही सारिखो।
पण रिण मांहि तास लहिज्यें पारखो ॥१२॥

---

१ जउ।

तिम करयो जिम हुं मन मांहि गहगहूँ ।
छल बल करयो काम घणो कासुं कहूँ ॥१३॥
जीवन मरणे साथ तुमारो मइं कियो ।
हिव करयो हथवाह करी करड़ो हीयो ॥१४॥
भूखा घर नी नार पूछी[1] कुमतो कहै ।
तिण सगलें संसारि बहुत अपजस लहै ॥१५॥
उत्तम राजकुमार सदा सुमतउ दियइ
धीरज कुलवट रीति रहइ जग जस थियइ ॥१६॥
हिव साची मुझ नार जिणें सुमतो कह्यो ।
निज कुल राखण रीत हिवै मन गहगह्यो ॥१६॥
सुभट तणो सिणगार करायो[2] नारीइं ।
बंधाया हथियार भला निज करि लीइं ॥१७॥
निज माता रा चरण नमी चित हरखीयो ।
होय घोड़ै असवार गौरिल घर सरकीयो ॥१८॥
करी जुहार कहि राज रहो तां लगें घरै ।
जाय आउं एक वार कटक पतिसाह रै ॥१६॥
कहै गोरो मुझ वात सुणो तुम बादला ।
तुम जाओ मुझ छांड रहै किम मुझ कला ॥२१॥
काकाजी मन मांहि न तुम चिंता करो ।
रिणवट एको साथ हुसी आपां खरो ॥२२॥

१ पूठी कुमतइ २ सजाओ ।

कौल करूं छुं दक्षिण हाथ देई करी ।
हुं जाऊ छुं चास भास देखण करी ॥२३॥

मेवाडी सुभटों की सभा में

बादल ले आदेश गौरा रावत तणो ।
सुभट मिल्या तिहां जाय साहस मन में घणो ॥२४॥
देखि सभा सगली मनमइं विस्मय थई ।
आवइ नहिं दरवार कदे क्यों आवई ॥२५॥
सुणिज्यइ गाजन नंदण सूर महाबली,
सही विचारी वात कोइक रिण री रली ॥२६॥
बैठा राजकुमार सुभट सहू एवड़ा ।
धसि आयो तिण ठाम (सुभट) सहु हुआ खड़ा ॥२७॥
दे आसण सनमान प्रीयोजन पूछ्‌ही ।
आया बादल राज कहो ते किम सही ॥२८॥
आलोची सी बात बादल विहसी कही ।
जिण थी थी सुभटां लाज राज कुसले रहै ॥२९॥
आलोची निज बात मांडी नै सहु कही ।
राणी देई राय छुडावण री सही ॥३०॥
आलोच्यो आलोच अम्हारो ए अछै ।
कीज्यें तेह विचार कहो जे तुम पछे ॥३१॥
बादल बोले वारु कीयो ए मंत्रणो ।
पिण इक माहरी बात सुणि आलोचणो ॥३२॥

सगतें सुंभट संग्राम करै मन गहगही ।
पिण नवि मूंकं माण बात जें संग्रही ॥३३॥
मान विना नर कण विण कुकस जेहवो ।
'लालचंद' नर टेक न[1] छंडै तेहवो ॥३४॥

कवित्त

अंगीकृत अनुसरइ होइ मापुरिस जु साचा,
अंगीकृत अनुसरइ होइ कुल जातै जाचा ।
अंगीकृत ईस्वरइ जहर पीधउ दुख हंतइ ,
वारिध वाड़व अग्गि वहैं पाणी सोसंतइ ।
काछिवउ कंध वहु धावही, अजहु भार एवड़ सहइ ।
मुनि लाल वयण आदरि जकै, सो सज्जन बहु जस लहइ ॥१॥

दूहा

काया माया कारमी, जात न लागइं वार ।
सूरपणें कायरपणैं, मरणो[2] छै एक वार ॥१॥
तउ ढांढा हुइ किम मरौ, मरउ तउ मरण समारि
पत जास्यै पदमणि दीया, अमचउ एह विचारि ॥२॥
राय लीइं राणी दीइं, जाण्या यदि जूझार ।
मस्तक केस न को रहइ, अपकीरति संसार ॥३॥
नाक मुंकिजो ऊबरयां, केहो जीवन स्वाद ।
देश विदेश छांडो[3] पडो, तजीइं किम कुल मरजाद ॥४॥

---

१ बात निबाहइ २ कोई मरण न टालणहार ३ छांटो मरु-इम रहइ

वीरभाण वलतउ कहइ, बोल्यंइं घणे पराण ।
बादल बात भली कहउ, पिण समझा नहीं तिलमान ॥५॥
बादल बात भली कही, अनेन समझां मोड़ ।
रखे राणी राजा लीयो, तो पति राखो चितोड़ ॥६॥
ढाल १४ म्हारी सुगण सनेही अतमा, ए देशी
आलिमपति अलावदी, ईश्वर नो अवतार रे भाई ।
मुगल महाभड़ जेहनै, लाख सतावीस लार रे भाई ॥१॥आ०॥
एक हुकम करतां थकां, उठै एक हजार रे भाई ।
सगले थोके सावतो, पहुंचीजे किम पार रे भाई ॥२॥आ०॥
कलैं कलै पदमणी राखसुं, राय छंडी हजूर रे भाइ।
पतिसाह प्रति लोपी ने, घूक अंध नित घूर रे भाई ॥३॥आ०॥
कहि बादल सुण कुंवरजी, स्यउ आपां ए सोच रे भाई ।
काइ आलोचइ केहरी, मारंतां मदमोच रे भाई ॥४॥आ०॥
इम करतां जो को मरइ, तउ जगि कीरति होई रे भाई ।
कन्या साटइ पामतां, सुंहगी कीरित सोई रे भारे ॥५॥आ०॥
कुमर कहै इण बात री, कीज्यैं ढील न काई रे भाई ।
सोई अरजून जाणीइं[1], जे वेघो वालै गाय रे भाई ॥६॥आ०॥
रहै पदमणी आपणै, नइं वलि छूटइं राण रे भाई ।
इण बातइ कुण नहिं हुवइ, सुप्रसंन मनहि सुजाण रे भाई ॥७॥
बादल कहै[2] सहू भलो, हुइ आवीसीइ तुम नाम रे भाइ ।
करज्यो वांसइ कुमर जी, सबलो ऊपर सामि रे भाई ॥८॥आ०॥

१ समझिइ, जि कोइ २ बोलइ

पहिली मति ऊँधी करी, आलम तेड्यो मांहि रे भाई।
तेड्यो तो मारण तणो, कीधउ दाव सु नाहि रे भाई ॥९॥आ०॥
जहर कहर मुगल मिल्या, गढ में तीस हजार रे भाई।
छल बल करि नवि छेतस्या, तौ स्यौ सोच हिवार रे भाई ॥१०॥
लसकर मांहि जाइ नै, ले आवुं छुं बात रे भाई।
इम कहि नै अश्वे चढ्या, साहस एक संघात रे भाई ॥११॥आ०॥
ऊतरीयो गढ पोलि थी, निलवट निपट सनूर रे भाई।
अँगे आऊध अति भला, प्रतपै तेज पडूर रे भाई ॥१२॥आ०॥
एकलमल अश्वे चढ्यो, अभिनव इन्द्र[1] कुमार रे भाई।
आलिम देखी आवतो, पूछायो तिण वार रे भाई ॥१३॥आ०॥

सीह न जोवइ चंदबल न जोवइ घर रिद्धि।
एकलड़उ बहुआ भिड़ा ज्यां साहस त्यां सिद्धि ॥

पूछ्यां थी वादल कहै, मेलि करण रै मेलि रे भाई।
जाइ कहउ हुँ आवियउ, पदमिणि तुम नइ गेलि रे भाई।१४।आ०
तुम उपगार करुं वड़ो, मानै जो मुझ बात रे भाई।
सेवक आवी इम कहै, हरख्यो आलिम गात रे भाई ॥१५॥आ०।
तेड़ायो आदरि करी, दीठो अति बलवंत रे भाई।
बेसाण्यो दे बैसणो, मान लहै गुणवंत रे भाई ॥१६॥आ०॥

हंसा जहाँ जहाँ जात है, तहाँ तहाँ मान लहंत।
कग्गा बग्ग कग्ग बग, कग बग कहा लहंत ॥

---

१ अग्नि।

बुद्धिवंत बादल राइ ने, पूछै श्री पतिसाहि रे भाई।
सलाम करी बैठो तिसै, आलिम हूओ उच्छाहि रे भाई ।१७।आ०।
'लालचन्द' कहै बुधि थकी, दोहग दूर पुलाइ रे भाई ।१७।आ०

दूहा

नाम तुमारा क्या कह्यो, किसका है तूँ पूत।
क्या महीना रोजगार क्या, किसका है रजपूत ॥१॥
किण भेज्या किण काम कुं, आया है हम पास।
तब वलतो बादल कहै, बुद्धिवंत हीइं[1] विमास ॥२॥
बोली जाणइ अवसरइ, माणस कहीइ तेह।
बादल इण परि बोलीयउ, जिम बधीयो आलम नेह ॥३॥
बल थी बुध अधिकी कही, जउ ऊपजइ ततकाल।
बानर बाघ विणासियो, एकलड़इ सीयाल ॥४॥
नाम ठाम कहि वीनवैं सुभट चढ्या अभिमान।
तिण मुंकियो छानों मनै[2], पदमणीयें परधान ॥५॥

ढाल (१५)—सइंमुख हुं न सकुँ कही आडी आवै लाज

जिण दिन थी तुम देखीया जिमवा मडसरि साह।
तिण दिन थी पदमिणि मन बसिउ तुम्ह मांहो रे ॥१॥
सुण आलिम धणी। बिरह विथा न खमायो रे,
बात किसी धणी ॥आंकणी॥
ते धनि नारी नारी जाणीइं जेहनिइ ए भरतारँ।
इण थी रूप अवधि अछै, काम तणो अवतारो रे ॥२॥सु०

१ समझ २ पदमनी।

राति दिवस झूरती रहैं, मूकें मुखि नीसास।
नयणे नीझरणा झरैं, नारी अधिक उदासो रे ॥३॥सु०॥
जिण दिन थी थे वीछार्या, नयणे नेह लगाय।
सुख जाणइ यम सारिखो, भुवन भाठी सम थायो रे ॥४सु०॥
तरुणापउ विस सउ लगइ, सोल शृंगार अंगार।
अगनि झालि सम चांदलउ, जालण बालण हारो रे ॥५॥सु०॥
भूषण जाणि भुजंग सा, चउकी चाक समान।
बीछु सम ए विछीया, सिज्या अगनि समानो रे ॥६॥सु०॥
वारु जेह विछावणा, तीखा बरछा जाणि।
पड़दउ तेह पहाड़ सउ, अङ्गण आवइ खाणो रे ॥७॥सु०॥
देह गई सब सूकि नै, नयने नींद हराम।
राति दिवस रटती रहैं, साहिब जी तुम नामो रे ॥८॥सु०॥
भूख प्यास लागै नहीं, चिन्ता व्यापी देह।
कीधी का तुम्ह मोहिनी, निवड़ लगायो नेहो रे ॥६॥सु०॥
मास लोही नामइ रह्यउ, छाती पड़ियउ छेक।
दुक्ख दुसह किम करि सहइ, तुम्ह विरह सुविवेको रे ॥१०॥सु०॥
पलक गिणें एक मास सउ, घड़ीय गिणें छम्मास।
वरस समान दिन नइ गिणइ, इम विरह पींड़इ तास रे ॥११॥सु०॥
तुम्हसुं लागउ नेहलउ, जाण मजीठउ राग।
पट्टकूल फाटे थकें, रहैं त्रागा सुँ लागो रे ॥१२॥सु०॥
तूं जीवन तूं आतमा, गत मति प्राण आधार।
सासें सासें संभरइ, पद्मिणि वार हजार रे ॥१३॥सु०॥

मुख करि किम कहतइ बणें, जे तुम्ह सेती राग।
ते मन जाणै तेहनो, लागो जिण विधि लाग रे ॥१४॥सु०॥
विगति लहै विरहां तणी, विरही माणस तेह।
'लालचन्द' कहइ मोवतइ, कहियइ न जावइ तेह रे ॥१५॥सु०॥

दूहा

चीठी दीधी चूंपस्युं, वांची देखें साहि।
समाचार विगतें सहित, सगला ही इण मांहि ॥ १ ॥

वइत हजार दरवदिल मेर सजिइरिया रु चिहुँ नमसु
बुइ कुनम् आदिल केवद रद हजार ॥ १ ॥
तन रांर वाव साजिम् रंग हाजितार तार दीगर,
सरोजने स्तेव जुज वार योर यार ॥ २ ॥

मइ मन दीनो तोहि, जा दिन तो दरसन भयो।
अब एती वीनति मोहि, प्रेम लाज तुम निरवहौं ॥२॥
मइ मन दीनो तोहि, सकइ तो ऊडि निवाहीयं।
नातरि कहीइ मोहि, हुं मनि बरजउं आपणउ ॥३॥
निसि वासर आठउं पहर, छिण नहिं विसरूं तोहि।
जिहि जिहि नइन पसारहुँ, तिहि तिहि देखुं तोहि ॥४॥
आठ पहोर चोसठि घड़ी, जबही न देखुं तुझ।
न जाणुं तइं क्या कीया, प्राणपीयारे मुझ ॥५॥
दोबैतां दूहा सहित, चीठी एक उपाय।
बादल दीधी साहिनै, अकलि थकी उपजाय ॥६॥
बले कहै आलिम तणा, यदि आया परधान।
सुभटां मरणो आंगम्यो, पिण न तजै अभिमान ॥७॥

वीरभाण राजा सहित, सुभटां नै समझाय ।
ज्युं ज्युं कान ढेराई नै, हुं आयो तुम पाय ॥८॥
राणी मूँक्यो मो भणी, घणी वीनती कीध ।
हिव हुं जाणुं तुम तणी, होसी मनोरथ सिद्धि ॥६॥

ढाल (१६)—वंदणा करुं वारवार-ए-देशी-प्राहुंणारी

वालेसर हो वली परभातैं बात, कहस्युं आइ होसी जीसीजी ।
दिलीसर हो वांची चीठी बात, सीख करां जावां घरे जी ॥१॥
जोती होसी वाट, विरह व्यथा पीड़ी थकी जी ।दि०।
जाय टालुं उचाट, तुम संदेश सूधा करी जी ॥२॥
इण परि सांभली बोल, पदमणि प्रेमइ बांधियो जी ।
आलिम मन झकझोल, कीधो वादल वाय करै जी ॥३॥
मूँकै मुख नीसास, चीठी वांचै चूंपस्युं[१] जी ।
आलिम मन मृगपाश, पदमणि कागद पाठइयो जी ॥४॥
नयणां रे नीर प्रवाह, विरह अगनि व्यापी घणी जी ।वा०।
ए अचिरज मन मांहि, भभकइ अधिकी भीजतां जी ॥वा०॥५॥
हृदय समुद्र अथाह, मांही विरहानल दहइ जी ।वा०।
नयन वीजलि रइ नाह, बूंठइ न्याय न वीसमइ जी ॥वा०॥६॥
घल घट हलीयो रे जाय, प्रेम सुणी पदमणि तणउ जी ।वा०।
मुख सुं कागल लाय, वार वार चुम्बन करइ जी ॥वा०॥७॥
खूब लिख्या इण मांहि, संदेशा साचा सहु जी ।
दिलीसर हो उठे कराहि, काम तणै बाणै हण्यो जी ॥८॥

१ प्रीत सूँ ।

अहि सम आलिम साहि, साहि न सकतो को सही जी।
पदमणि मंत्र चलाइ, बादल गारूड़ वसि कीयोजी ॥६॥
पाहुणउ तूँ हम आंज, कहुँ ते महिमानी करां जी ।बा०।
सगली तुम्ह नइं लाज, बादल राज हमां तणी जी ॥बा०॥१०॥
सुभटां सहु समझाय, साहि कहै बादल सुणो जी।
सगली[1] तुम नें लाज, थापैयो एहिज मतो जी ॥११॥
करतां तुम उपाय, जो किम ही करि पदमणी जी।
हाथ चढै हम आय, तो देखे कैसी करु जी ॥१२॥
इम कहि हय गय सार, लाख सोनइया रोकड़ा जी।
वारु वले[2] सिरपाव, वकस कीया बादल भणी जी ॥१३॥
रुको यूं तुम हाथ, प्रीत वचन मांहि लिखुं जी।
जाइ पड़ें पर हाथ, आलिम इम[3] वचने नहीं जी ॥१४॥
तुम विरह की बात, वचने करि कहिस्युं घणी जी।
चिठी आवै न घात, कोई जाणै भांजै मतो जी ॥१५॥
महिर करी हिव मोहि, बीदा करो वेघो घणो जी।
आलिम साथे होय, पोलि लगे पहुँचावीयो[4] जी ॥१६॥
धन लेइ आयो देखि, हरख्यो माता नो हीयो जी।
वंछित फल विशेष, "लालचंद" धरमे सहीजी ॥१७॥

दूहा

खुशी हुई नारी खरी, धन दिवस निज जाणि।
गोरोजी[5] मन हरखीयो, करसी काम प्रमाण ॥१॥

१ दूध न डांग दिखाय, २ वस्त्र अपार ३ इलम वच नहीं जी
४ पहुँतो कीयो जी, ५ गोरोपिण मन गरजीयो।

पदमणी पिण मन गहगही, ए मेलवसी भरतार।
सुभट सहू मन संकीया, ऐ ऐ बुद्धि भंडार ॥२॥
सगत छिपाई नवि छिपइ, सहजइं प्रगटइ तेह।
गांठड़ि इं जोइ बांधिइ, तउही अगनि दहेहि ॥३॥
जइ घट विधना गुण दीपइ, निंदइ मनि मतिमन्द।
जउ कुंडे करि ढांकीयइ, तउ छिप्यो रहत कत चंद ॥४॥
एण समै आया तिहां, जिहां बैठा राय राण।
मांड्यो एहवौ मंत्रणो, बादल बुद्धि प्रमाण ॥५॥

ढाल (१७)—साधजी भलें पधार्या आज ए-देशी

सोवन कलश सुहामणाजी, करी जरी रमझोल।
सहस दोय साबत करो जी, चित्र रचित चकडोल ॥१॥
कुमरजी मानो ए मुझ बात, जिम कारज आवइ धात ।कु०।आ०
तिण मांहि दोय दोय भला जी, जे सलह[1] पहरी जुवान।
शस्त्र घणै करि साबता जी, बैसांणो बलवान ॥२॥कु०॥
पदमणि री विच पालखी जी, सखर करें सिणगार।
ढांको पदमिणी वस्त्र स्युं जी, भमर करइ गुंजार ॥३॥कु०॥
गोरो जी बैसाणयो जी, पदमणि जी रे ठाम।
पालखीयां सखीयांतणी जी, सुभट करो विश्राम ॥४॥कु०॥
लारो लार लगावयो जी, छेटि म राखो काय।
केलवणी करयो इसी जी, जिम बाहिर न दीखाय[2] ॥५॥कु०॥

---

१ जोसण २ लखाय।

गढ थी मांड सेना लगें जी, करयो हारा डोर।
वार घणी विलंबयो जी, जतन करेयो जोर ॥६॥कु०॥
पातिसाह पासें जाईइं जी, हुं करस्युं जे बात।
रावल जी छोडायस्यां जी, पाछै करेस्यां घात ॥७॥कु०॥
भलो भलो सुभटे कह्यो जी, थाप्यो एहज थाप।
इम आलोच आलोचतां जी, प्रात हुओ गत पाप ॥८॥कु०॥
सुभट सहु समझाय नें जी, चढीयो बादल वीर।
तिम हिज पहुंतो लसकरे जी, धरतो तन मन धीर ॥६॥कु०॥
करी तसलीम ऊभो रह्यो जी, हरख्यो आलिम साहि।
पूछे बात कहो किसी जी, काम कीयो के नांहि ॥१०॥कु०॥
बहुत निवाज तुझ[1] कुं करुं जी, बादल बोल्यो साच।
सिरै चढें कारिज सहू जी, साची[2] बादल वाच ॥११॥कु०॥
सुभटा नें समझाय ने जी, नाकें आई नीठ।
पदमणी नी आणी अछै जी, पालखीयां गढ पीठ ॥१२॥कु०॥
सुभट सहु मिलि विनती जी, कीधी छै सुणि सामि।
जोख पदमणी री करो जी, तो राखो हम माम ॥१३॥कु०॥
पेस करां जो पदमणी जी, तुम[3] उपजै वीसाम।
विण वीसास किसी परें जी, ह्वै सहु ने रंग रास ॥१४॥कु०॥
कहि आलिम कैसी परैं जी, तुम वीसासउ मत्त।
'लालचंद' कहै सांभलो जी, बादल कहेज वचन ॥१५॥कु०॥

१ बहुउ २ अविचल ३ जो।

दूहा

मन मांहि संके सुभट, पदमणि दीधी राय ।
जो छूटे नहिं तो रखे, दोन्यु स्वारथ जाय ॥१॥
तिण हेते लसकर तुमे, विदा करावो साहि ।
सहस पंच[1] राखो नखें[2] जो डर आणो मन मांहि ।
इम सुनि कहइ उच्छक थको, काम गहेलो साह ।
कहो कुण थें हम डरइं, हम सूं जगत डराय ॥३॥
चतुर किहां तूं चातर्यो, बकें जु अइसी बात ।
हम सुं डरै जो सुर असुर, मानव केही मात ॥४॥
कूच तणो कीधो तुरत, आलिम साहि हुकम ।
लशकर के लोध्यां[3] घणो, पाम्यो सुख परम ॥५॥
सहस च्यार साऊ सुभट, रहो हमारे पास ।
अवर कटक सब ऊपड़ो, ज्युं हिन्दु हुवै वीसास ॥६॥
सहस च्यार पासे रह्या, अउर चल्या ततकाल ।
कहै साहि कीधो कीयो, अब बादल कओल सुपाल॥७॥
ढ़ाल (१८) बलध भला छे सोरठा रे-एदेशी
लाख सोनइया रोकडारे लाल, सखर देई सिर पावरे सरागी ।
बादल ने आलिम कहे रे वेगउ पदमिणी ल्याव रे स० १
बुद्धि भली बादल तणी रे लाल, देखी खेलइ दाव रे स० ।
ले लखमी घर आवियो रे लाल, माता हरख अपार रे सरागी ।
वले संकेत वणाइयो रे लाल, सुभटां ने समझाय रे ॥२॥बु०॥

१ वार २ सुभट ३ लोके सबइ ।

ले आवयो पालखी रे लाल, लारो लार लगार रे सरागी ।
खत्रीवट राखेजो खरी रे लाल, कमियन करजो काय रे ॥३॥बु०॥
इम कहि आघो चल्यो रे लाल, ले लारें सुखपालरे सरागी ।
आलिम देख्यो आवतो रे लाल, बूलायो दरहाल रे स०॥४॥बु०॥
बुद्धिवंत तो अधिको हुंतो रे लाल, राघव चेतन व्यास रे सरागी
सामीद्रोह पणाथकी रे लाल, छल न लखांणो तास रे ॥५॥बु०॥
कहे वादल आलिम भणी रे लाल, पदमणी वीनती एह रे सरागी।
अब हुं आई तुम घरे रे लाल, निवहड़ करेज्यो मेह रे ॥६॥बु०॥
साची माया मन सुद्ध सु रे, मान महत सोभाग रे स०
मउज एहिज मांगु छछु रे लाल राखेज्यो मन राग रे स० ॥७॥बु॥
घरे महल तुम्ह कइ घणा रे लाल, खेल करउ मनखास रे स०
पिण पटराणी मुझ भणी रे लाल, करजो एहअरदास रे स०।८।बु०
आलिम कहे तुम ऊपरे रे लाल, नाखु तन मन उवारि रे सरागी
जीव थकी पिण वालही रे लाल, भावे तु मारि उगारि रे ॥९॥बु॥
नारि एक करइ नहीं रे लाल, तुझ नख एक समान रे स०
तुम सेवक हरमां सवइ रे लाल, मइ बंदा सुलतान रे स० ।१०।
तुम कारण[1] हठ मैं कीयो रे लाल, लोपी वचन ग्रह्यो राय रे सरागी
राणी ले आवो वादलो रे लाल, ढील न कीज्यो काय रे ॥११॥
एम कही पहरावियउ रे लाल, ले आयो बकसीस रे स०
प्रमुदित मन परिजन हुओ रे, साहस वसि जगदीश रे।स०॥१२॥

१ काजे ।

'घोवत'[1] पग थे आवियो रे लाल, इम सुभटां समझाय[2] रे सरागी
आयो वले आलिम कनै रे लाल, वारु वात वणाय रे ॥१३॥बु॥
परगट हुई पालखी रे लाल, सोवन[3] कलस सोहात रे सरागी।
वार वार विचमें फिरै रे लाल, वादल पदमणी वात रे ॥१४॥बु॥
होठ बुद्धि जेहने हुवइ रे लाल, दोहरी केही वात रे सरागी।
लालचंद कहि बुद्धि थकी रे लाल, वादल खेलइ घात रे ॥१५॥

दूहा

फिर फिर पदमणिरै मिसे, करतो वादल वात।
रह्यो पहोर दिन पाछलो, तेहवै पूगी[4] घात ॥१॥
लसकर पिण अलघो गयो[5], जूमण वेला जाणि।
बड़े वेर हम कुंभई, वादल[6] कहें ए वाणि ॥२॥
एक वार रावल ईहा, मुंकी हमारे पासि।
दोय च्यार वातां करी, आवुं तुम आवासि ॥३॥
हाथें करि परणी हुंती, लोक तणें व्यवहार।
सीख करी पुंसली भली, आवण रो आचार ॥४॥
पदमणी बोल सुणी ईसा, सुणि वादल कहै राय[7]।
भली बात पदमिणी कही, हम खुशी हुआ मन मांय ॥५॥

१ थोभत २ सीखाय ३ देखि आलम तुख जात रे ४ पुहती
५ रह्यो ६ सुनि वीनति सुलतान ७ साहि।

ढाल— (१६) सदा रै सुरंगा थे फिरो आज विरंगा कांय ए देशी
साची कही ए पदमणी, जेहमें एहवो सुविचार रे लाल।
आलिम वले वले इम कहै, धन भगतिवती भरतार रे लाल॥
बुद्धि करी रे बादलैं, भलो सांमी ध्रम प्रतिपाल रे लाल॥बु०॥१॥
तुरकें तुरत हुकम कीयो, जावो बादल आज रे लाल।
रावलजी छोडाय ने, हम मेलो पदमणी राज रे लाल॥२॥बु०॥
हुकम लेई नें आवीयो, जिहांछै रतनसेन महराण रे लाल।
करी तसलीम ऊभो रह्यो[1], राय कोप चढ्यो असमान रे लाल ३
फिट रे वैरी बादला कांई, सांमीद्रोही कीध रे लाल।
खत्रीधर्म खोयो तुमे, मो साटै पदमणी दीध रे लाल॥४॥बु०॥
निरमल कुल मइलो कीयो, मूडी खरीय लगाई खोड़ि रे लाल।
ते निसत्त हुया डर मरणरइ, मुझ लाजगमाई छोड़ि रे लाल॥५॥
बलतो बादल वीनवैं, ए अवर अछै आलोच रे लाल।
भलो होसी तुम भागस्युं, स्युं आणो मन में सोच रे लाल॥६॥
भूप चाल्यो मन समझि नइ, तब आलिम भाखें एम रे लाल।
राय आणो पदमणि मेलि नें, जिम स्त्रीख समपुं हेव रे लाल॥७॥
पदमणी दिशि राय चालीयो, बैठो पालखीयां मांहि रे लाल।
तब बात सहु साची लखी, बादल री बुद्धि सराहि रे लाल॥८॥
वेलां नहीं बातां तणी राय हुउ हुसियार रे लाल।
पालखीयां री सेन में, होय पहुंतो गढ रै पार रे लाल॥६॥बु०॥

---

१ जिस्यै।

गढ में पहुंचि बजाड़यो, जांगी ढोल निसाण रे लाल।
थे[1] पहुंता म्हे जाणस्यां, साचो ए सहिनाण रे लाल ॥१०॥बु०॥
बात सुणि हरखित थयो, तुरत गयो गढ मांहि रे लाल।
कुशले छूटा कष्ट थी, जाणे सूरिज मूक्यो राह रे लाल ॥११॥
आणंद मन मांहि ऊपनो, मन हरषित पदमणी नारि रे लाल।
गढ में रंग वधामणा, धवल मंगल जय जय कार रे लाल ॥१२॥
पदमणी शील प्रभाव थी, बले बादल बुद्धि प्रमाण रे लाल।
'लालचंद' कहै जस घणो, कुशले छूटा श्री राण रे लाल ॥१३॥

दूहा

सहनाणी पूरण भणी, हरषित तणो सहिनाण।
नोवति[2] ढोल वजाड़ियां, घणा घुरइ नीसाण ॥१॥
सुणि बाजा गाज्या सुभट, उठ्या योध अनम्म।
नवहथा जित भारथा, माणस रूपी जम्म ॥२॥
राघव मुख कालो हुओ, नवि लिखीयो परपंच।
कूड़ घणो कीधो हुंतो, सीधो काम न रंच ॥३॥
सामी काम हणमंत[3] जाणयो, गोरो गुणह गंभीर।
अरिदल देखी उलस्यो, सूरातनह सरीर ॥४॥
सुभट धस्या हुइ सामठा, मुखि गोरउ रिम राह।
अंग अंगरखी सजी, बगतर सबल सनाह ॥५॥

१ तब २ आंगी ३ हनुमानसो।

ढाल—(२०) नाथ गई मोरो नाथ गई ए देशी।

दिल्ली का नाथ, हिव तु' देख हमारा हाथ मियां ऊभो०।
उभो रहें रे ऊभो रहें, ऊभो रहें
ऊभो रहे मत छोड़ पाउ, जो पदमणी परणेवा चाह ॥१॥
मीयां जी ऊभा रहो।
अम ऊभा तुम हुंती खंति, पदमणि परणेवा बहु भंति ॥२॥मी०॥
मैं आंणी छै जे तुम काज, ते हिवै तुझ देखाउं आज। मी०।
राणी जाया च्यार हजार, सूर सबल मोटा जूझार ॥३॥मी०॥
दोड़या ले हाथे करवाल, धूम मचायो मांड्यो ढक चाल ॥४॥
दीठा ते दिली रे नाथ, सगलो बूलायो निज साथ ॥मी०॥५॥
रे रे बादल कीधो कूड़, सगलो लसकर[1] मेल्यो मूड़॥मी०॥५॥
रिण रसीयो आलिम रंढाल, हलकारया जोधा जिम काल।
करी किलकी जिम दोड्या देत, कायर प्राण
तजे[2] निकसी जैत ॥मी०॥६॥
कठत करें मीलिया दल होइ, जाणे जलहर[3] घन अति घोइ।
आई जोगणी जाणे आडंग, जुड़सी आलिम बादल जंग ॥७॥
भुजा[4] बले आलिम सु' एम, बोले बादल गोरो जेम[5] ॥मी०।
दिली सु' चढि आयो साहि, हिवैं भिड़तो भागै मति जाय ॥८॥
मु'डीयो तो हिव जासी माम, मांटी छै तो करि संग्राम ।मी०।
कहै आलिम क्या करै खुदाय, तें तो हम सु' खेल्यौ डाय ॥९॥

१ कारिज २ निकास्वइ लेत, ३ जलद कालाइपि होइ ४ मूकि
५ हेव।

मांहो मांहि मांड्यो जोध, ऊछलीयो सूरातम क्रोध । मी० ।
छूटण लागा कुहकबाण, हथनालां करती घमसाण ।। मी०।।१०।।
सर छूटइ करता सणणाट, बकतर फोड़ि करै बे फाट ।।मी० ।
ध्रुव वाजें बरछी धीब, भाजै कायर लेई जीव ।। मी०।।११।।
ऊडी रज आकाशे जाय, रवि जिण थी मालिम न थाय ।।मी०।।
घोर अंधारे जाणे घोर, गाजे बाजै नाचै मोर । मी० ।।१२।।
धड़ धड़ वलय धारू जल धार, चमकै बीजल जिम जलधार ।
तूटै सन्नाहे तलवार, ऊडइ तिणगा अगन सुभाल ।।मी०१३।।
खल हल खलक्या लोही खाल, पावस रित जाणे परनाल ।मी०।।
रुहिर मांहि पंपोटा[1] थाय, दोड़ी[2] जोगणी पात्र भराय[3] ।।१४।।
करवाला धड़ फूटै घाव, छंछउ छलि कीधो भिड़काव ।।मी० ।
रुहिरज[4] प्रगटउ परिकास, नाच्यो नारद कीधो[5] हास ।।१५।।
गुडीया जाणे[6] जेम पहाड़, सूर भिड़तां थाए आड ।।मी० ।
मस्तक विण धड़ जूझइ अपार, करि करवाल करंता मार ।।१६।।
खीजे वाह्यो सुरइ खग्ग, आधउ तूटि रह्यउ सिरि नग्ग । मी० ।
फाबइ सिर ऊपरि खुरसाण, सूर लह्यो
जाणइ स्वर्ग विमाण ।।मी०।।१७।।
झड़ ओझड़ वाहइ रिणघोर, जूझइ राणी जाया जोर । मी० ।
'लालचंद कहै समझें सूर, दोन्यूं दल वीरा रस पूर ।।मी०।।१८।।

१ पंखोटा २ जाणे उधा ३ तिराय ४ रुधिर ५ हासउ हास
६ गयवर ।

दूहा

ऊभी जय जय ऊचरै, ले वरमाला हाथ ।
अपछर आरतीयां करै, घालै सूरां बाथ ॥१॥
डिम डिम डमरू वाजतां, साथै भूत बहु प्रेत ।
रुंड (तणी) माला संकर रचै, सिलो करै रिणखेत ॥२॥
जासक पीवें योगणी, भरि भरि पात्र रगत ।
डडकारा डाकणि करै, जिण दीठइ डरै जगत ॥३॥

ढाल (२१) कड़खा री—गच्छपति गायइ हो जुगप्रधान जिनचंद

जूझै महाभिड़ मुगल हिन्दू सबल सेन सनूर ।
तिण मांहि मांझि आइ जुड़ीया नांखि फोजां दूरि ॥१॥
गोरिल्ल गाजियो रे अरि गजां भांजन सिंह ।
वादल वाचिउ हो भारत (में) भीम अबीह ॥२॥गो०॥
आलिमपति अलावदीनह मुगल्ल मीर मसत्त ।
रावत गोरिल्ल वीर वादल जानि मैंगल मत्त ॥३॥गो०॥
धूजियो धड़ हड़ मेरु पर्वत चढी धरणी चक्र ।
जम वरुण जालिम डरया दिगपति संकीया मन सक्र ॥४॥गो०॥
हैं कंप हूआ नाग वासिक ईश ब्रह्मा रूप ।
मुख करै ऊंचो वेलि रै मिस देखि डरइ अकूप ॥६॥गो०॥
वाहइ जलोह छछोह हाथें करइं कंध कड़क
घण घणा हाथें हण्या घण घण पड़े योध पड़क[1] ॥७॥गो०॥

---

१ दड़क ।

विहू बाथ घालै घाव घालै डला होवै दोय ।
सनाह तूटै रगत फूटै पुरज पूरजा होय ॥८॥ गो०॥

चुचूइ धारां वहै सारां माचीयो झड़ झूझ ।
छिन छिन्न धाए लोह लागा रह्या मांहि अलूझ ॥९॥गो०॥

बड़ बड़ा सामंत योध जालिम भिड़ैं[1] वादो वाद ।
अति अधिक सूरातन वसै आवै न खेड़ा आदि ॥१०॥गो०॥

गुड़ गुड़ंत गुहीर नीसाण गाजै देखि लाजै मेह ।
घाव पड़ै तिण घाव नाचै धाम धूमी देह ॥११॥गो०॥

रिण चाचरैं रजपूत कूदैं करै हाको हाक
कूट कुटे कीया कण कण मुगल आया[2] नाक ॥१२॥गो०॥

आलिम अरेरे अकलहीणा अंध साचा ढोर ।
इम कही खड़ खड़ खड़ग वाहे तड़ातड़ि रिण घोर ॥१३॥गो०॥

हुसीयार हुओ हथीयार वाहो रही दिल्ली दूरि ।
किहां अकलि[3] हीणा एह बंभणा अकलि दीधी कूर ॥१४॥गो०॥

गृह मात तात अर भ्रात बंधव नेह नाण्यो कोइ ।
चितारीया नहिं माल मिलकत सुक्ख नारी कोय ॥१५॥गो०॥

होइ लोह गोला मुगल दोला जोर जुड़ीया जंग ।
हैवरा गलि गज गाह बंधै रह्या[4] विडद अभंग ॥१६॥गो०॥

वाजीया सिंधु राग वारू भलो मारू भेद ।
जिहां भाट चारण डुंब बोलइं विड़द मनह उमेद ॥१७॥गो०॥

१ विरुद्ध, २ आण्या, ३ बुद्धि ४ बह्या ।

सांभलें चीलां बाप दादा सूरमा न समाय।
जूमतां सुभटां खैंच निज रथ अर्क देखैं आय ॥१८॥गो०॥
तिण[1] अओसर गोरिल वीर धसीयो जिहां आलिम साहि।
वाही वारू घाव[2] घालै खड़ग सबलो ताहि ॥१९॥गो०॥
आगोज भूंडो लेय पाघड़ साहि मुहुडै मुंक[3]।
गोरिल बोलै फिट्ट तुझ नें जाति थारी[4] में थूक ॥२०॥गो०॥
भाजंतां नइ घाव घाल्यउ जाय क्षत्री धर्म
वीनवइ बादल छोड़ि काका जाण दूयो बेशर्म ॥२१॥
उपरि ऊभा किलो देखै रावल भाण रतन
सहु मिली भाखइ धन बादल गोरिल धन ॥२२॥गो०॥
धन सामीधर्मी वीर बादल कहै पदमणि एम।
जिण विना माहरो पुरुष[5] इण भव छूटतो कहो केम ॥२३॥गो०॥
तू जीवज्ये कोड़ाकोड़ि वरसां माहरी आसीस।
दिन दिन ताहरो चढत दावो करो श्री जगदीस ॥२४॥गो०॥
खल हण्यो खत्रीवट लीक राखी, जगत साखी नाम।
गोरिल रावत रिणे रहीयो, कीयो साचो[6] नाम ॥२५॥गो०॥
लूटीयो ल्हसकर आप वसि कर छोडियो आलिम।
जीत्यो पवाड़ो धर्म आडो आवीयो कृत कर्म ॥२६॥गो०॥
केई न्हासी छूटा मरी खूटा कीया अरीअण जेर।
जीवतो मूंक्यो साहि आलिम घालि सबलं घेर ॥२७॥गो०॥

१ इण २ बाथ ३ मुक्क ४ मांहि चक्क ५ दुक्ख ६ साको ताम।

कहै साहि सुण सामंत बादल कीयो तैं उपगार
जीवीदान दीधो सुजस लीधो झालि गढ रो भार ॥२८॥गो०॥
बादल आगै हारि खाधी सीख मांगइ साहि।
एकलो आयो आप असुरां दलां बूजत साहि ॥२९॥गो०॥
बीजली[1] मुहें खल खेत्र वेड़े जैत्र पामी जंग।
पूरो पवाड़ो किलें गोरिल सूर बादल संग ॥३०॥गो०॥
अन्याय मारग जैति न हुवै, जोइ सबलो होई।
एकलै डीलै गयो आलम, एह परतख जोई ॥३१॥गो०॥
नीति मारग जइति पामइ, रहइ राज अखंड।
कह लालचन्द जगत्ति ऊपर, नाम तेज प्रचंड ॥३२॥गो०॥

दूहा

दोय दिनां के अंतरैं, आलिम एक खवास।
निमा साम वेला जई[2] पहूंता ल्हसकर पास ॥१॥

ढाल— (२२) वाल्हेसर मुझ वीनती गोड़ीचा। राग-मारू

ल्हसकर मांहि मुंकीयो राजेसर
करिवा खबरि खवास रे राजेसर
ऊमराव आया वही दीलीसर
मुगल पाठण उल्लास रे राजेसर ॥१॥ह०॥
करी तसलीम ऊभा रहया राजेसर बेकर जोड़ी ताम रे दि०।
बूझै आलिम साहि सुं रा०कटक गयो किण काम रे दी० ॥२॥

१ [illegible]ी २ थई।

भूखा त्रिसीया एकला रा० दीसे ए कूण हवाल रे दी० ।
किहां पदमणी परणी तिका रे रा० ए तो दीसै छै ख्याल रे दी०।३।
कहै पतिसाह कीधो घणो रा० बादल हम सुं कूड़ रे दी० ।
सइतानी सबली करी रा० ल्हसकर मेल्यो धूलि रे दी० ।।४।।ल्ह०।।
पदमणी रे मिसि पालखी रा० कीधी पांच[1] हजार रे दी०
तिण में दोय दोय नीकल्या रा० योध करंता मार रे दी० ।।५।।
कहर जूझ हम सुं कीयो रा० कटक कीयो कचघाण[2] रे दी०
हम है या तौ ऊबरे रा० मया करी रहमान रे दी० ।।६।।ल्ह०।।
हम भी भूले मोह[3] तैं रा० कछु कीनो पदमणी टौन रे दी०
तोही हम आगइ टिके रे रा० नहितर हिन्दू कौन रे दी० ।।७।।
इम कही असवारी करी रा० नाक मुंकीनइ साहि रे दी०
ज्यूं आयो तिणही परइं रा० पहुंतो दीली मांहि रे दी० ।।८।।
आलिम महल पधारिया रा० आई हरम अनेक रे दी०
विनो करी पाए पड़ी रा० विनती करै सुविवेक रे दी० ।।९।।ल्ह।।
देखावो बे पदमणी रा० हम कुं देखण हुंस रे दी० ।
कैसी चतुराई अछै रा० रूप जोबां[4] कैसी रूंस रे दी० ।।१०।।ल्ह।।
पदमणी का मुंह काला किया रा० हम खैर करी है खुदाय रे दी०
करीई खमा बीबी कहै रा० हम लागो तुम बलाय रे दी० ।।११।।

दूहा

कहि[5] ममा बैठो तुमां, धरो मन मइं ग्यान ।
धरा पालो अविहड़ थे, हीइं खुदाय धरि ध्यान ।।१।।

---

१ दोह २ कतलाम ३ गरब मइ ४ जु ५ कहि मामा बेटा तुमां राखउ बहुत गुमान । नारि काज कलमथ करउ घरेउ न मन मइं ग्यान ।

इन्द्र चंद्र नागेन्द्र सब, जस सेवै सुर नर राय ।
तिण रावण राज गमाड़ीयो, नारी तणै पसाय ॥२॥
बेटा काहे कुं फिरो, करते आप कलेस ।
बैठा जौख कह्यो इहां, दिल्ली गढ निज देश ॥३॥
हिव बादल की वारता, सुणयो देई कान ।
पातिसाह न्हाठा[1] पछै, रिण सोध्यो बादल जाण ॥४॥
जग में जस पसर्यो घणो, खाट्यो बड़ो विरुद ।
गढनी पोलि उघाड़ीयां, लोक कहैं जसवद[2] ॥५॥

ढाल (३३)

करड़ो तिहां कोटवाल एदेशी राग—खंभाइती जाति सोलाकी या मारू

रावल रतन सुजाण, सनमुख आए सामेलो करे ।
सिणगार्या बाजार, हय गय रथ पालखीया बहु परेजी ॥१॥
मिलया श्री महाराज, बादल सेती नेह घणैं करी जी ।
ले आया गढ मांहि, बैसाणी गज छत्र सिरइ धरी जी ॥२॥
देई देश भंडार, बादल नइ कीधो अधराजीयो जी ।
तैं राखी गढनी लाज, आज पछै ए जीव तुमे दीयो जी ॥३॥
तु जीवे कोड़ि वरीस, धनमाता जिण तु गरभें धर्यो जी ।
द्यै पदमणी आसीस, तैं उपगार अम[3] थी बहु कर्यो जी ॥४॥
मस्तक तिलक बणाय, भरि भरि थाल वधावै मोतियां जी ।
निज बंधव करि थाप, पहुंचावै निज घरि उछव कियां जी ॥५॥

१ चाल्या २ सद्द ३ बड़ो अमने ।

आवंतां निज गेह, चउहटइ च्यारों दिश नारी मिली जी ।
बोलइ कीरति बाल, मोतियां वधावै गावइ मन रली जी ॥६॥
इम आयो निज गेह, सयण संबंधी परजन सहु मिली जी ।
प्रणमै जननी पाय, माताजी आसीस दीइं भली जी ॥७॥
सझि करि सोल शृंगार, अधर बिंब[1] निज नारियां जी ।
आवी आणंद पूर, धवल मंगल करती सुखकारीयां जी ॥८॥
हिवें गोरिल की नार, पूछै तुम काको रिण किम रह्यो जी ।
कहो किम वाह्या हाथ, किम अरियण मारया किम जस लह्यो जी
कहै बादल सुणो वात, केहो वखाण करां काका तणो जी ।
ढाह्या गैंवर घाट, मुंगलां सुभटां संहार कीयो घणो जी ॥१०॥
राल्यो आलिम एक, तुरकां सकल सेन मारी करी जी ।
तिल तिल हूओ तन, हुओ प्राहुणो अमरापुर वरी[2] जी ॥११॥
राखी गढ री लाज, उजवाल्यो कुल गोरेजी[3] आपणो जी ।
इम सुणी गोरिल नारि, रोम रोम जाग्यो तन सूरापणो जी ॥१२
विकसित वदन सनेह, भाखै सुणि बेटा रिण बादला जी ।
वहैलो वारि म लाय, दोहरा बैठा ठाकुर एकला जी ॥१३॥
विच छेटी बहु थाय, रीस करेसी अमने श्री राय जी ।
काकी ठाम लगाय, ढील कीयां हिवमइं न खमाय जी ॥१४॥
सुणि कहै बादल वात, धन धन माताजी ताहरो हीयो जी ।
सतवंती तूं साच, धन तें आपो आप सूधारीयो जी ॥१५॥

१ आमोचड ले २ खरी ३ गोरिल ।

खरचै धन नी कोड़ि, तुरंग¹ चढि सिणगार सहू सभी जी।
आगनी कीयो प्रवेश, उचरति मुख श्री राम राम जी ॥१६॥
पहुंती प्रीउ नै पासि, अरध आसण दीधो आणंद थयो जी।
जग पसर्यो जस वास, 'लालचंद' कहै दुख दूरइं गयो जी ॥१७

दूहा

सूर कहावै सुभट सहू, आप आपणै मन।
दाव पड्यां दुख उधरैं, ते कहीये धन धन ॥ १ ॥
सांमीधर्म बादल समो, हुओ न होसी कोय।
युद्ध जीत्यो दिल्ली धणी, कुल उजवाल्या दोय ॥ २ ॥
रावलजी छोडाईया, नारी² पद्मणी राख।
बिरुद वड़ो खाट्यो वसु, सुभटां राखी साखि ॥ ३ ॥
चैंन राज चितोड़ को, कीधो बादल वीर।
नव खंडे जस विस्तर्यो, सामीधर्म रिणधीर ॥ ४ ॥
निरभें पालै राज निज, रतनसेन महाराव।
सेवक बादल सानिधें, पदमणि शील पसाव ॥ ५ ॥

ढाल (२४)

राग—धन्यासीइं, चाल—लोक सरूप विचारउ आतम हितभणी
सती शिरोमणि साची थई³ पदमणि लहीयइं रे
　　　　　　　　　　　सुख लहीइं सिरदार
पाल्यो कष्ट पड्यां जिण शील सुहामणो रे
　　　　　　　　　　　तन मन वचन उदार ॥ १ ॥

१ तुरीय २ रांणी ३ सलहीइं ।

श्री रावलजी छूटा मोटा कष्ट थीरे, सुख हुवो गढ़ें जेह ।
बड़ो पवाड़ो खाट्यो गोरे वादलें रे, शील प्रभावै तेह ॥ २ ॥
शील प्रभावें नासें अरि करि केसरी रे, विषधर जलण जलंत ।
रोग सोग ग्रह चोर चरड़ अलगा टलें रे, पातिग दूर टलंत[1] ॥३॥
श्रीसुधर्मासामि पाट परंपरा रे, सुविहित गच्छ सिणगार ।
श्री खरतर गच्छ श्रीजिनराजसूरीसरू रे, आगम अरथ भंडार ॥४॥
तस पाटि उदयाचल दिनकररे, श्री श्रीजिनरंग वखाण ।
रीझवियौ जिण साहजहाँ दिल्लीसरू रे, करिदीधउ फुरमाण ॥५॥
तास हुकम संवत सतर छीडोतरे, श्री उदयपुर जाण ।
हिन्दूपति श्रीजगतसिंह राणो जीहां रे, राज करै जग भाण ॥६॥
तास तणी माता श्री जंबूवती रे, निरमल गंगा नीर ।
पुण्यवंत पट दरसण सेव करइ सदारे, धरम मूरति मतिधीर ॥७॥
तेह तणें प्रधान जग में जाणिइं रे, अभिनव अभयकुमार ।
केसरी मंत्री सुत अरि करि केसरी रे, हंसराज हितकार ॥ ८ ॥
जिणवर पूजा हेतइ जाणि पुरंदरु रे, कामदेव अवतार ।
श्रेणिकराय तणीपरि गुरुभगता सही रे, सिंह मुकट सणगार ॥६॥
पाट सात पाछइ जिण देस मेवाड़मइंरे, थाप्यो गच्छ थिरथोभ ।
कटारिया कुलदीपक जग जस जेहनउ रे,
श्रीखरतर गच्छ शोभ ॥१०॥
तसु बंधव डुंगरसी ते पण दीपतउ रे, भागचंद कुल भाण ।
विनयवंत गुणवंत सुभागी सेहरउ रे, बड़ दाता गुण जाण ॥११॥

१ पुलंत ।

तसु आग्रह करी संवत[1] सतर सतोतरे रे, चैत्री पूनम शनिवार।
नवरस सहित सरस[2] संबंध रच्यो रे, निज बुद्धि ने अनुसार॥१२॥
श्री जिनमाणिकसूरि प्रथमशिष्य परगड़ा रे विनयसमुद्र बड़ गात।
तास सीस वड़वखती जगमइं वाचियइ रे,
श्रीहर्षविशाल विख्यात॥१३॥

तास विनेय चवद विद्या गुण सागरु रे, वाणी सरस विलास।
जस नामी पाठिक श्रीज्ञानसमुद्रजी रे परगट तेज प्रकाश॥१४॥
साध शिरोमणि सकल विद्या[3] करि सोभतारे,
वाचक श्री ज्ञानराज।
तास प्रसादे शील तणा गुण संथुण्या रे,
श्रीलब्धोदय हित काज॥१५॥

सामिधरम ने शील तणा गुण सांभल्या रे, पूगै मननी आस।
ओछो अधिको जे कह्यो कवि चातुरी रे, मिच्छादुकड़ तास॥१६॥
नव निधनै वलि अष्ट महा सिद्ध संपदा रे, दूर मिटै दुख दंद।
लब्धोदय कहै पुत्र कलत्र सुख संपजै[4] रे,
शीयल सफल सुख कंद॥१७॥

गाथा दूहा ढाल आठ सै अतिनंद
सीअल प्रभावे संपदा इम जंपइ लब्धानंद॥१॥

---

१ चैत्र सुकल तिथि पंचमी मृगशिरनें बुधवार २ नवउ ३ गुणेंकरि ४ संपदा।

इति श्री शील प्रभावे पद्मिनी चरित्रे ढाल भाषा बंधे श्री रतनसेन रावल तास सुभट गोरा बादल रिण 'जय प्रतापैः तृतीय खण्ड सम्पूर्णम्

सकल पण्डितोत्तम प्रवर प्रधान शिरोवतंस पंडित श्री ५ श्री कल्याणसागर गणि तच्छिष्य पंडित श्री ५ हर्षसागर गणि तच्छिष्य पंडित श्री सकल सभा शृङ्गार शिरोमणि रत्न पंडित श्री १९ श्री हीरसागर गणि........................ श्री ५ श्री गुणसागर गणि। तच्छिष्य पुण्यसागरेण लिखितेयं॥ सं० १७६१ वर्षे आशु वदि १० भोमे दड़ीबा मध्ये लिखितं॥ श्रीरस्तु॥ कल्याणमस्तु॥ श्री भद्रमस्तु॥ शुभं भूयात् श्री॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥

प्रति नं० ३८१४ (बं० ८२) श्री अभय जैन ग्रन्थालय *बीकानेर*। **पत्र २० अंतिम पत्र १ तरफ खाली। पंक्ति १५ अक्षर ५६-६० प्रति पंक्ति। अंतिम पत्र थोड़ा नष्ट।**

(२) इति श्री पद्मिनी चरित्रे ढाल भाषा बंध उपाध्याय श्री ५ ज्ञानसमुद्र गणि गजेन्द्राणां शिष्य मुख्य विद्वद्राज श्री श्री ज्ञानराज वाचकवराणां शिष्य पं० लब्धोदय विरचिते कटारिया गोत्रीय मंत्रिराज हंसराज मं० श्री श्री भागचंद्रानुरोधेन श्री गोरा बादल जयत प्रापणो नामस्तृतीय खण्डः॥ तत्समाप्तौ समाप्तमिदं श्री पद्मिनी चरित्रं तद्वाच्यमान श्राव्यमान चिरं नंदतादाचंद्रार्कं यावत् लिपि कारिता च सुश्रावक पुण्यप्रभावक......................... ॥

॥ संवत् अठारेसै १८२३ वर्षे मिती भाद्रवा बद ८ दिने लिपी कृतं। वाचणवाला कुं धरमलाभ छै। लिखतं मकसुदाबाद मध्ये लपि कृतं ॥ श्री ॥ श्री ॥ [पत्र ४८ जैनभवन, कलकत्ता

(३) गाथा दूहा सोरठा, सोल अधिक सै आठ।
कवित दूहा गाथा मिल्यां, सुणो सुगुरु मुख पाठ ॥१॥
ढाल सरस गुणचालसुं श्लोक तणी संख्या एकादश शत अधिक छै, पंचासत नइ सात, अनुमाने लालचंद कहइ ॥

इति पद्मिनी चौपाई संपूर्णम्। सकल पंडित शिरोमणि पं० श्री १०५ श्रीराजकुशल गणि शि० ग० ऋषभकुशल लिखितं आमेट नगरे संवत १७५८ वर्षे।

[ओरियण्टल इंस्टीच्यूट बड़ौदा प्रति न० ७३३ की नकल गुलाबकुमारी लाइब्रेरी कलकत्ता में]

गोरा बादल कवित्त

गज बदन गणपति नमूं, माहा माय बुधि देय।
गुण गूंथूं गोरल का, जस बादल जंपेय ॥ १ ॥
चहुआंणां कुलि ऊपना, गोरउ अरु गाजन्न[1]।
चित्रकोटि गढ उदया, राउ रत्नसेन मनि रंग ॥ २ ॥
सउहड सिरोमणि निर्म्मयउ, गाजन सूअ बादल्ल।
वरस वीस त्रणि अग्गलउ, भड सूरतांणा सल्ल ॥ ३ ॥
दल असंख जिणी गंजीया, असपति मोड्या मांण।
राखी सरण पद्मावती[2], बंध छोडायउ रांण ॥ ४ ॥
काका भत्रीजा बिहुं, गोरउ अरू बादल्ल।
पद्मनी काजि भारथ कीउ, हडमत जिम सर मल्ल ॥ ५ ॥
सोहड सुभट बादल करी, असी न करसीं कोय।
सोहड़ा सोह चढावीय, गोरा बादल दोय ॥ ६ ॥
गढ डीली अलावदी; चित्रकोट गहलउत।
पद्मणि कारिज साधीयउ, कहसूं तेह चरित्र ॥ ७ ॥

कवित्त

चित्रकोट कैलास, वास वसुधा विख्यातह,
रत्नसेन गहलोत, राय तिहा राज करंतह।

---

१ बादल। २ पद्मणि काज भारथ कीयउ।

तुरीय सहइस पंचास, दोय[1] सइं महगल मंता,
राजकुली छत्तीस, सोहड भड सेव करंता।
प्रधान लोक विवहारीया, राजलोक सहुअै सुखी,
च्यार वरण गढ महि वसइ, जती मुनी नहीं कोय दुखी ॥८॥

एक दिवस गहलउत, राय बइठउ भूंजाई,
सतर भख्य भोजन्न, मूंधि हस कर लेइ आइ।
के खारा के मीठ, केइ कछु स्वाद न आवइ,
तब पटरानी कह्यउ, बेग पद्मनी क्यों न लावइ।
धरि मछर संचलि सांचर्‌यउ, नेव जीत कन्या वरी,
पद्मनी ज आणि पयज करि[2], राय रत्नसेन अइसी करी ॥९॥

विप्र एक परदेस थी, फिरत आयउ तिण ठायह,
सभा मझि जब गयउ, नयण पेख्यउ तब रायह।
फल कीधो तिण भेटि, वयण आसीस पयासइ,
विद्यावाद विनोद, वांणि अमृत गुण भासइ।
राघव सभा जब रिंजवी, तब राजिन मन भाइयो,
हुउ पसाव कीन्ही मया, आपस पास रहावीउ ॥१०॥

रत्नसेन राघव, रमति कारणि एक ठायह,
जीतो दांण तिहा राव, दांण मंगीउ सूभायह।
चळ्यो विप्र तब कोप, राय मनि मछर कीउ,
छंड्यो ए अस्थान, देव देसउटउ दीउ।

---

१ पंच। २ धति।

उचरइ विप्र ऐरिसह वयण, राउ एक प्रतिज्ञा हूँ करू,
पइहराउं लोह तुम्ह पय कमल, तब चित्रकोट बोहड फिरू ॥११॥
चित्रकोट तब छंडि चित्त एह वयण विचार्यउ,
करवि होम आउध,[१] सबद[२] अइसउ संभार्यउ ।
वीस भवन महसाण, मंत्र योगिनी आराधी,
कहो नइ देव कुण काज, आज ए विद्या साधी ।
उचरइ विप्र[३] स्वामिनमूणि, एह भेद मुझ अपीइ,
आगम निगम सहुइ लहूँ, तउ वाचा दे थर थपीइ ॥१२॥
तव तूठी योगिनी, हुई प्रसिद्धि[४] प्रसनी,
ब्रह्म रुद्र करि वाच, वाच निश्चल करि दीन्ही ।
जिहां हकारइ मोहि,[५] , तोहि साचउ करि जांणइ,
आदि अन्त उतपत्ति, विपति तौ सहु पीछानइ ।
आस्थान आप जोगिन हुइ, विप्र पंथ आश्रम कर्यउ,
आणंद अंग ऊलट घणइ, तव डीली[६] गढ संचर्यउ ॥१३॥
वचन कला उतपन, पवन छतीस मिल्या तिहां,
राय रांणा मडलीक, खांन ऊंबरे[७] खडे तिहाँ ।
मन संकेत पूरवइ, जेह कछु मन माहि इछइ[८],
जे धन कारन धाय, आय विप्रन कूं पूछइ ।
बात सुनी सूलतान एह, बे बजीर सचा कहउ,
दरवेश बेस अलावदी आय पउहंतउ विप्र पोह ॥१४॥

१ आहुत्त । २ मंत्र । ३ रांघव कहइ । ४ परतक्ष । ५ सोहि ।
६ ढिल्ली । ७ ऊमरा । ८ अच्छइ ।

कहइ न बात कछु अबही, कबही कर द्रव्य मिलिही मुझ,
कहइ न बात जनारदार, मइ सबद सुनीय तुझ।
काल कोस फकीर, तीर सायर फिरि आवहि,
निखुता नाहि निलाट, लख्या नहीं कोरी पावहि।
तब कोप कलंदर कहइ, क्या किताब दुनिया दीया,
संख्यउ स विप्र संसहि पड्यउ, एह योगनि तइं क्या कीया ॥१५॥
तब योगिन मन धरीय, करीय सेवा मइ कबीय,
वचन सौंध नवि लहूं, बाच नह पालइ सबीय।
वचन शुद्धि तउ लहइ, भक्ष जउ मोरउ जांणइ,
वेगि जाउ दरवेस कहुं जउ मंखण आंणइ
इहां राति किहां मंखण लहुं, तब धीउ लेउ करि संचर्यउ
अल्लावदीन सुरतांण को, सीस छत्र तुझ सिरि धर्यउ ॥१६॥

तब कोप किलंदर कहइ, क्या तुफाना उठायउ
तू बोलइ सब झूठ, राज मुझ पइं किहां आयउं
एह बात सुणइं सुरतांण, करइ टुकटुक तन मेरा
करइ नहिं कछु विलंब, अउर सिरि कट्टइ तेरा।
उच्चरइ विप्र दरवेस सुं, अलख लिख्या सो पइं कहुं,
जउ सीस छत्र तुझ कउं मिलइ, क्या इंनाम हुं भालहूं ॥१७॥
तब खुसी भयउ दरबेस, कर्म करतार करहि जब
तोहि हइ गइ पाइक, करइ तसलीम तोहि सब
तखत तलइ मेरइ तुं ही, तुं हि दिलीवइ जांणू
कहे तुहि सब साच अउरका कह्या न मांनु



नयनाभिराम चित्तौड़ दुर्ग

[फोटो—सार्वजनिक संपर्क विभाग-राजस्थान]

अल्लावदीन सुरतांण की, सीस छत्र काइम रहइ,
दरवेस वेस कहि विप्र सुणि, तुंहि मुंहि मागइ सोभी लहइ॥१८॥
फेरि वेस सुरतांण, तांम निज मंदिर आयउ,
ऊग्यउ सूर परभात, तबही बंभण बुलायउ।
सभा मध्य जब गयो, चित योगिणि समरंतउ,
छत्र सिंघासण सहित, साह नयणे निरखंतउ।
संक्यउ सु विप्र असपति सहित, निसचरिज रयणी फिर्यउ।
मंगइ सु मंगि असपति कहइ, वाचा मोहि ऊरण करउ ॥१९॥

दूहा

तब सुरतांण निवाजीयु, राघव बहुत उछाह,
जे मनि चीतइ सोइ करइ, वसि कीधउ पतिसाह ॥२०॥
मल्ल भाट सुरतांण पय, आयउ मंगण कज्जि।
मुहुल तलइ जइ द्वा करइ जिहां खडे असपति सज्जि ॥२१॥

कवित्त

एक छत्र जिण प्रथीय, धरीय निश्चल धरणि परि,
आंण किद्ध नव खंड, अदल किद्धउ दुनि भितरि।
अनिल नलणि विभाड, उदधि कर माल पखालिय,
अंतेवर रही रंभ, रूप रंभा सुर टालीय।
हेतम दांन 'कवि' मल्ल भंणि उदधि खंध वे बखत गुनि,
दीठउ न कोई रवि चक्र तलि, अल्लावदीन सुरतांन धनि ॥२२॥
मम पढि भट्ट कवित, बुद्धि खोजुं देइ पूरउ,
सुख सवाद करि रोस, सिद्धहर मजलगि सूरउ।

किहां सुणी पद्‌मिनी सेसधर अंती सोहइ,
सुरनर गुण गंध्रव, देखि मुनिवर मन मोहइ।
संखिनी सबे सुरतांण घरि, कोप हूउ बेजन कसइ,
लावत मारि खोजा निसुणि, पतिसाह मुरके हसइ ॥२३॥

दूहा

बंदण प्रतइ अलावदी, कहि सु वयण विचार।
कटारी सहिनांण लइ, राघव वेग हकारि ॥२४॥

कुण्डलीयउ

आलिमसाह अलावदी, पूछइ व्यास प्रभात।
सयल परीक्षा तुं करइ, स्त्री की केती जाति ॥२५॥
स्त्री की केती जाति, कहि न राघव सुविचारी,
रूपवंत पतिव्रता, मूंध सोहइ सुपियारी।
हस्तनी चित्रणी कर संखिनी, पुहवी बड़ी पदमावती,
इम भणइ विप्र साचउ वयण, आलमसाह अलावदी ॥२६॥

कवित्त

इम जंपइ सुरतांण, मुनि बे राघव इक बातह,
जाति च्यार की नारि, केम जांणीइ सुचित्तह।
गंध रूप सद्‌भाव, केस गति नयण निरत्ती,
वयण बांणि तसु अंग, कहु किशि तखत किसि भंती।
हस्तिनी चित्रणी कइ संखिनी जाति तीन दीसइ घणी,
पातसाह अरदास सुणि, दुनी पियारी पदमिनी ॥२७॥

दूहा

राघव वयण इम ऊचरइ, सांभल माह नरेस।
त्रीया लखणे बूझीयइ, कोक तंणइ उपदेस ॥२८॥

मलोक

पद्मिनी पद्म गंधाच, अगर गंधाच चित्रणी।
हस्तिनी मद्य गंधाच, ग्वार गंधाच संखिनी ॥२९॥
पद्मिनी पुष्प राचंति, वस्त्र राचंति चित्रणी।
हस्तिनी प्रेम राचंति, कलह राचंति संखिनी ॥२०॥

कवित्त

गहिर महिर अलावदीन, राघव हकारीय,
नयण नारि निरखेवि, देखीइ हरम हमारीय।
हंसगमण गजचलणि, साहिजादी अनुरत्ती,
सुरत्ति सुर नर, स्त्रीया पेखि हस्तीनी,
चित्रणी क संखिनी क, किती साह घरि पदमिनी ॥३१॥
साह आलिम एक वयण, विप्र उच्चरइ सुमिट्ठउ,
लोयण ते हेतम कीय, जेणि परि रमणि मुह दिट्ठउ।
कहइ एम सुरतांण, कहु कइसी परि किज्जइ,
काच कुंभ भरि तेल, मुहुल मांही रास रचिज्जइ।
इक संग रंग ठाढी रहइ, सजे सिणगार सवि कांमिनी,
प्रतिबिंब निरखि राघव कहइ, सो कहुं साह घरि पदमिनी ॥३२॥
पातिसाह राघव, आय तिण ठामि बइठा,
काच कुंभ ढालेइ, भरीय जम तेल गरिठा।

सजे सिंणगार सवि कांमिनी, भूयण सिरि छज्जइ ठढी,
के स्यांमा के गोर, केइ गुण गाहा पढी।
निरखंति वयण भुय मज्झि नव, एह वात चित्तह गुणी,
होइ जाति नारि दीसइ घणी, सु नही साह घरि पदमिनी ॥३३॥
रोस भयु सुरतांण, खांन अर पांन न भावइ,
बे ला इत मारि लबार, वेग पदमिणी दिखलावहि।
ले किताब कर धारि, करइ बंदिन वीनत्तीय,
संघलदीप समुद्र, अछइ पदमिण बहु भत्तीय।
हुसीयार होइ अरदास करि, एक अधू पेखइ जिहां,
संभली समुद्र संसइ पड्यउ, कोइ खुदीय खुते तिहां ॥३४॥
असपति कीयउ आरम्भ सु दिन साधीयउ दखिण घर,
पातिसाह कोपीयउ, कुंण छुट्टइ संघल नर।
दल गोरी पतिसाह, जुडइ संग्राम सुहुड भड़,
नव लख त्रिगुण तुरंग, चउद सहस मइंगल घड।
सूर्ज खेह लोपवि गयउ, पातालइं वासग दुड्यउ,
चिहु चक्करायसांसइ पड्या, पातिसाह किसपरि चड्यउ ॥३५॥
चड्यउ चंचल सुरताण, खेडि दरयण तटि आयउ,
सेन सहू उत्तरी, तिवही बंभण बोलायउ।
चेतकरी चेतन्न, एम जंपइ खूंदालम,
मइं कताब तोही दीयउ, भयु सु दुनीयां मालम।
असपति कहइ चेतन सुनि, अब वेगइं संघल संचरउ,
जिसी भांति पदमिनी कर चढइ, सोइज मित्र चित्तह धरउ ॥३६॥

पातिसाह राघव, आय ऊभा तटि साइर,
करउ मंत्र चेतन्न, कटक लंघीइ रिणायर।
सुणि आलम वीनती, नीर कउ अंत न जाणउ,
संघलदीप पदमिनी, घरहि घर अधिक वखाणउं।
भंजउ सु कोट असपति कहइ, देखि दाउ तिसकुं दिउ,
ग्रहे खग्ग सीस राजा हणउ, पकडि ग्राह पदमिणि लिउ ॥३७॥

हठि चड्यउ सुरतांण, खंणवि धरणि तलि पिल्लउं,
वेगि ल्यावि पदमिणी, सेन सवि साइर घल्लउं।
मिलि बइठा मंत्रवी, कहां हम पदमिणी पावइ,
बे बंभण तूं कूड, भूठ वातइं इहां ल्यावइ।
राघव कहइ तुम्ह मति डरउ, हुं करउं मंत्र मनि भाईयउ,
सुलतांण तांम समभाइ करि, बाहुडि डिल्ली लाईयउ ॥३८॥

सलहिदार हथियार, लेइ आगइ अवधारीय,
संभाले सवि सेल, मांहि भेजे चिति धारीय।
बीबी तब पूछीयउ, साह पदमिणि किहीं आंणी,
च्यारि त्रीया घरि नही, किसी तिस की सुरतांणी।
खुणसि भई सुरतांण मनि, तब अंदेसा किधा बहु,
संघल दल जे पठया हुई, वे राघव पद्मिणि कहु ॥३९॥

तब राघव चिंतवइ, वयर पाछिलउ संभारयउ,
कहुँ जिहां पदमिनी, साह जु चितइ धारउ।
गढ चितोड हिंदुआंण, रांण गहिलोत भणिज्जइ,
रत्नसेन घरि नारि, नारि सिंघली सुणिज्जइ।

उचरइ विप्र एरिस वयण, लोग त्रिण्हि जीता तिरी,
इसी नही रविचक्र तलि, मइं नव खंड देख्या फिरी ॥ ४० ॥

लाख तूल पल्हिंग, मउडि पिणि लख मिलइ तस,
अंतह पुड सइ पच, अवर गिंदूया सहस जस।
तसु ऊपरि ओछाड, रंग बहु मूलइं लीधा,
अगर कपूर कुमकुमा, कुसम चंदन पुट दीधा।
अलावदीन सुरताण सुणि, चेतन सुख सचउ चवइ,
पद्‌मिणी नारि सिणगार करि, राय रत्नसेन सेजइ रमइ ॥४१॥

पलांण्यउ अलावदीन, जल थल अकुलांणा,
राय रांणा खलभल्या, पड्या दह दिसि भंगाणा।
हय गय रथ पायक, सेन कांई अंत न पावइ,
जे मोटा गढपती, तेह पणि सेवा आवइ।
नव कोप करवि बल मुँछ धरि, कहइ साह विग्रह करउं,
मारउ देस हींदुआंण कुं, त्रीया एक जीवत धरउं ॥४२॥

बंकउ गढ चित्रकोट, सकति सुरतांण न लिज्जइ,
ऊठि आई सुसाफ, बोल जस राय पतिज्जइ।
डड डोर नवि दिउं, देस पुर गांम न गाहूँ,
नाही गढ सुं काज, राजकुंअरी न व्याहुं।
राघव कहइ असपति सुणि, कहि राजा मारिन आहुडउं,
रत्नसेन मुझकुं मिलइ, तउ नाक नमिणि करि बाहुडउं ॥४३॥

कुंडलीउ ॥

दल सझवे सुरतांण, आय चित्रकोट विलिज्जइ,
भेजउ वेगि विसेट, बात मिलणे की कीजइ।
दीजइ कर की वाच, जेम 'गहिलोत' पतीजइ,
हम तम विचइं खुदाइ हइ, लेइ मुसाफ आदइ धरउ,
चितोड देखि वेगइं फिरउं, वाचा देइ थप्यउं खरउ ॥४४॥

दूहा

वेग विसेट चलाइयउ, पुहतउ गढह मझार।
सभा सहित राय भेटीयउ, बोलइ वयण विचार ॥४५॥

कवित ॥

वात करी तब मिठ, राय तस वयण पतिनउ,
जिण परि कही विसेट, सोइ परि राजा किन्हउ।
राजकुली छत्रीस, सहूति सभा भणिजइ,
असपति आवणु कह्यउ, कहु किणपरि बुधि कीजइ।
मिली प्रद्धान इंम चीतवइ, सेन सहु दुरिहिं पुलइ,
जण वीस सहित आवइ ईहां, तु पतिसाह रांणा मिलइ ॥४६॥
दिधी पोलि चिटकाइ, डरया गढ तुरक नभाया,
गोरी गोधउ मंड, साथि लसकरह सवाया।
अब तु मेलु भयो, राय जिमणार कराया,
त्रीस सहस मेली गया, साथ लसकरह सवाया।
खांणाज खाइ जब उठीया, पकड़ि बांह राजा लीया,
वात ज करत लंघीय पोली, तब रतनसेन काठा कीया ॥४७॥

कीयो कूड सुरतांण, सांमि मोरउ ग्रहि बंध्यउ,
पदमणि द्यु तु जाउ, काजि कारणह समंधउ।
भलो न कीयो किरतार, केम गहिलोत बंधीजइ,
कीयो मंत्र मंत्रीयां, राय राखवि त्रिय दीजइ।
तदिन जीभ खंडवि मरउं, योगिणीपुर नवि दिखसउं,
पदमिणी नारि इंम उचरइ, अब कह सरणागति पइठिसिउं ।४८।
दुख भरी पदमिणी. एम परिपंच विचारइ,
कोई संसारि समरथ, सूर मोहि सरणि उवारइ।
जे गढ मांही रावत, तेह सवि हीणुं भाखइ,
इसउ न देखुं कोइ, मोहि सरणागति राखइ।
उचरइ नारि विलखी हूई, सरण एक हरि संभरउं,
पणि राजलोक मांहि चंदन रचे, सखी वेगि जमहर करउं ।।४६।।
सखी एक कहुं तोहि, मोहि जउ वयण पतिज्जइ,
मनावउ गोरल्ल, दुख सहु तास कहीजइ।
बरस पंच तस विखउ, राउ सुं कुरखे चलइ,
प्रांम ग्रास नवि लीइ, कुंण गुण मोहि उथलइ।
सुणि राउत्त कुलवट्ट तस, जिण सिर संप्यउ परकज सउं।
पदमिणी नारि इंम उचरइ, तु बादल सरणि पइठसिउं ।।५०।।
चडे संघासण तांम, करह करि कमल उघारयउ,
जीहां गोरउ बादल, पाउ पदमिणी तांहां धारयउ।
गंग उलटी पचिम प्रवाह, भणइ इंम गोरउ रावत्तह,
ए तुम्ह कुं बूझीइ, देत आइस हम आवत्तह।

पदमिणी नारि इंम उचरइ, तुम्ह लगइ कीजंति बल,
कर ऊभु करइ ज सांमि कज, करउ कित्त जिम हुइ कलि ॥५१॥
तुं ही रावत्त गोरल्ल, तुंहीज दल माही वडउ,
तुं ही रावत्त गोरल्ल, तुंहीज मोरउ भाईड़उ।
तुं ही रावत्त गोरल्ल, तुंहीज दल वडउ छजइ,
तुं ही रावत्त गोरल्ल, तुं ही देखवि राय गज्जइ।
सुणि गोरल्ल पदमिणि कहइ, मोहि दासी करि सुरतांण दइ,
कइ अल्लावदीन सुंखग धरि, कै राउ रत्नसेन छोडावि लइ ॥५२॥
सुहड सुभट गोरल्ल, तांम गहगह्यउ सुचित्तह,
दल भंजउं सुरतांण, नांम तु थु रावत्तह।
सांमि कजि अणसरउं, नारि पदमिणी उवेलउं,
गढ राखउं भुज प्रांणि, मारि असुरां दल पिल्हउं।
कहइ गोरल्ल सुणि सांमिनी, जाउ तुम्हे गाजन्न घरि,
अवतार पुरूष विधना रच्यो, सु बीड़उ द्यु बादल करि ॥५३॥
लीन्ह पांन बादल्ल, रयण हूं ते गढ भीतरि।
सत्ति तुम्हारइ साहस्स, साह भंजउं खिण अंतरि।
दोइ कुल भेटउं लाज, तु नाम बादल्ल कहाउं।
गोरी दल विन्नडउं, कूटि करि बांधव ल्याउं।
जिम राम कज्ज हनुमत करि, महिरावण बंध्यउ तिखिणि।
काटउ ज बंध राउ रत्न के, तु साहस भंजउ साह हणि ॥५४॥
चाड कूड विन्नयउ, मंत्री कउ मंत्र भुलांणउ,
रतनसेन बंधेवि लीय, गढह चिहुं दिसि अहिरांणउ।

कायर भंखइ आल, रांणी दे राजा लिज्जइ,
अल्लावदीन सुरतांण संउ, केम करि खग्ग धरिज्जइ।
इम कहइ चाड रावत सुणि, हीइ मंत्रि निचल धरउ।
गढ रहइ राउ छूटइ सही, त्रीया देई इतउ करउ ॥५५॥

वयण सुणी रावत्त, रोस करि खरा रीसांणा।
दोय चडीया अति कोप, दोय अति चतुर सयांणा।
रिण मांही अणुसरया, सीस बड समुहा बंछी।
मोल मुंहुंगा लहइ, चडइ कुंजर सिर तछी।
गोरउ गरिष्ट बादल विषम, दोय साहस समुहा सख्या।
फुट्टउ सु हीयो जिह्वा गलउ, जिणि पदमिणि देणा कख्या ॥५६॥

आवि माइ तिणि ठाय, पासि बादल इंम ठढीय,
तोहि विण पुत्र निरास, तुंह चल्यु भुझण कसीय।
नयण मोरउ बादल्ल, वयण बादल्ल भणावीय,
प्रांण मोरउ बादल्ल, वार वारई समझावीय।
आवती माय अब पेखि करि, उठि बादल्ल प्रणाम कीय,
बालक पुत्र जगि जगि जयो, किणइं कुमित्र कुमत दीय ॥५७॥

हुं कित बालउ माय, धाइ अंचल नहि लगउं,
हुं कित बालउ माय, रोय भोजन नही मग्गउं।
हुं कित बालउ माय, धूरि धूसर नही लिट्टउं,
हुं कित बालउ माय, जाइ पालणइ न घुटउं।
बालउ ज माय मुझ क्युं कहउ, अवर राय रखउं जीउ,
सुलतांण सेन विनडउं नही, तब रे माय फुट्टइ हीउ ॥५८॥

रे बाले बादह्ल, मनह् अपणइ न बुझिसि,
रे बाले बादह्ल, केम करि सांम्हु झूझिसि ।
गढ वीट्यउ सब ठाय, असुर दल देखउं भारी,
तुं नांन्हु बादल्ल, केम करि खग्ग संभारी ।
इंम कहइ माय बादल्ल सुणि, वयण एक मोहि चिंत धरि,
सांहण समुद्र सुलतांण का, कुण सुबह्ल अंगमिसि भर ।।५६।।
हुँ कित बालउमाय, गहिवि गयन्दतउ खेलउं,
हुँ कित बालउ माय, सेसफण बिमुहा पिल्हउं ।
बालउ वासिग कांन्ह, नाथि आणीयु भुजा बलि·
बलि चाप्यु धर पीठ, वेणि दिधउ स्वांमी छल ।
बाली बाला पउरस घण, दुरजोधन बंधवि लीयु,
बादह्ल गयंद इंम उचरइ, तव सुणवि माय पिछित कीउ ।।६०।।
माय जाय पठवी, वेग तिही नारिज आई,
कुच कठोर कटि भीण, रूप जण रंभ सवाई ।
कोककला कामिनी, पेखि त्रिभुवन मन मोहइ,
प्रेम प्रीति अग्गली, अंगि लक्षण जस सोहइ ।
बादल देखी जब आवती, तब सुचित विसमु भयु,
लालच्च नारि निरखुं हवइ, तु मोहि सूर साहस गयो ।।६१।।
तव कमलिणि विस तरंग, नयण सूं नयण न मेलिग,
वयण वयण न हु मिली, अहर सुं अहर न पिल्हिग ।
अति भुज पवन प्रचंड, कठिण कुच कमल न भिडिग,
रहिसेन फरसेग अंग, त्रीय घाए नह पिठिग ।

सुख सेजन मांणी तनउं, कंता बाले फल कीय हुय,
संग्राम सांमि किम झुझयउ, कहुन कुंमर गाजन सुय ॥६२॥
लोअण तेह खिसि पडउ, केय पर त्रीय उल्हासी,
चरण तेह गलि जाउ, जेण रिण पाछा नासी।
हीयो तेह फुटीयो, जेण मन कीयो दुमंन्नउ,
श्रवण तेह सधीइ, जेण हरि सुण्यउ विमंन्नउ।
बादल कहइ रे नारि सुणि, असुर सेन त्रिणवडि गिणउ,
नीपजे न सरवर सेन, जु न साह सनमुखि हणउं ॥६३॥

कुंडलीया

कंता झुझिसि कवण परि, किम करवाल प्रहंति,
पेखि सांगि अणी अग्गला, किम करवर झालंति ॥६४॥
किम करवर झालंति, कुंत अणी अग्गल फुट्टइ,
खग्ग ताड वाजंति, सुहुड़ अधो धड़ तुट्टइ।
जु प्रीय कायर होय, पेखि गय जूह गजंता,
तु मोहि आवइ लज्ज, जु तुं रिणि भजिसि कंता ॥६५॥
हय सूं हय नरदलउं, हस्ती सू हस्ति पछाड़उं,
कुंतकार सुं कुंत, खग्ग सुं खग्ग विभाडउं।
छत्र छत्र छिनि छिनि, चमर आडंबर तोडउं,
तु जायु गाजन्न, साह समहरि चडि मोडउं।
बादल कहइ रे नारि सुणि, तव ही तुझ सेजइं सरउं,
चीतोडि रांण पदमावती, हूं बादल एकत करउं ॥६६॥
सुणि स्वामी बीनती, कयण एक कहुं सु मिठउ,
मो सिरि चडइ कलंक, बांह कंकण नहि छुट्टउ।

पूरि आस पदमिणी, मोहि निरासी किज्जइ,
आप हांणि घरि होइ, अवर कारणि जीउ दिज्जइ।
इंम कहइ नारि कंता निसुणि, सेन सहुय एकंत हुअ,
गोरल्ल पुठि समहर चडइ, रहु न कुंअर गाजन्न सुय ॥६७॥
अथग पवन जु रहइ, वहइ गंगा पच्छिम मुह,
मेर टलइ मरजाद, जाइ नवखण्ड रसातल हु।
सेस भारजु तजइ, चलइ रवि चन्द दखिण धर,
सुर असुर सहू टलइ, संक नह धरइ अप्पसर।
एतला बोल जउ सहू हुइ, हूँ वयण सच्चउ करउं,
बादल्ल गयंद इंम उचरइ, तुहि न नारि पाछउ सरउं ॥६८॥
गोरउ अर बादल्ल, आय दोय सभा बयठा,
जे गढ मांही रावत, तेह सहू मिल्या एकठा।
करउ मंत्र विचार, बुधि छल भेद करीजइ,
देणी कहु पदमिनी, जेम सुरतांण पतीजइ।
डोली कीजइ पंचसइं, सुहड सवे सन्नाहीइ,
एकेक डोली आठ आठ जण, इंम परिपंच रचाईइ ॥६९॥
रची एम परिपंच, वेगि तब दूत चलायो,
खबरि करउ सुरतांण, हुं तु पदमिणी पठायो।
जे दासी अंगरक्ख, हरम सवि डोलइ बल्लउं,
हीर चीर सोवन्न, लेई तुम्ह साथे चल्लउं।
इंम कहइ नारि पदमावती, पातिसाह अरदास सुणि,
जिस घड़ीय राय छुट्टइ सही, हुँ न रहुँ ईहां एक खिणि ॥७०॥

तब खुशी भयउ सुरतांण, वेगि फुरमांण चलायउ,
सुणि गोरे वादल, साथि करि पदमणि ल्याउ।
जे तुम्ह कहउ सोई करउं, राउ की बेरी कट्टउं,
बाद गस्त हूं करउं, ईहां रहि नीर न घुट्टउं।
पहिराइ गइ तेजी दिउ, बोल बंध दे पठवउं,
इंम कहइ साह बादल सुणि, तोहि निवाजि दुनिया दिउं ।।७१।।

कीयउ कूड बादल, आय डोले संपत्तउ,
तस मांहिं रख्यउ बालः, नाम पदमिणी कहंतउ।
हूउ हरख सुरतांण, जब ही आवत सुणी नारी,
गोरी तब पूछीउ, बोल बोलीयउ विचारी।
अल्लावदीन सुरतांण सुणि, एक वात मेरी सांभलउ,
पदमिणी नारि इंम ऊचरयउ, एक वार राजा मिलउं।।७२।।

वादल तिहां पठयु, राय जिहां बंधन बंधीय,
गहीय राय पय कमल, काज अप्पणउ इंम किधीय।
हूउ कोप राजांन, वइर तइं साध्यउ वयरीय,
रे रे कुबुद्धीय कूड, नारि किम आंणी मोरीय।
बादल तांम इम उच्चरइ, खिमा करउ स्वांमी सही,
मइं बालक रूप पदमिणि करी, राउ नारि निश्चइ नही ।।७३।।

बादल तब लेइ चल्यउ, राउ चकडोल सरसीय,
खगधारी सनमुख, भड्यउ सुरतांण सरसीय।
करी पारसी मुगल, हींदू सब कूड कमाया,
लंकामणि उद्धर्‌यउ, अतुल बल सेन सवाया।

मारि मारि करि ऊठीया, बादल्ल तिहां संमुह सख्यउ,
जब लगइ झूझि दल पति हूउ, तब लग हइंवर पखस्यउ ।।७४।।
हुई हाक दल मांहि, भई कलकली वूंबारव,
गय गुडिय हय पखरिय, सुहड सन्नाह करइ तब ।
एको सिर त्रूटंति, एक धड़ धरिणी लुट्टइ,
खग्ग ताल वाजंति, वांण सींगणि गुण छुट्टइ ।
इम भग्यउ सेन असपति सरस, पातिसाह विलखउ भयउ,
गोरइ गयंद दल कुट्टीयो, बादल्ल राउ तब लेई गयउ ।।७५।।
करी पइज बादल्ल, नारि ऊगारी बलहिं छल,
मंनि संक्यउ सुरतांण कज्ज करि आयउ भुजा बलि ।
असपति मोडउ माण, सांमि आपणउ उवेल्यउ,
भंजे गय घण थट्ट, मीर मुगलां सत मेल्ह्यउ ।
इंम सुणवि माइ आणंद कीय, पुत्त परदल भंजीयउ,
उवरी वात बादल्ल की, सो पदमणी कंत उवेलीउ ।।७६।।

कुंडलीया

गोरल्ल त्रीया इंम ऊचरइ, सुणि बादल तोहि सत्ति,
मो प्रीउ रिण माहि झूझीयउ, कहि किम वाह्या हत्थ ।।७७।।
कहि किम वाह्या हाथ, वत्थ वइ सुहुड़ पाछाडीय,
भंजी गय घण थट्ट, पाव दे सीस विभाडीय ।
हय गय रथ पायक, मारि घल्लीयउ घोरिल्लं,
वेग माइ सत्ति चडउ, एम रिण पड्यउ गोरिल्लं ।।७८।।
कहिं धड़ कहिं सिरि कहीं कमंध, कहिंक पंजरही पडीउ,
कहीं कर कहीं करमाल कहिं कहि मरवि छुडीयउ ।

कहीं एकावली हार, कहिंक धरणी धंधोलिय,
कहीं जम्बुक किहीं अंत मंस गिरधण विछोडीय।
गढ छल त्रीय छल सांमि छल, त्रिहुँ छल भिड्यउ सुकवि कहइ,
गोरल्ल सूर भेटण चली, सु खिण एक रवि रथ खंचे रहइ ॥७९॥
जे सिर पड्यउ धर पिट्ठ, धरा देई इंद्र पठायउ,
इंद्र हथ थल स्यु, सोइ सिरि ग्रिध्रिण उठायउ।
गिरिधण कर छुटेवि, पड्यउ गंगाजल मज्जं,
गंगाजल उत्तंग, हुओ अंमृत मिरि छज्जं।
इंम अंमीय गाह नयण चंदण चूउ, तव कंदल मंड्यउ घणउ,
गलि रूंडमाल गुंथेवि लीय, तो सर सिद्धि गोरल तणउ ॥८०॥
जे बादल्ल जंपंति, विरद बादल अरि गंजण,
संकडि स्वामि सन्नाह, असुर भारथ अरि गंजण।
कीयउ जुद्ध सुरतांण हण्या हसती मय मत्तह,
आयउ मोरउ कंत, तहिज दिद्धउ अहि वातह।
पदमिणी नारि इंम ऊचरइ, तोहि धन्य धन्य अवतार हूअ,
आरती ऊतारउ ह्वो वर तुरिणि, जे बादल्ल जपंति तूअ ॥८१॥
अचल कीर्ति श्री रांम, अचल हनुमन्त पवन सुअ,
अचल कीर्ति हरिचंद, अचल वेली पुहवी हुअ।
अचल कीर्ति पांडवां, जेण कइरव दल खंडीय,
अचल कीर्ति अहिवन्न, जेणि चक्राबहु मंडीय।
विक्रम कीर्ति जिम अचल हूअ, भोज अचल जुग जांणीइ,
तिम अचल कीर्ति गोरल तूय, बादल कीर्ति वखांणीयइ ॥८२॥

॥ इति श्री गोरा बादल कवित्त सम्पूर्ण ॥

रत्नसेन-पद्मिनी गोरा बादल संबन्ध
खुमाणो रासो

षष्ठ खण्ड

॥ श्री माऊ अबाय नमः ॥

गाहा

ओंकार मंत्र अंबा, जगज्जननी जगदंबा ।
लच्छ समप्पो लंबा, दलपति तुह चरण अवलंबा ॥२५॥

दूहा

कमला मात करो मया, मुझ उर वसिइं वास ।
आपो दोलत ईश्वरी, वांणी वयण विलास ॥२६॥

कवित्त रांणां री वंशावलिका

रांण प्रथम (ह) राहप, पाट नर सुर नरपत्ति ।
दिनकर हर सुरदेव, रतन जसवंत नृपत्ति ॥
अनतो अभयो रांण, प्रबल पथवीमल पूरण ।
नाग प्रांणग जेंसिंघ, जेंत जगतेश उधारण ॥
जयदेव रांण जो नंगसी, भारथ पारथ भीमसी ।
गढ़पति मुगट गढ गंजणो, गाहड़मल गढ़ लखमसी ॥२७॥

जग असपति जसकरण, नवल विजपाल नरेसुर ।
नागपाल नरसीह, रांण गिरधर राजेसुर ॥
पीथड पुंनोपाल, मल्ल मोहण मय मत्तह ।
सीहडमल भीमक्क, रांण भाखर रण रत्तह ॥
लुंणग्ग करण लाखां दलां, मोड मंडल श्री लखमसी ।
अरसी हमीर खेतल खगां, अवनी सहु लीधी इसी ॥२८॥

चौपाई

रांणो रतनसेन गहिलोत, देसपती मोटो देशोत ।
राज करें नृप गढ़ चीतोड, राजकुली सेवें कर जोड़ ॥२६॥
एक दिन नृप बैठो बेसणें, पटरांणी सुं पेमें घणें ।
भोजन मांहें स्वाद न कोय, चतुराई तुम माहें न कोय ॥३०॥
रांध न जांणां भोजन भणी, परणो थे सींघल पदमणी ।
अंजस करे रांणो नीसर्‌यो, गढ़ चीतोड़ थकी ऊतर्‌यो ॥३१॥
अश्वें चढ़ीयो रांण उलास, साथें लीधो खांन खवास ।
रांणा ने सेवक पूछियो, आंपें केथ पयांणो कियो ॥३२॥
आपां जास्यां सींघल देश, तिहां जाए पदमण परणेस ।
अगुवो लीधो साथें भाट, ते सींघल री जांणे वाट ॥३३॥
रांणो दरियारें तट गयो, जालिम सिद्ध जोगी दरसियो ।
जोगी जंपें रतन नरेश, थे किम आया कवण विसेस ॥३४॥
आयस सूँ अधिपति वीनवें, पदमणी वरण जाऊँ हिवें ।
पार उतारो मुझ गुरुदेव, सींघल ले जावो सुज हेव ॥३५॥

कर ऊपर दोई असवार, नृप सींघल मुंक्यो तिणवार।
आयस कीधो ए उपगार, परणण रो मुशकल व्यवहार ॥३६॥
बहिन अछें सींघलपति तणी, परतिख आप अछें पदमणी।
अभिग्रह लीधो एहवो नार, जीपें मुझ थी पासा सार ॥३७॥
अधिपति खाधी हार अनेक, जीपें तस परणुं सुविवेक।
रमवा बंठो रतन नरेश, हारवी पदमणि नें लघुवेश ॥३८॥
सींघल नृप व्याही पदमणी, दीधी परिघल पहिरावणी।
रह्यो केताइक दिन सासरें, चालणरी सीझाई करें ॥३९॥
सीख माँग चाल्या घर भणी, साथें लीधी नृप पदमणी।
घणे भाव बहु प्रीतें घणी, पहुंचाया सींघल रे धणी ॥४०॥
अनुक्रमें आया गढ चीतौड, रतनसेन मन अधिकें कोड।
राणी सुं जंपें राजांन, म्हें परण्या पदमणि करि मांन ॥४१॥
थे मोसो मांनुं वाहियो, बोल कह्यो सो निरवाहि [इ] यो।
अहनिस गेंर महिल आवास, पदमण सुं सेभें करें रजास ॥४२॥
एक दिन आयो राघव व्यास, पदमणि नृप बेठा सुविलास।
रांणो रतनसेन कोपिओ, पदमणि रूप ब्रांमण पेखियो ॥४३॥
आँख कढ़ावुं राघव तणी, इण दीठी निजरें पदमणी।
जीव लेइ नें भागो नींठ, अधिपति कोप्यो आकारीठ ॥४४॥
मांणस लेइ गढ़ थी उतर्यो, दिल्ली नगर राघव संचर्यो।
वांचे राघव शास्त्र अनेक, वात वखांण करें सुविवेक ॥४५॥
जस विसतरियो दि [ल्] ली माँह, तेडाव्यो पंडित पतिसाह।
आलम ने दीधी आसीस, द [ल्] लीपत कीनी बगसीस ॥४६।

राघव आलम पासें रहें, असपतिरी बगसीसां लहें ।
राघव कुबधि कियो मंत्रणो, कादु वैर हवें चोगणो ॥४७॥
रतनसेन ऊपर रिम राह, ले जाऊँ चित्रगढ़ पतिसाह ।
कोइक करस्यु हुं कलि चाल, रतनसेन भांजु भूपाल ॥४८॥
भाट एक सु भाईपणो, तिण सु कहीयो ए मंत्रणो ।
अंब खास बेंठो असप [ऩ] त, हंस पाँख ग्रही सुविग[ऩ]त ।४६।
यारो इस सु भी मकशूल, प्रथवी माँहें कांइ अमूल ।
हजरत इस सु मेहरी खूब, महिला पदमणी हें महबूब ॥५०॥

गाहा

मांन सरोवर मज्झे, निवसे कलहंस पंखिया बहवे ।
ताणंतो सुकमाला, इसा पंखी मम हत्थे ॥५१॥

चौपाई

पूछें आलम पदमणि जेह, सोही बतावो हम कुं तेह ।
अंदर हुरम परिक्खा करो, पदमणि हो सो आगें धरो ॥५२॥
हजरत दीधा खोजा साथ, देख्यो हुरम तणो सहु साथ ।
हस्तणी चित्रणी ते संखणी, इसमें कोई नही पदमणी ॥ ५३॥
किस थांनिक हैं कहो हम भणी, सींघलद्वीप अछें पदमणी ।
जास्यु सींघल लेस्यु हेर, जिहां हुवें जिहां ल्याउं घेर ॥५४॥
सींघल ऊपर थया तियार, आलिमसाह हुआ असवार ।
ल्हसकर लाख सताविस लार, उदधि पास आव्या तिणवार ।५५।
दीठो आगें उदधि अथाग, मांनव कोइ न लाभें थाग ।
उदधि ऊपर ह [ल्]लां करें, आलिम को कारिज नवि सरें ॥५६॥

जिहां जे बेसाड्या जूभार, बूडा उदधी में तिण बार।
जंपें आलम राघव व्यास, कीधो कटक तणो सहु नाश ॥५७॥
ओर वताओ कोई ठोड, कहें राघव पदमण चितोड़।
लेत्तां ते मुसकल अतिघणी, सेसतणी दुरलभ जिम मणी ॥५८॥
रतनसेन वांको रजपूत, महा सुभट माभी मजबूत।
आलिम कहें हिन्दू का क्याह, गढ़ चीत्तोड चढ़ं उच्छाह ॥५६॥
पदमणि गहि बांधु हिंदवांण, तोहुँ तखत वडो सुलतांण।

दूहा

सुण राघव आलिम कहें, कह पदमणि सहिनांण।
करु ह(ट्)ठ तस ऊपरें, गढ़ घेरु घमसांण ॥६१॥
सुण हजरत राघव कहें, नवरस महि सिणगार।
नांम च्यार हें नायका, वरणव कहुं विचार ॥६२॥

कवित्त

सुन हो साह कहें व्यास, धरहुं रस पेम उकत्तह।
वाखानहुँ सींगार, सुन हो चित होय सुरत्तह ॥
किती भांत नायका, कोन गुनरूप विलासह।
भाँत भाँत कहि भेद, करिहु निज बुध प्रकासह ॥
आलिम साह सुनीइं अरज, च्यार जात त्रिय के कहें।
नायका तीन सबके घरे, वखत वार पदमणि लहें ६३॥
कहें साह सुनि व्यास, करहो सबके बाखांणह।
रूप लच्छन गुन भेद, तुम हो सब बात सयांणह ॥

तनवि चित्रणी विचित्र, हस्तनी मस्त हसती।
संखनि कुचित सरीर, नार पदमणी छत्रपती ॥
संखनी पांच हस्तनी दसह, पनरह रूप सु चित्रणी।
कहै राघव सुलतान सुंन, वीस विशवा पदमणी ॥६४॥

दूहा

सुनि सब त्रिय के रूप गुण, इम जंपहि सुलतान।
अब चित पाई पद्मनी, करहुं विशेष वखांण ॥६५॥
पदमनि निरमल अंग सब, विकसत पदमणि [सु] हेज ॥
प्रेम मगन ऐसी खुलें, ज्युं पंकज रवि तेज ॥६६॥

छप्पय

चित चंचल वय स्याम नैन मृग भ्रोइ अलिगन।
तिल प्रसून तस समन सिहासन मुख अधर विद्रुमन ॥
अति कोमल सब अंग वयण सीतल अति हंस गति।
तन सूछिम कटि छीन प्रगटी दामनि देह द्युति ॥
आनंद चंद पूरण वदन, मन पवित्र सब दिन रहै।
आहार निमख इच्छित अमल, विमल ठोर पदमनि लहै ॥६७॥

दूहा

पदमणि चंपक वरण तन, अति कोमल सब अंग।
चिहुं ओर गुंजित भमर, निमखन छारत संग ॥६८॥

सवैया

बालस वेस रहैं सबही दिन, मान करें न कछू दिन लाजें।
सेत सरोज सुं हेत धरे, अति ऊजल चीर सरीरहि छाजें।
वारिज कोस वन्यो मदन ग्रह बीरज नीरज वास बिराजें।
देह लही मनमत्त निरंतर रंभा के रूप पदमणी छाजें ॥६६॥

कवित्त

रूपवंत रतिरंभ, कमल जिम काय सकोमल।
परिमल पुहप सुगंध, भमर बहु भमें विलावत।
चंप कली जिम चंग, रंग गति गयंद समांणी।
ससि वदनी सुकमाल, मधुर मुख जंपें वाणी ॥
चंचल चपल चकोर जिम, नयण कंत सोहैं घणी।
कहें राघव सुलतांन सुण, पुहवी इसी ह्वें पदमणी ॥७०॥
कुच युग कठिण सरूप, रूप अति रूडी रांमा।
हसत वदन हित हेज, सेझ नित रमें सुकांमा ॥
रूसें त्रूसें रंग, संग सुख अधिक उपावें।
राग रंग छत्तीस, गीत गुण ग्यांन सुणावें ॥
सनांन मंजन तंबोल सुं, रहे असोनिस रागणी।
कहें राघव सुलतांन सुण पुहवी इसी ह्व पदमणी ॥७१॥
बीज जेम झलकंत, कांति कुंदण जिम सोहैं।
सुरनर गुण गंधर्व, रूप तृभुवन मन मोहैं ॥
त्रिवली, मयतन लंक, वंक नहु बयण पयंपें।
पति सुं प्रेम अपार, अवर सुं जीह न जंपें ॥

सांम धरम ससनेहणी, अति सुकमाल सोहामणी ।
कहैं राघव सुलतान सुण, पुहवो इसी हैं पदमणी ।।७२।।
धवल कुसुम सिणगार, धवल बहु वस्त्र सुहावें ।
मुत्ताहल मणि रयण, हार ह्रिदयेस्थल भावें ॥
अलप भूख त्रिस अलप, नयण बहु नींद न आवें ।
आसण रंग सुरंग, जुगति सुं काम जगावें ।
भगति हेत भरतार सुं, रहैं अहोनिस रागणी ।
कहैं राघव सुलतांन सुण, पुहवी इसी हैं पदमणी ।।७३।।

चौपाई

पदमणि रा गुण सुणिया एह, जंपें असपति सुंण अबेह ।
करु चढ़ाई गढ चीतोड, अब हींदू कु नाखु तोड ।।७४।।
पोरस आण लेऊं पदमणी, रतनसेन पकडु गढ धंणी ।
दोडाया कासीद सताब, तेड्या मुगल पठाण नबाब ।।७५।।
निरमल जोधा जें सम्झ किया, आधी राति दमांमा दिया ।
सबल सेन सु आलिम चल्यो, धर धूजी वासिग धड़हड्यो ।।७६।।

कवित्त

हसि बोल्यो सुलतांन, मौंण कर मुंछ मरोड़ी
रतनसेन कुं पकड़, चित्रगढ़ नांखु तोड़ी ।
हय कंपें चक च्यार, थरकि जलनिधी अकुलांणों ।
सरग इंद खलभल्यो, पड्यो दस दिसींह भगांणों ॥
फरवांण देस दिसहिं फटें, सब दुनियाण असी सुणी ।
मारिहैं रतन हिंदुआंणपति, साह पकड़िहैं पदमणी ।।७७।।

चौपाई

गढ चीतोड़ तणी तलहठी, इण पर आयो आलिम हठी।
लाख सताविस लसकर लार, डेरा दीधा अति विसतार ॥७८॥
धूंस नगारें धूजें धरा, गाजें गयण अनें गिरवरा।
हठियो आलम साह अलाव, गढ़ भंजण चित मन में दाव।
रतनसेन पण रोसें चढ्यो, पींधो आलम आवी पड़्यो।
सुभट सेन तेड़ाया सहू, बहु से बलवंत आया बहू ॥७९॥
रतन सझ्यो गढ़ अवली बांण, छोडें नाल गोला नें बांण।
रतनसेन बोले गजखंभ, हींदू धरम तणो उत्तंभ॥
पतिसाही रणवट पांहुणो, भोजन जीमाडां खगतणो ॥८०॥
आ [व] ध नाना विध पकवांन, आतस गोला खाग विधांन।
खाठी भगत जिमाडो इसी, खग घ्रत मद धारा [नां]
मोजसी ॥८१॥

इसो चखावो अजरोरु [क्] क, फिरें न लागें रणवट मु[क्] ख।
आपें पाखें अवर कुंण इस्यो, झेलें पांहुण आलिम जिस्यो ॥८२॥
उत अलाव इत रयण नरेश, हींदूपति ने पति असुरेस।
मांहो मांहे करें संग्राम, मुगल पठांण बहु आव्याकांम ॥८३॥
असपति कोइ न चालें जोर, रतनसेन रांणो सिर जोर।
ये ऊपर थी भिड मारिका, असपत्ति सहिवें फाटा बका ॥८४॥
कोइक तोत तणा करि मता, रतनसेन पकडां जीवता।
वचन तणा दीजें बेंसास, विण फंदे पाडीजें पास ॥८५॥

मूंकीजें पक्का परधांन, एम कहावें द्यो हम मान।
तेडी मांह खवावो खांण, निजर देखावो आहीठांण ॥८६॥
पदमणि हाथें जीमण तणी, खॉंत अछें म्हांनुं अति घणी।
कांई न मांगें आलमसाह, छडा साथ सुं आवें माँह ॥ ८७ ॥

कबित्त

हमहि पठाए साह, कहण कुं कथ अवल्ली।
जो तुम मानों वाच, साह फिर जावें द [ल] ली।
दिखलावो पदमनी, और सब गढ़ दिखलावो।
विग्रह को नवि करही, बाँह दें प्रीत वधावो।
गढ़ देख मिलहि सिरपांव दें, बहुत मया आलिम कर (ही)।
रतनसेन सुण (हो) वीनती, सुहर मांह दुतर तरही ॥ ८६ ॥

चौपाई

बोल बंध द्यो साचा सही, वाच हमारी विचलें नही।
नाक नमण करि कोट दिखाय, पदमणी हाथें मुभ्क जीमांय ॥६०॥
मांहों मांह करे संतोष, हिव मेटो अति वधतो रोष।
वलता कहें रतन राजांन, मा [ह] रां कथन सुणो परधान ॥६१

कवित्त

सुणि वजीर कहें राव, राम सिर पर राखीजें।
बांको गढ़ चीतोड़, सगत सुलतांन हलीजें।
म करहो हठ गुमांन, तुमहुं साहिब तुरकाणे।
रजधारी रजपूत, हमही साहिब हिंदवांणे।

क्युं कहें बहुत श्री मुख वयण, हम रखही घर अप्पणो।
किरतार कियो न मिटें किण ही, त्याग खाग हिंदू तणो ॥ ९२ ॥
कहें वजीर सुनिराव, तुमही क्या ओपम दीजें।
तुम सूरज हिंदवांण साह कही एती कीजें।
दंड द्रव्य नहिं पेसु देस तेरा नहिं चाहुं।
नहिं हम गढ री प्यास, राजकुमरी नहिं व्याहुं।
करिहो न तुझ करहि फरक्क, राज महल नहिं आहडुं।
करि नाक नमण करीइं रयण, देख कोट फिर बावडुं ॥ ९३ ॥
सुण हो बहुरि राजांन, इह हरजत फरमाया।
पूछें ग्यान कुरांन, तिहां एता दिखलाया।
रतनसेन अ [ल] लाव, पुव्व जन्मंतर भाई।
म्हे तप किया असोच, तिण पतिसाही पाई।
तें किया पवित्र दिल पाक तप, हीं दूपत पायो जनम।
हम तुम तेरो समा कुल ही, करत प्रीत रहीइं धरम ॥ ९४ ॥

चौपाई

खेमकरण वेधक परधान, इम कही सघलि मेंलीधांन।
हिंदू सदा निरमल दिल हुवें, धोलो सहु दूध ज लेखवें ॥ ९५ ॥
तेडी रांण तणा परधान, पुहतो जई पासें सुलतांन।
दीधा बोल बांह सुलतांन, हम तुम विचें ए छें रहमान ॥ ९६ ॥

श्लोक

मुख पय दला कारं, वाचा चंदन शीतलं।
हृदय कर्तरी तुल्यं, त्रिविधं धूर्त लक्षणम् ॥ ९७ ॥

चौपाई

राघव व्यास कियो मंत्रणो, रतनसेन ने झालण तणो।
नृप मन कोय नहीं छल भेद, खुरसांणी मन अधिको खेद ॥६८॥
घरभेदू विण घर नवि जाय, घरभेदू थी घर ठहराय।
घर भेदें लंकागढ़ गयो, राघव घरभेदूं हम कियो ॥६६॥
साह माहें पधारो राज, रतनसेन तेड़ें महाराज।
आलिम साथ कियां असवार, सलह संपूरित तीस हजार २५००

कवित्त

चढ़यो गढ सुलतांन, खांन निबाब लीया संग।
तीस सहस असवार, सिलह नख चख ढ़कें अंग।
पडें धुंस नीसाण, गिरंद चीतोड गडक्कें।
सहिर लोक खलभलें, धीर छूटे चित्त धड़क्कें।
विझुरें रयण मेल्यो कटक, ठोड ठोड सांमंत कसें।
मनुख देख गयंद मेंमत घटा, मयंद कपोरिस उलसें ॥२५०१॥

चौपाई

आवि मांहें हुआ एकठा, तव सगलें दीठा सामठा।
रतनसेन मन खुणस्यो सही, आयो आंगण आलिम चही २५०२
नृप पण सेना सगली सार, असवारे मिलिया असवार।
तुंगे तुंग हूआ एकठा, जांणक बादल उत्तर घटा ॥ २५०३ ॥
…………आलिम पिण न सकें आंगमी।
आलिम तांम कहें सुण भूप, क्युं मेलत हो कटक सरूप ॥ ४ ॥

में लडणे कुं आया नहीं, गढ़ देखण की हैं दल सही।
न धरो मन में खोटा खेद, मेरे मन नांही छल भेद ॥ ५ ॥

कवित्त

कहें रतन सुण साह, चूक करि लाह न खटी हुं।
रूक वाव वज्जही, बादल जिम तुम फट्टिहुं।
तन गुमांन मग धरहुं, करहुं जिण कोइ कपट्टह।
आए चली आंगणें, तास हम लाज निपट्टह।
गज गाह बाँध ऊभें सुहड, मूंछ मरोडी मगज भरि।
हम हुकम होत सम फोज सिर, पड़िही कंस सिर बीजड़ि ॥ ६॥

चौपाई

आलम जंपें सुण राजांन, घर आयां बहु दीजें मांन।
थोड़ा होवें होवें घणा, झेली लीजें निज पांहुणा ॥ ७ ॥
धान तणो छें आज सुकाल, घणां घणां कांइ करें भूपाल।
हम मिलवा आवें ऊमही, लड़वा कुं हम आवें नही ॥ ८ ॥
राय कहें सांभल पतिसाह, भलें पधारो आलिम साह।
वलि तेडावो जांणो जिके, पिण लघु बोल म बोली बके ॥ ९ ॥
बोलें बोल बिहुं हुआ खुसी, हाथें ताली दीधी हसी।
मांहो मांह हुओ संतोष, राय तणें मन मिटियो रोष ॥१०॥
करि दरगह बेंठो सुलतांन, आगें ऊभा सबे राजांन।
फेरवीजें घोडा गजराज, रुपक भेंट करें कविराज ॥११॥
रतन गया तब महिलां भणी, भगत करावण भोजन तणी।
पदमणि प्रति राजा इम कह्यो, आलम सुं जिम तिम रस रह्यो ॥१२॥

भोजन भगत करो हिव इसी, जिम दल्लीपति होवें खुसी।
पदमणि नार कहें पिय सुणो, हुं हाथें न करूं प्रीसणो ॥१३॥
खट रस सरस करें रसवती, प्रीसेसी दासी गुणवती।
सणगारो सघली छोकरी, खांत अछें जो तुम मन खरी ॥१४॥
पदमणी पास रहें सावधान, वीस सहस दासी रूप निधांन।
रूप अनोपम रंभातिसी, कांम नि सेना होवें जिसी ॥१५॥
आसण बेसण नें विध किया, ऊपर छाया डेरा दिया।
गादी मुंडा मांहें अनूप, जरी दुलिचा अति हें सरूप ॥१६॥
ठोड ठोड ऊभा हुसियार, छडीदार प्यादा पडिहार।
सवे महिल सिणगारी करी, चिग पडदा नांखी झालरी ॥१७॥
त्यारी हुई रसोडा तणी, मांहे तेड़्या दल्ली धणी।
देखी साह महिल सत खणा, जांण विमान अछें सुर तणा ॥१८॥
खुस खांणें बेंठो पतिसाह, बेठें खांन निबाब दुव्वाह।
पदमणि मांहें अधिक पंडूर, दासी आय देखावे नूर ॥१९॥
इम मंडे पत्रावलि बाल, मांडें एक कचोली थाल।
इक झारी भरि हाथ धोवाव, ढोलें चंमर बीजें वाव ॥२०॥
इक मेवा प्रीसें पकवान, साल दाल सुरहा घृत धांन।
विंजन विध विध प्रेम सुवास,
सुर पिण मोती [दा] ण कविलास ॥२१॥
भूलो साही कहें अल्लाह, यह हींदूवांण के पतिसाह।
देखी दासी रूप विलास, आलिम चित में हुओ उदास ॥२२॥

देख देख सूरत सब तणी, कहें साह यह सब पदमणी।
ऐंसी महिरी एक अलाह, हमकुं एक न दीधी नाह ॥२३॥

कवित्त

कहे व्यास सुण साह, हैं तारीफ पदमनी।
आफताब महिताब, जिसी वद [ल्] ल दांमनी॥
सोवन वेल समांन, मांनसर जेही हँसनी।
जिन (ज) तन कमल सुवास, तास गुन सेवही
सुरवेन कलपवृछ जेहवी, मोहनवेल चितामनी।
कवि लघु अक लिइक हैं रसन, क्यूं ग्रनही सोभा घणी ॥२४॥
लख दस लहें पलंग, सोड सत लख सुणीजें।
गालमसूरवा सहस, सहस गीदूआ भणीजें।
तस ऊपर दुपट्टी, मोल दह लक्ख लद्धी।
अगर चंदण पटकूल, सेफ कुंकम पुट दीधी।
अलावदीन सुलतांन सुण, विरह विथा खिण नवी खमें।
पदमणी नार सिणगार सभ, रतनसेन सेमें रमें ॥२५॥

चौपाई

अवर न देखें पदमनि कोय, जे देखें तो गहिलो होय।
पदमनि पुन्य पखें किम मिलें, जिण दीठे अपछर ग्रव गले ॥२६॥
इम ते व्यास अनें सुलतांन, वात करें छें चतुर सुजांन।
तिण अवसर पदमणी चिंतवें, आलिम केहवो जो इम चवे ॥२७॥
तितरें दासी जंपें एक, गोख हेठ बेंठो सुविवेक।
तसुमुख देखण तव गजगती, आवी गोखें पदमावती ॥२८॥

जाली मांहें जोवें जिसें, व्यासें पदमणि दीठी तिसें।
ततखिण व्यास इसुं वीनवें, स्वांमी पदमिण देखो हिवें ॥२६॥
रतन जड़ित जे छें जालिका, ते मांहें बेंठी बालिका।
आलिम उंचो जोवें जिसें, पदमणि परतिख दीठी तिसें ॥३०॥
वाह वाह यारो पदमनी, रंभ कि ना ए छें रुकमणी।
नाग कुमा [रि] र किना किन्नरी, इन्द्राणी आंणी अपछरी ॥३१॥

कवित्त

कहें साह सुनि व्यास कहां मेरी ठकुराई।
में मदहीन गयंद में बलहीन मृगपति।
में वद्दल जलहीन, (में हूँ) विंजन विन लुहन।
में हीरा विन तेज, में हुं योगी विन मोहन।
विन तेज दीपक विण सूर दिन, कहा बहुत फिर फिर कहुं।
नही जाऊं दल्ली विन पदमनी, फकीर होय वन में रहुं ॥३२॥

चौपाई

व्यास कहें सांभल सुलतांन, फोगट काय गमावो मांण।
धीरज धरि साहस आदरो, अवर उपाय वली को करो ॥३३॥
रतनसेन जो पानें पड़ें, तो ए पदमणि हाथें चड़ें।
इम आलोची मेली घात, धीरपणा विण न मिलें घात ॥३४॥
इम करतां जीम्यो सहु साथ, भगत घणी कीधी नरनाथ।
श्रीफल देइ धात तंबोल, मांहो मांह किया रंग रोल ॥३५॥
हिवें इम जंपें आलिम साह, मांहो मांह झाली बांह।
परिघल दीधी पहिरावणी, जरकस नें पाटंबर तणी ॥३६॥

हाथी घोड़ा दीधा घणा, संतोष्या सगला पांहुणा।
तुम महिमानी कीधी घणी, कोट देखावो तुम हम भणी ॥३७॥
रतनसेन नृप साथें थया, आलिम गढ़ दिखलावण गया।
विषम विषम हुंती जे ठोड़, फरि देखाड्यो गढ़ चीतोड़ ॥३८॥
विखम घाट अति वांको कोट, मांहि न[ही] देखें कांई खोट।
गोला नाल वहें ढीकली, कदही कोइ न सकें नीकली ॥३९॥
गढ देख्यां गढ़पति ग्रब गलें, एहवो कोट कही नवि भलें।
इम जंपें ही आलमसाह, तुम हो रतन हमारी बांह ॥४०॥
कांम काज केजो हम भणी, तुम महिमांनी कीधी घणी।
आलिम रीझ दीइं गहगही, सीख दीए वलि ऊभा रही ॥४१॥
अधिपति कहें अघेरा चलो, में दरबार देखां रावलो।
एम कही आगो संचरयो, रांणो गढ़ बाहिर नीसरयो ॥४२॥
नृप मन में नहि कां(इ) छल भेद, खुरमांणी मन अधिको खेद।
व्यास कहें ए अवसर अछें, इम मत कहियो न कहियो पछे ॥४३॥

यतः

खड सूका गोड मूआ, वाला गया विदेश।
अवसर चूका मेहड़ा, तू ठा कहा करेश ॥४४॥

चौपाई

असपति हलकारया असवार, मांहो माहें मिल्या जूझार।
रांणो रतन झाल्यो ततकाल, बिचली बात हुई असराल ॥४५॥

दूहा सोरठा

असपति अंब सरीख, रुंखां पुरखां राजवी ।
मुह मीठा उर, वीख, कहो दई केम पतीजिइं ॥४६॥
नरपति अरि नाहर तणा, को विसवास करेह ।
जे नर क [च] चा जाणीइं, आलम एम कहेह ॥४७॥
बेरी विसहर वाघ नृप, ग्रासी गढ़पति आप ।
छलबल ग्रहीइं दाव सही, कोइ न लागें पाप ॥४८॥
तुम हम महिमांनी करी, अब तुम हम महिमांन ।
वो पदमणि छोडुं परा, रतनसेन राजांन ॥४६॥

चौपाई

सुहड़ हुंता जे साथ सबेह, तियां चढ़ाई रजवट रेह ।
आंण्यो पकड़ लसकर मांह, रवि नें ग्रहियो जाणें राह ॥५०॥
बेडि घालि बेसाड्यां रांण, जुलम अन्याय कियो सुलतांण ।
रांणो रतन हुंतो बलवत, पकड्यां निबल हुओ ए तंत ॥५१॥

यतः

अंगा गमु गते शत्रु, किं करोति परि [च] छद[ः] ।
राहुणा ग्रहते चंद्रे, किं किं भवति तारके ॥५२॥

चौपाई

सुणी सहू गढ़ मांहें वकी, वात तणी विनठी वांनकी ।
हलबल हुई सहर बाजार, पकड़ांणो रांणो सिरदार ॥५३॥
तेड्या सुहड दशो दिश वली, सैन्या सघली गढ़ में मिली ।
कटक सइया घण हील किलोल, सबलज ढाई गढरी पोल ॥५४॥

कुमती रतन कहीए रांण, तेड्यो गढ़ मांहें सुलतांण ।
गढ़ उतरे पहुँचांवण गयो, करे तोत रतन पकडीयो ॥५५॥

राजा तो पड़िया तिण पास, असुर तणो केहो विसवास ।
पकड़्यो नृप पदमणि पिण ग्रहें, गढ़ चीतोड हिवें नहीं रहें ॥५६॥

असवंत बेंठां जुड़ि दरबार, जालिम तेड़्या सह जुमार ।
मांहो मांहें करें आलोच, गढ़ में हुओ सबलो सोच ॥५७॥

एक कहें लडां भूभांगढ़ माह, एक कहे द्यो राती वाह ।
एक कहें अधिपति सांकड़े, लडता जेहनें भारी पड़ें ॥५८॥

एक कहें नायक नहि मांह, विण नायक हतसेन कहायं ।
एहवो कोइ करो मंत्रणो मांन रहें हींदु ध्रम तणो ॥५६॥

इम आलेचे सांमंत सहू, चित उपजी चित में बहू ।
तितरें आयो इक परधान, हुकम करें छें इम सुरतांन ॥६०॥

तेड्यो मांहें नीसरणी ठवी, मंत्री मांहें बुध जाणंग कवी ।
इम जंपें छें आलम साह, तुमे कहो तेहनें यूं बांह ॥६१॥

हमकुं नारि दीयो पदमणी, जिम म्हें छोडुं गढ़ का धणी ।
एम कहेनें गयो प्रधान, सवि आलोच पड्या असमांन ॥६२॥

कहो हिवें पर कीजें किसी, विसमी बात हुई या ख्रिसी ।
जो आंपां देस्यां पदमणी, तो रिणवट न रहें आपणी ॥६३॥

विण दीधां सवि विणसें बात, पदमनि विन न मिलें कोइ घात ।
ऐतो जोरें लेसी सही, जे आया छें इण गढ़ वही ॥६४॥

कवित्त

कहैं कुंअर जसवंत, सुनहो उमराव प्रधांनह ।
रख्खहुं गढ की सोभ, धरा रख्खहुं हिंदवांणह ॥
हैं राजा परवसें, नहें चल देखें भली ।
देहुँ नार पदमनी, साह फिर जावें दिल्ली ॥
गढ़ आय रांण बेंठहीं तखत, चमर ढलाव हीतूक धर ॥
सिल हेठ हाथ आयो सु तो, छल हिकमत काढही सीपर ॥६५॥

चोपाई

सुभटे सघले थापी वात, हिवें पदमणि देस्यां परभात ।
इम आलोची ऊठ्या जिसें, पदमणि सवि सांभलिया तिसें ।६६।

कवित्त

कहैं पदमनि सुनि सखी, बात यह कुमर बिचारें ।
हम देई पतिसाह, धरा गढ़ रांण उगारें ।
में सींघल उपन्नी, राजपुत्री कहेंवांनी ।
गढ़पति रतन नरेश, भई ताकी पटरांनी ।
अब बहुरि तांमह किण विध करहुं, म्हे कुळवंती कांमनी ।
हिंदवांण वंश लञ्जन लगें, थू थू कहीइं दुनी ॥६७॥
गढ़पति पकड्यो साह, राह जिम चंद गरासें ।
बिनु दोधे उगहैन, सुभट कहा ओर बिमासें [ह]
भवति जोग कछु सु वो मिटे नही अभीतह
आप मुआं जुग बुडिहें, दुनीयां नह उकत्तह ।

मेर मरंत सबही रहीइं धरम, धर रक्खहि रक्खहिं धनी।
छूटहैं हठ सुलतान चित, जब मृत्यु सुनिहैं पदमनी ॥६८॥
कहैं पदमनि सुन स्यांम, राम रघु सीता वल्लभ।
दशरथ सुत हो तु[ज्]झ, तुमहि ल[ज्]जा कै ओठंभ।
औरन कोई इलाज, आज संकट दिन आयो।
धरही चितन में दया, करहुं संतन को भायो।
असुरांण रांण पकड्यो रयण, चाहैं मुझ मन में चहू।
अनाथ नाथ असरण सर[ण्]ण, राख राख एती कहूँ ॥६९॥

सवैया

कैसें तुम मृगणी के गन निगर्णे भरथ,
कैसें तुम भीलणी के झूठें फल खाये थे॥
कैसें तुम द्रोपदी की टेर सुनि द्वारिका में,
कैसें गजराज काज नाग पर धाए थे॥
कैसें तुम भीखम को पण राख्यो भारथ में ?
कैसें राजा उग्रसेन बंध थें छोराए थे॥
मेरी बेर कांन तुम कान बंद बैठ रहें,
दीनबंधु दीनानाथ काहि कु कहाए थे ॥७०॥

दूहा

पंखी इकलो वन्न में, सो पारधी पचास।
अबके जळहो उगरें, अ[ल्]ला तेरी आस ॥७१॥
सुभट भए सतहीन सब, आलिम पकड्यो राज।
सांई तेरे हाथ हैं, म्हो अबले की लाज ॥७२॥

चौपाई

अवसर इण हुओ छें जेह, थिर मन करिनें सुणज्यो तेह ।
तिण गढ़ गोरो रावत रहें, खित्रवट तणी विरुद भुज वहे ।।७३।।
तास भतीजो बादलराव, सर तानें भरिया दरियाव ।
ते बेवे छल बल रा जांण, बेवे रावत बे कुल भान ।।७४।।
पिण तेहनें नहि सुनिजर स्वांम, रोकड़ ग्रास नही को गांम ।
घरे रहें न करें चाकरी, रतनसेन मुंक्या परहरी ।।७५।।
रावत बे जाता था जिसें, गढ रांहो मंडांणो तिसें ।
रुंधेगढ़ नवी जाइंतेह, जातां खत्रवट लागें खेह ।।७६।।
तिण [रे] कारण महिरहिया टेक, हिवें जास्यां कांइ हुआं एक ।
अंग तणो न तजें अभिमांन, सूर महाबल जोध जुवांन ।।७७।।
खत्री सोहि खत्रवट चलें, मरण हीए पिण नवि नीकलें ।
भुंडा भलां पटांतर जांम, छायां जेम हुवें खगजांम ।।७८।।
पिण तेहनें नवि पूछें कोय, जो पूछें तो इम कांइ होय ।
जांणहार हुवें धरती जांम, सभ जोचंतां राखे जांण ।।७९।।
चिंते चितमांहें पदमणी, गोरो बादल सुणीजें गुणी ।
त्यांसुं जाय करुं वीनती, बीजां मांहि न दीसें रती ।।८०।।
इम आलोची पदमणि नार, सुखपालें बेंठी तिणवार ।
आवी गोरल रें दरबार, साथें सयल सखी परवार ।।८१।।
गोरो सांमो धायो धसी, विनय करी नें आयो हसी ।
मात मया बहु कीधी आज, भले पधास्या दाखो काज ।।८२।।

सुभटें सगलें दीधी सीख, दया धरम री नहिं आरीख।
सीख दियो हिवें तुमें पिण सही, जिम असुरां घर जाऊं वही ८३
सुभट सबें हूआ सतहीन, प्रथवी खत्रीवट हुँई खीण।
सुभटें सगलें दाख्यो दाव, पदमनी दे नें लेस्यां राव ॥८४॥
हिवें तुमें सीख दिइयो छो किसी, कहोवात अधिकाई किसी।
गोरो जंपें सुण मुझ मात, होसी सघली रुडी बात ॥८५॥
जो तुम आया मुझ घर वही, तो असुरां घर जास्यो नही।
रजवट तणो नहीं संकेत, नारी देई कीजें जैत ॥८६॥
बलि मरवो रजपूतां भलो, आमों सांमो करवो कलो।
श्री देइ नें लीजें राव, सकज न थाइ एह कुदाव ॥८७॥

कवित्त

तुं रजधर गोर [ल्] ल, तु ही सांमंत सक [ज्] जह।
तु ही पुरस हिंदवांण, रांण धर सहु तुज भु [ज्] जह॥
वीरधीर बडवीर, तुं ही दल बीडो झलें।
तुं मुझ दें अहेंवात, नारि पदमणि इम बोलें।
सुहडा अवर सतहीण सबे, यह जस तो भुजे हेंकिलो।
अलावदीन सुंखगांवलीं, हींदूपति छोडाविलो ॥८८॥

चौपाई

गोरो जंपे सुण मोरी बात, गाजण हुँता वडा मुझ भ्रात।
तस सुत वादल छें बलवंत, तेहनें पण पूछो ए मंत्र ॥८९॥
तब पदमणि गोरल ससनेह, पोहता जइ वादल रें गेह।
देख आवती थयो मन खुशी, वादल सांमो आयो हसी ॥९०॥

विनयवंत करि पग परिणांम, काका नें वलि कीध सलांम ।
गोरो जंपें बादल सुणो, सुहडें थाप्यो ए मंत्रणो ॥६१॥
पदमणि देई लेस्यां राव, अवर न कोई चितें दाव ।
पदमणि आया आपण पास, आंणी आम्हो मन विशवास ।६२।
हवें तु जेम कहे ते करां, नीचो देतां लाजें मरां ।
आपें डीलें छां दो जणां, आलम साथे लसकर घणां ॥६३॥
कहो जीपेस्यां किम एकला, किला न होवें कदही भला ॥६४॥
तिण कारण तो पूत्रण भणी, आव्यों साथें ले पदमणी ।
हिवें करवो रणवट ने ठाह, आपें बेहु भुजें गजगाह ॥६५॥
पदमणि बादल सुं इम कहें, सरणें आवी हुँ तुम तणें ।
राखि सको तो राखां मुज्झ, नहि तर तेहिवां दाखां मुझ ॥६६॥
खांड जीह दहुँ निज देह, पिण नवि जाउं असुरां गेह ।
लाखां जुंहर करिनें वलु, पिण नवि कोट थकी नीकलु ॥६७॥
सील न खंडु देह अखंड, जो फिर उलटें देह अभंग ।
सुहड करावें वलि भरतार, सुझ कुल नहीं हें ए आचार ॥६८॥
सील प्रभावें होमी फते, रिपुदल लागो झंबों मते ।
रहें [अ] गढ़ नें छूटें राय, हुँ पिण रहुं सुजस जग थाय ॥६९॥
परमेसर पिण साहस साथ, अंत हथा करसी जगनाथ ।
लहो सोभाग दीधी आसीस, जीवो बादल कोड वरीस ॥७००

कवित्त

कहें पदमनि आसीस, अखें बादल अजरामर ।
हुं मुझ पीहर वीर, धीर चित मोर बराबर ।

खग भाजइ खुरसांण, मांण रक्खहुँ हिंदवांगह ।
घुरें जेत नासांण, करें दुनीयांण बखांणह ।
संनाह स्याम सरणं सुहड, एह विरुद तुझ भुज लहैं ।
कर घालज्यां समुंछा सुहड, तुज्झ अंक माथें वहैं ॥२६०१॥

दूहा

अद घर बादल बोलियो, मरद जोस मयमंत ।
गहक केहरी गाजियो, दूठ महा दुरदंत ॥२६०२ ॥
काका सुण बादल कहैं, केहो कायर कांम ।
रहां बेर सारा सुहड, एह अमीणो नाम ॥२६०३॥
काका थे [कां] चिंता म करो, अंग धरिहां उलास ।
तो हुं बादल ताहरो, भत्रीजो स्याबास ॥२६०४॥
आलम भाजु एकलो, पोउं पिसुण खग रेस ।
कुलवट उजवालुं किलों, आणुं रतन नरेश ॥२६०५॥
बीड़ो झालरो बादलें, बोले इम बलवंत ।
तुं सत सीता दूसरो, हूँ दूजो हनुमंत ॥२६०६॥
सती तुहारी सामिनो, मिलुं महादल मांण ।
घडि माहें आणुं घरें, रतनसेन राजांन ॥७॥
घरे पधारो पदमणि, मकरो आरत माय ।
बादल बोल्या बोलड़ा, ते नवि भूठा थाय ॥८॥
प [च] छिम सूर न ऊगमें, मेर न कंपें वाय ।
सापुरसां रा बोलडा, फिरे न भूठा थाय ॥६॥

गोरो सांभलि गहगह्यो, सूरिम चढ़ी सरीर ।
कायर पूतां कांपवें, सूर धरावें धीर ॥१०॥

चौपाई

पदमणी घरें पधारी जिसें, बादल माता आवी तिसें ।
सुणज्यो सगलो ते संकेत, हिवड़ा मांह न मावें हेत ॥११॥
नयण भरें मुकें नीसास, माता दीसें अधिक उदास ।
इण पर आवी दीठी मात, विनय करें पूछें सुत वात ॥१२॥
किण कारण तूं माता इमी, कहो वात मन मांनें तिसी ।
आरत केही छें तुम तणे, क्यूं छो चित्त आमण दुमणे ॥१३॥
मात कहें सुण बादल बाल, मांडे कांय लीयो जंजाल ।
दूध दही तूं माहरे एक, तुझ विण कोई नहिं मुझ टेक ॥१४॥
घणा खाए मेगलिया माह, सुहड रह्या छें तिके विमाह ।
मासन वास नही नृप तणो, खरच खावांछां निज गांठनो ॥१५॥
रिण विध किम जांणेस्यो सजी, घर विध वात न जांणो अजी ।
कहि कीधा छें तें संग्राम, अणजांण्यां किम कीजें काम ॥१६॥
आलिम किण पर गंज्यो जाय, आटें लुंण किसा नें थाय ।
बादल पूत अछें तूं बाल, रिण संग्रांम तणो नहि ताल ॥१७॥
अलगा डुंगर रलियांमणा, हुंस हुवें अण दीठां तणा ।
जुद्ध तणा सुख भला अदीठ, वात करंता लागे मीठ ॥१८॥

यतः दूहा

डुंगर अलगा थी रलियांमणा, दीसें इसरदास ।
नेड़ा जाय निरखिजें जदी, कांटा भाठां नें घास ॥१९॥

चौपाई

सीह सबद सुण मेयगल घटा, नासें सगला तेपिण कटा।
जिम आलम भांजुं एकलो, गढ़ चीतोड़ दिखाउं भलो ॥२०॥

दूहा

एक संहेस एकलो, एक एकला घणाह।
सींध सहेसें चोंटियो, जोखे जणा जणाह ॥२१॥

कवित्त

रे बादल कहें मात, वात तुं वीछ करारी।
परिहर मन अभिमांन, बोल बोलहुं विचारी।
सुभट होयें दसवीस, तास वलि आरंभ कीज्यें।
आलिम साह अथाह, समुंद किम बांह तरीज्यें।
बालक गत ओछंछलि, जूझ बूझ जांणें नही।
मुझ वयण मांन सुपसाय कर, तो सुपूत बादल सही ॥२२॥
हुं कित बालो माय, धाय आंचल नवी लगुं।
हुं कित बालो माय, रोय नही भोजन मग्गूं
हुं कित बालो माय, धूलिढिग मांहि न लोटुं
हुं कित बालो माय, जाय पालणें नही पोढुं।
जा जुल नाग आलम जुवन, जास जुद्ध छोड़ं नहें।
रण खेल मचाऊं बाल जिम, नही माय बालो कहें ॥२३॥
तब फिर जंपें माय, बात सुन पूत अधीरह।
गढ़ रोक्यो असुरांण, सुभट सबल ए अधीरह।

पकड्यो राव परहत्थ, कत्थ न हुं झूठ करीजें
नहिं सामंत तुझ भीर, झूझ कहा सोभ लहीजें।
रढ़ चढ़ हुं लहुं बालक जिम, कहें बालक दुख क्युं धरुं।
साह ए समुंद सुलतांण दल, भुजबलि जिम दुनर तरहुं ॥२४॥
कहें बादल सुण मात, कहा फिर फिर बाल (क) कह।
जेठी नट जूझार, दाम गायण हैं पायकह।
बस्त्र सस्त्र कवि रुप, गयंद त्रिय गाह कवित्तह।
एते सब बालक्क [ह], मोल मुंगा जिन तन्नह।
बालुए कान काली दिख्यो, बाले गज देमीम दिय।
अरि सेन चाव बालक्क जिम, देखि ख्याल करी दृढ़ हिय ॥२५॥
कहें बादल सुण मात, देखी एह घात विचारी।
प्रथम सांमी सांकडें, कष्ट भुगतहिं तन भारी।
असपती गढ़ विग्रहां, रह्यो न सुहडां धीर [जु] ज।
राजकुमार बाल [क] क, तास निज नांही स वीरज।
पदमणी मुझ पयठी सर [ण] ण पेख्ख विचख्खन बात सब।
निज वंस अंश ऊजल करण, इह अवसर फिर मिलहि कब ॥२६॥

चौपई

सुतनो सूरपणो सांभली, माता मन मांहें कल मली।
बरज्यो बचन न मांनें रती, तब गई मेली मेठलवती ॥२७॥
बात सहू बहूअरनें कही, जई राखो निजपति नें ग्रही।
म्हांरी सीख न मांनें तेह, रहेसो भेट तुमारो नेह ॥२८॥

सवी श्रृंगार सझे सावता, पहिरी वस्त्र भला भावता।
हाव भाव करें वचन विलास, जिण पर तिण पर पाडें पास ॥२६॥
एम सुणि बहुअर नीकली, झबकंती जांणें वीजली।
सकुलिणी सझ सोल श्रृंगार, आवे वेगि जिहां भरतार ॥३०॥
रूपें रंभ जिसी राजती, मृगनयणी सुन्दर गजगती।
नयणें निरमल देख्यो नेह, सांमधरम दाखें ससनेह ॥३१॥
कोमल वदन कमल कांमनी, दीपें दंत जिमी दांमनी।
हस्त वदन बोलें हितकरी, स्वांमी वात सुणो मांहरी ॥३२॥
आलिम दूठ महा दुरदंत, कहीनें किण पर जूझो कंत।
अरि बहुला नें तुं एकलो, इसें मतें नवीं दीसें भलो ॥३३॥
ते हुं पुरख नही वादलो, जांए जिण पर मांडुं किलो।
वलती अरज वली [छें] इसी, जात नहीं छें जांवा जि नी ॥३४॥
हींसे खेंग सीधुर मारमी, गलबल डूगल करें पारसी।
सोखें खिण इक माहें तलाव, मुख मंकड चित दुष्ट सुभाव ।३५॥
भुरज उडावें दे दे ढलां, मांस भखें बाणें अलगलां।
ऊडंता पंखीया हणें, वालें बांधी कोडी चुणें ॥३६॥
बादल बोलें वलतो हसो, तें ए वात कही मुझ किसी।
हैंवर गेंवर पायक पूर, एकण हाक [क] रुं चकचूर ॥ ३७ ॥

दूहा

इह त्रिय सुणि वादल वयण, जंपें तीय जुबांन।
त्रिया सैझ गंजी नहीं, किम गंजसी सुलतांन ॥ ३८ ॥

चौपाई

खडग युद्ध विसमों छें सही, कूडी रीस न कीजें कही ।
मुझ तन हाथ न घाली सको, भोगी स्वाद लहें जे थको ॥३६॥
असपति घडि विसमां वींदणी, भमुह चढावें मेलें अणी ।
जरह कंचुकी भीडत अंग, विलकुलियो मुख रातो रंग ॥४०॥
मलपें मयमत नारी जेम, वचन विरस चित न धरे पेम ।
अमंगल सीधू नद गावती, छल धर ती डा कुल वावती ॥४१॥
पोरस तणो देखालिस तेज, तिण दिन आविस ताहरी सेज ।
जांलिग पिसुण वखांणें नही, गुणीयण विरुद न द्यें उमही ॥४२॥
तां लग केहा सूर सधीर, वल्लभ मानें जेह सरीर ।
लोही सांटें चाढ़ें नीर, ते कुल दीपक बावन वीर ॥४३॥
जब नारी जंपें कर जोड, अवर नही को ता [ह] रें जोड ।
भलो भलो कहेंमी संसार, सांमधरम रहेंसी आचार ॥४४॥
जिम बोलें छें तिम निरवहें, मत किण वातें जाए ढ़हें ।
लाज म आंणो कुल आंपणें, सांमी साहस जूझें घणें ॥४५॥
जीवन मरण सदानु ं नाथ, हुं नवी मु ं कुं प्रीतम साथ ।
घणो घणों हिवें कासु कहुं, जिम करज्यो तिम हुं गहगहुं ॥४६॥
कंत कहें सांभल सु ंदरी, मोटा वंश तणी कु ंअरी ।
बोल्या बोल भला तें एह, हित वांछें सोही ससनेह ॥४७॥
ओछा घर की आवें नार, कुमत दीए पूछ्यां भरतार ।
तें कुलवंती नारी तणों, महीयल सुजस वधार्‍यो घणो ॥४८॥

अस्त्री आंण दिया हथियार, सभी आऊध उठ्यो तिणवार।
विनय करी माता पग वंद, चंचल चढ़ि चाल्यो आणंद ॥४६॥
गोरा पासें आयो गहगही, काका धीरप राखो सही।
एक वार देखु पतिसाह, देखु कुंअर तणो पिण माह ॥५०॥
कहैं गोरो वादल सुण वात, मुझ तुझ एक अछें संघात।
तुं जावें हुं पाछें रहुं, ए वातें किम सोभा लहुं ॥५१॥
काका न कीजे काची वात, हुं जावुं छुं मेलण घात।
रिणवट्ट मुझ तुज्झ हैं साथ, इण वातें मुझ देखण हाथ ॥५२॥
गोरो रावत राखें घरें, वादल चालो साहस धरें।
सुभट सहु मिलिया छें जिहां, वादल रावत आवें इहां ॥५३॥
सांमधरम सरणें साधार, रिम दल गाहण सबल अपार।
जांणें कुल कीरत धन धर्यो तेज-पूंज सूरज अवतर्यो ॥५४॥
सभा सहू देखी खलभली, सूरातम सामंत अटकलि।
वादल कबहि न आवें सभा, ग्रास न लाभें नहि घर विभा ॥५५॥
सकें तो कांइ विमासी वात, गाजण सुत ए सूर विख्यात।
सुभट राय सुत बेठां जिहां, कियो जुहार आवी नें तिहां ॥५६॥
उठ सुभा सहू आदर दिए, बेठा वादल तव दृढ़ हिए।
पूछें सुभा प्रयोजन आज, कहो पधार्या केहें काज ॥५७॥
बादल बोलें वहिसे इमो, कहो तुमें आलोचो किसो।
सुभट कहैं वादल संभलो, सबल मंडांणो इण गढ़ किलो ॥५८॥
अड्डियो आलम अवलीबांण, गढ़पति ग्रहियो रतनीस राण।
गढ़पिण लेस्यें हिवडां सही, द [ल] ली पत बेंठो हठग्रही ॥५६॥

पदमनि द्यां तो छूटें पास, नहितर गढ़री केही आस ।
गढ़ जातां कोई नवि रहें, वले करां जें तुं कहें हिवें ।।६०।।
बादल बोलें भलो मंत्रणो, तुम आलोच कियो छें घणो ।
पदमणी आपें देस्यां नही, गढ़पति नें छोडावां सही ।।६१।।
इम करतां जे आवां कांम, कुलवट रहसी नांमो नांम ।
काया सांटे कीरत जुडें, [तो] मोले मुंहगी नवी पडे ।।६२।।

दोहा

सींह न जोवे चंदबल, नवि जोवें घर रिद्ध ।
एकलो ही भांजें किलो, जहां साहस तिहां सिद्ध ।।६३।।

चौपाई

सूरातन चित धीरज ऊगांह, परमेसर त्यां आवें बांह ।
तिवें आदरज्यो सतध्रम तणो, सुहडां धीरज दीज्यो घणो ।।६४।।
हुं जाउं छूं लसकर मांह, आवुं वात सहू अवगाह ।
करि जुहार बादल अश्व चढ्यो, साहस नूर सूरातम चड्यो ।।
गढ़री पोल हुंती ऊतर्यो, बुद्धिवंत नें साहस भर्यो ।
निलवट दीपें अधिकों नूर, प्रतपें तेज घणो घट पूर ।।६५।।
सलहें अंग सझ्या साबता, पहिर्या वस्त्र भला फाबता ।
आव्यो एकल मल असवार, जाणे अभिनव इन्द्र कुंआर ।।६६।।
आवत दीठो आलम जिसें, ए आवें हें कारण किसें ।
पूछण मुंक्या सांमां दून, क्युं आवत हें ऐ रजपूत ।।६७।।
आयन किमें पूछ्यो तेह, बोलें बादल अती सनेह ।
आव्यो एक कहेवा वात, पदमणि आंण देऊं परभात ।।६८।।

आलिम मांने मुझ मंत्रणो, तो उपगार करूं हुं घणो।
जाय न किम आलम सुं कह्यो, इम निसुणि असपति गहगह्यो ६६
मांहें तेडायो देइ मान, दीठो असपति मिड असमांन।
तेज तेज दिनकर थी घणी, हुकम कियो खुस बेंसण भणी ॥७०॥
बेंठो बादल बुद्धि निधांन, असपति पूछें करि बहुमान।
क्या तुम नांम कसी का पूत, अब किसका हें ते रजपूत ॥७१॥
क्या तुमको हें गढ़ में ग्रास, को अब आए हो अब पास।
बोलें बादल वलतो हसी, रोम राय घट सहू उल्हसी ॥७२॥
अवसर बोली जांणें जेह, मांणस मांहें जणावें तेह।
विनय करें कर जोड प्रमांण, करिहुं अरज पाऊ फुरमांण ॥७३॥
नाम ठाम सहू विगतें कह्या, महरवांन तब आलम थया।
बादल बोल्यो साहस धरी, स्वामी बात सुणों मांहरी ॥७४॥
पदमणि मुंक्यो हुं परधांन, सुहड न मेंलें निज अभिमांन।
पदमणि देख्या तुम कुं हेठ, भोजन करता लागी देठ ॥७५॥
तिण दिन थी ते चिंते इसो, कामदेव वलि कहीइं किसो।
धन तस नारि तणो अवतार, जिसकें आलम हें भरतार ॥७६॥
विरह विथाकुल बेंठी रहें, अहनिस सुहिणें आलम लहें।
निपट घणा मुंकें नीसास, अबला दीसें अधिक उदास ॥७७॥
आलम आलम करती रहें, मुख करि वात न किण सुं कहें।
मुझ तेडी ए दाख्यो भेद, मुंक्यो करवा विरह निवेद ॥७८॥

दूहा

सुण साहिब आलम अरज, मैं पदमणि का दास।
यह रुक्का हमकुं दिया, हैं इनमें अरदास ॥ ७९ ॥
जो मैं देखुं बदन छब, मेरे कुछ न चाह।
इन्द्रपुरी किह काम की, प्रीत नहीं जिम माह ॥ ८० ॥
रुक्का आलम हाथ सुं, वांचत धर उछाह।
ताती बाती विरह तें, मेटत ही जल दाह ॥ ८१ ॥
निस वासर आठो पहर, छिन ही न विसरें मोह।
जिहां जिहां नयन पसारहुं, तिहां तिहां देखें तोह ॥ ८२ ॥
साह तुमारे दरस कुं, अरध रह्यो जिव आय।
कहो क्या आग्या देत हो, फिर तन रहें के जाय ॥ ८३ ॥
प्रीत करी सुख लेण कुं, सो सुख गयो दुराय।
जेसें सांप छछूंदरी, पकर पकर पछताय ॥ ८४ ॥
बाती ताती विरह की, साहिब जरत सरीर।
छाती जाती छार हुइ, ज्युं न वहत दग नीर ॥ ८५ ॥

कवित्त

कहें पदमनि सुन साह, वाह तुम रुप बड़ाई।
[अहो] कांम रूप अवतार, अहो तेरी ठकुराई ॥
मुझ कारण हठ चढ़े, आप ग्रही खग उनंगे"।
पकड़्यो राण रतन्न, वचन विसवास उलंघे ॥
अब बेंठा है करि मौन मुख, कहा तुमारें दिल बसी ॥
जेही काज एतो कियो, सो क्युं न करहो खुसी ॥ ८६ ॥

में तेरी पग दास, में (हूं) तेरी गुण बंदी।
तुम रहिमान रहीम, मे हुं त्रिय आव मणी ही।
में तो यह पण किया, सेज आलम सुख माणुं।
ना तर तजिहुं प्राण, अवर नर निजर न आणुं।
अब करिहुं [बहु] राज मानहुं अरज, हुकम होय दरहाल इह।
में आय रहुं हाजर खडी, छोडि देहो हिंदवाण पह ॥ ८७ ॥

चौपाई

जब भेजें आलिम परधान, द्यो पदमणि छोड़ं राजांन।
सुहड कहैं वलि मरसां सही, पिण पदमणि को देस्यां नहीं ॥८८॥
में समझाय सुभट सामंत, वीरभाण कुंअर जगजंत।
क्युं क्युं आज ठवें छेकांन, तिण जांणु छूं विणसे बांन ॥ ८९ ॥
पदमणि मुंक्यो हुं तुम भणी, विनय भगत विनवें घण घणी।
वलें जिका होवें छें बात, आवे कहेस्युं ते परभात ॥ ९० ॥
सीख दियो पत्री पढि सही, पदमणि पासें जाऊं वही।
जोती होसी म्हांरी वाट, करती होस्यें अति उचाट ॥ ९१ ॥
विरह विथाकुल [न ख] में विरहणी, कांम पीड दाहें पदमणी।
तुम संदेस सुधारस जिसां, पाउं जाइ कहुं तिहां तिसां ॥ ९२ ॥

दूहा

असपति इण पर सांभली, पदमणि प्रेम प्रगास।
वयणं बाण वेध्यो घणो, मुंके सबल निसास ॥ ९३ ॥
पत्री वांची प्रेम सुं, चतुराई सु- विचार।
कामव कर मुंके नही, नयण लगाई लार ॥ ९४ ॥

कांमण बांण कुण सहि सकें, दाझें सारी देह ।
सुन्दर तणा संदेसडा, निपट वधारें नेह ॥ ६५ ॥
बार बार चुंबन करें, रुक्का कुं मुखलाय ।
अजब पढ़ी है पदमणी, खूब लख्या ए मांह ॥ ६६ ॥
असपति थो अहि सारिखो, सही न सकंतो कोय ।
खील्यो बादल गारुडी, पदमणि मंत्र परोय ॥ ६७ ॥

चौपाई

असपति बोलें बादल सुणो, तुं मेरें वल्लभ पांहुणो ।
भगत जुगत केती कहजीइं, तेरी अकल वसी मुझ हीइं ॥ ६८ ॥
पदमणि सुं कहियो मुझ प्रीत, रुडी पर भाखें सहु रीत ।
जो हम हाथ आई पदमणी, तो तुझ कुं द्युं धरती घणी ॥ ६६॥
सुभट सहू समझावें घणा, थिर कर थापै ए मंत्रणा ।
तुझ नु करस्युं देशज धणी, दूध डांग दिखलावे घणी ॥२७००॥
इस कही कर सुती निज नाह, पहिराव्यो बादल पत्तिसाह ।
लाख सोनिया दीधा सार, हैंवर गेंवर देश अपार ॥ २७०१ ॥
रुक्का लिख देहुं तुम हाथ, मांहें लिखहुं प्रीतम गाथ ।
रुक्का ल्युं नहि आलम तणा, कोइ बांचें तो भाजें मंत्रणा ॥ २ ॥
मुख सुं वात करुंगा घणी, विरह बात सहु आलम तणी ।
मुझकुं सीख दीयो सुपसाय, आलम साह दीयो पहोंचाय ॥३॥
सोवन पोट हमालां सिरें, हय हीसें घेंसारव करें ।
इण पर आयो चित्रगढ़ मांह, पूछें बात सहू परचाह ॥ ४ ॥

रीझ मोकली निज घर श्यार, माता हरख थई तिणिवार ।
देखी साह तणो सिरपाव, देखी सूरातम दरियाव ॥ ५ ॥
गोरो रावत मन गहगह्यो, करसी बादल सगलो कह्यो ।
हरखित नार हुई पदमणी, ए मेलवसी सही मुझ धणी ॥ ६ ॥
सुभट सहू चमक्या मन मांह, बादल मांहें अधिको आंह ।
सगत न छांनी राखी रहें, बांधी अगन होवें तो दहें ॥ ७ ॥

दूहा

विधना ज्यां बुद्धि गुण दियो, नित दो मति मन मंद ।
जे कुंडे किम छाइए, छिप्यो रहें कित चंद ॥ ८ ॥

चौपाई

बादल वस कीयो मंत्रणो, कहुं वात तें सहु को सुणो ।
वीस सहस सझ करो पालखी, वात न किणही जाई लखी ॥ ९ ॥
ऊपर अधिक करो ओछाड, पाखतिया बांधो पतिवाड ।
दो दो सुभट रहो सा मांह, बांधी सस्त्र सलह संन्नाह ॥ १० ॥
लारो लार करो पालखी, कहसां मांहें छें तसु सखी ।
बिचें पालखी पदमणि तणी, परठी सोभ करो तिण धणी ॥ ११ ॥
साचो पदमणि रो सिंगार, ऊपर थापो भंवर गुंजार ।
तिण में रावत गोरो रहो, वात रखें कोई बारें कहो ॥ १२ ॥
छेटी बिचें न राखो रती, लारो लार करो पागती ।
गढरी पोल समीपें बार, सेन समीपें आंणो पार ॥ १३ ॥
एम करी हिवें तुम आवज्यो, वेलां बहुली पडखावज्यो ।
हुं बिच जाय करुं छुं वात, मिलस्यां जिम तिम वातोवात ॥ १४ ॥

हुं ले आवेसु राजान, पोहचावेसु नृप निज थान ।
पछे करेस्यां सबलो कलो, ए आलोच अछें अति भलो ॥१५॥
सुभटे सगले मानी वात, परठ करंतां थयो प्रभात ।
भेद सहू समझावी घडी, चाल्यो बादल चंचल चडी ॥१६॥
पोहतो जाय लसकर मांह, जहां बैठो छें आलमसाह ।
जाए बादल करी सलाम, हरखित बोलें असपति तांम ॥१७॥
बादळ साचा कह संदेश, बगसुं बोहला तोनें देस ।
बादल अरज करें परगडीं, स्वामी बात सिराडें चढ़ी ॥१८॥
कटक सहू समझावें नीठ, पदमणि आंणी गढ़रें पीठ ।
सुहड सहू भाखें छें ऐह, निसुणी स्वांमी विनती तेह ॥१६॥
पदमनि सुं ज्यो छें तुम कांम, तो हिवें राखो मांमो मांम ।
अतरो हुवें हमकुं [वि] वैसास, पदमणी आंणुं जिम तुम पास ।२०।
असपति बोले बलतो एम, कहो विसवास हुवें तुम केम ।
बादल कहें श्री आलम सुणो, विदा करो लसकर आपणों ॥२१॥
सुहड सहू बोलें छें मुखें, बेही स्वारथ चूको रखें ।
पदमणि लेइ न छोडें राव, रखे उपावो असपति दाव ॥२२॥
पहिली पण कीधों छें कूड, तिण वैसास मिल्यो छें धूड़ ।
तिण कारण कहुं आलम साह, लसकर सवही करो विदाह ॥२३॥
जो बलि बीहो तो असवार, पासें राखो सहस बे च्यार ।
अवर थो सहुं आगें चलाय, जिम विसवास अमां मन थाय २४
इम सुणीनें थयो उतावलो, बोलें आलम अति बावलो ।
इम अबीह बीहूं किस थकी, बादल एसी तें क्या कथी ॥२५॥

हुकम कियो असपति हुंसियार, कूंच कराव्यो लसकर लार ।
सहस बे च्यार रहो हम पास, हींदू कुं होवें वैसास ॥२६॥
लसकरियां जब लाधो दूदुओ, हरख घणो मन मांहें हुओ ।
लसकर कूंच कियो ततकाल, चाल्या सुभट विकट विकराल ॥२७॥
मीर मुगल को [इ] खान निबाब, मुगल पठांण घणी जस आब ।
पदमणी सनम करें जे भणी, आगें चलाए दल्ली भणी ॥२८॥
बिया बिया जे जो रण कटा, एकेला भांजें गज घटा ।
डाईल साह नांणें विस्वास, तिण कारण राखण भिड पास २६
सूरा सूरा सहस वेच्यार, असपति पास रह्या असवार ।
आलिम बोले बादल सुणो, कहियो कीधो हें तुम तणों ॥३०॥
वेग मंगावो अब पदमणी, पालो वाचा आपापणी ।
लाख महोर तब रोकड दिया, पहिरावणी वागा समपिया ३१
ते लेई बादल आवियो, हरख्यो माय तणो तब हियो ।
तब सुहडां सुं कही संकेत, हवें जगदीस दियो जेंत ॥३२॥
तुमें संकेत रूडो राखज्यो, पालखी तुमें लेई आवज्यो ।
सत किण वात हुओ आखता, रखे लगावो कांई खता ॥३३॥
इम कहीनें आगो संचर्यो, पालखियां पूठें परवर्यो ।
राघव व्यास जे बुद्धिनिधांन, स्वांमिद्रोह थी नाठी सांन ॥३४॥
छलबल एन लिखांणी काइ, लूंण हरांम तणो परभाइ ।
असपति दीठो आवत वली, बादल बात करो निरमली ॥३५॥
साहिब सांभल मुझ वीनती, पदमणि एम कहें गुणवती ।
आवुं छुं हजरत तुम गेह, आलिम धरज्यो अधिक सनेह ॥३६॥

पण सोहागण मुझनं करें, एह अरज मन मांहें धरें ।
एम सुणि ने आलिम कहें, पदमणि आपें आदर लहें ॥३७॥
पदमणि नारि तणा लख एक, तिण सरीखी नहि नारी एक ।
पदमणि कारण म्हें हठ कियो, वयण लोपि रांणो ग्रहि लियो ३८
मुझ मन खांत अछें तिण तणी, मांनीती करस्युं पदमणि ।
अवर हुरम करसी पग सेव, पदमण कुं पधरावो हेव ॥३९॥
एम कही वलि बादल भणी, परिघल दीधी पहिरावणी ।
ते लेइ बादल आवियो, पदमणि नारी वधावियो ॥४०॥
सुभटां नें सहु भाखी बात, जई मेलावस्युं धातो धात ।
तुम सहु बांह रहेज्यो इहां, बात रिखे को [इ] काढो किहां॥४१॥
आयो बादल असि पर चढ़ी, नव नव बात कहें मन घड़ी ।
होठें बुद्धि वसें तेहनें, कसी उणारथ छें जेहनें ॥४२॥
बात कहंतां लागें वार, फिरि बादल आयो तिणवार ।
परगट आंण धरी पालखी, आलिम देखें सहु सारिखी ॥४३॥
बादल विच विच में वलि फिरें, पदमणि [नें] मिस बातां करें ।
रह्यो पहर दिन एक पाछलो, लसकर दूर गयो आगलो ॥४४॥
किला तणी जब वेलां भई, तब तिहां बादल बोलें सही ।
हजरत एम कहें पदमनी, मुझ ऊभां थई वेलां घणी ॥४५॥
म्हांरी एक सुणो अरदाश, जिम हुं आवुं तुम आवास ।
रतनसेन मुंको इकवार, तिससें बात करुं दोय च्यार ॥४६॥
ले राजा आवुं दरबार, जेम रहें कुलनो आचार ।
आलम बोले सुण बादला, पदमनि बोल कह्या तें भला ॥४७॥

यह बोलें हम होवें खमी, पदमणि न्याय कहीजें इसी ।
हुकम दियो आलम ततकाल, छोड्यो रतनसेन भूपाल ॥४८॥
बादल मांहें छुडावण गयो, रांणो रूम अपूठो थयो ।
फिटरे बाद ल] मुह म दिखाल, सबल लगावी मुमनें गाल ॥४६॥
वेंरी वेंर घणो तें कियो, पदमणि साटें मोनें लियो ।
खत्रीवट मांहें नांखी खेह, खत्री निसत थया सवी गेह ॥५०॥

कवित्त

फिट बादल कहे राव, बाच चूको हिंदवांणह ।
खत्री ध्रम लजीयो, मिट्यो भिड मांन गुमांनह ।
सांम ध्रम लोपीयो, लूंण ताम्रीर न कीनी ।
जीवत शमलें खाल, नारी असपति कुं दीनी ।
कहा करुं म्हें परवस पड्यो, वाच लोप आलिम भयो ।
सत छोड कितो अब जीवहें, तवहीं नीर उतर गयो ॥५१॥
कहें बादल सुनि राव, बाच हिंदवांण न चुक्कहीं ।
खत्री ध्रम ऊजलो, सुहड धीरज न मुक्कही ॥
सांम ध्रम रख्खहें, जस सबहीं कुं प्यारो ।
भुगतिहो गढ़ चित्तोड, इला कीरत विसतारो ॥
मकर [हो] सेव अमपत्तरी, असपति साहिली मेलियो ।
महिमांन मांन दीजें सदा, करहुं आद पुव्व कह्यो ॥५२॥

दूहा

महिल अगनीत गढ़सधर, म्ही तस राज गहिल ।
उस आलम कित हीर सुं, सब विध होय सहल्ल ॥ ५३ ॥

राख रजा सिर रांम की, धरि मन उमंग उछाह ।
राज पधारो चित्रगढ़, सब विध होसी [स] छाह ॥५४॥

कवित्त जात आदि अक्खरो

राव करहुं मन म्यांन, जवनपती हठ हमीरह ।
गुमर किए रस नहीं, ढ़लकी अंजलियह नीरह ॥
परा लेखयो कछू धात, निम्यो निस छति रोस छंडिइं ।
डाव विन घाव होवें नही, वाचहुं पढ़मख्खर हीइं ॥५५॥

चौपाई

भूप प्रीछ उठ्यो तिणवार, असपति बोलें चित्त अपार ।
पदमणि ने मिल आवो जाय, पीछें सीख दीए हित भाय ॥५६॥
राजा चाल्यो पदमणि भणी, सुखपालां देखी घण घणी ।
पेंठा मांहि जिसें पालखी, वाच सहू साची तब लखी ॥५७॥
वादल बोलें रांणा सुणो, अवसर नही ए वाता तणो ।
एक थकी बीजी अवगाह, गढ़ लग पहुंचो सविकां मांह ॥५८॥
स्वांमी धाज्यो घणु सजेत, मांहें जई कीज्यो संकेत ।
साचो कीनो ए सहिनांण, दीज्यो डाका जेंत निसांण ॥ ५९ ॥
रतन तुंहारें वखतें सही, मंत्र भेद पिण हुओ नही ।
सांमधरम नें सत परिमांण, गढ़ रहियो नें छूटो रांण ॥ ६० ॥
एम सुणी राजा रंजिओ, साई सफल मनोरथ कियो ।
कुसल खेम पोहंता गढ़ मांह, जांणक सूरज मुंक्यो राह ॥६१॥
कुसल तणा वाजा वाजिया, तब ते सुभट सहू गाजिया ।
नीसरिया नव हस्था जोध, मांण दुसासन वेर विरोध ॥६२॥

राघव तणो हुओ मुख स्यांम, कूड़ कियो पिण न सर्‌यो कांम
सांमद्रोह पातिक परगट्यो, अकल गईनें पोरस मिट्यो ॥६३॥

सांम कांम समरथ अतिसूर, गोरो रावत अतिहैं गरूर ।
अरीदल देखी तन उलसें, सुभट सहू मन मांहें हसें ॥ ६४ ॥

सूरातन चढ़िया सिरदार, ऊँचा खग जलहल जूझार ।
दलां विभाडण दूठ दुबाह, रुक हत्था दीपें रिम राह ॥ ६५ ॥

च्यार सहस निसरिया सूर, एक एक थी अति करूर ।
आगुवांणें बादल गेह, पूठें सांमंत थाट सनेह ॥ ६६ ॥

वाघट दीसें भिड घणां, मिलह टोप करी रुद्रांमणा ।
धसिया छूटी ले तरवार, हलकारे लागा हलकार ॥ ६७ ॥

रे रे असपति ऊभो रहें, हिवें नासि मत जावो वहें ।
म्हें पदमणि आंणी छें जिका, तोनें हिव देखाडां तिका ॥ ६८ ॥

तोनें खांत अछें तिण तणी, पदमणि नार निहालण तणी ।
हठ हमीर जाणो तो सही, लडें अमां सु अवसर ग्रही ॥६९॥

इम कहंता भिड आयां जिसें, आलिम दीठा अरियण तिसें ।
एहवी वात कहें पतिसाह, रिण रसियो उठियो रिम राह ॥७०॥

रे रे कूड कियौं बादलें, हिंदू आय वाल्या सांकलें ।
हलकार्‌या असपति निज जोध, धाया किलकी करि करि क्रोध ॥७१॥

मांहों मांह मंडांणो किलो, बोलें असपति सु बादलो ।
पातिसाह मत छांडो पाव, तेरा कूड असीणा थाव ॥ ७२ ॥

कवित्त

सुणि बादल कहैं साह, वाह तुम बोल भलाई।
मुख मीठा दिल कूड, इहैं हींदू न कराई।
पदमण करी कबूल, तुम्हें सिरपाव दराया।
छोड्या रांण रतन्न, सबे दल दूर वलाया।
अब लडिहो खग बुलहू अकथ, काफर गुंडाई धरहुं।
हम सरिस चूक देखहुं सुतो, मुरख अण खूटी मरहुं ॥७३॥
कहैं बादल सुण साह, राह पहेंली तुम चूकें।
दे वाचा गढ़ देख, बहुर तुम राव ही रुक्के।
हम हींदू के मीर, निरख रखही कुलवट्टह।
पदमणी दे ल्यें धणी; इहे हम लाज निपट्टह।
अब करहुं जुद्धि जूठा न कहुं, कहा रह्यो रस हम तुमह।
महीं खग लडहुं म धरहुं गरब, वर तस नहि अवसांन इह ॥७४॥

चौपाई

आलम तांम हुआ असवार, जोधा मुगल पठांण जुझार।
भिड्या खाग रिण मचियो दूठ, सुभट न दाखें कोई पूठ ॥७५॥
खेहाडंबर उड्यो इसो, सूरज जांणें वधुल्या जिस्यो।
बांण विछूटें चिहुं दिश घणा, रुड्या नगारा सींधू तणा ॥७६॥
खडग झलक्क उ[जु] जल धार, जांणक वि[जु]जल घण अंधार।
सन्नाहें तूटें तरवार, जागें झाल अगनि अण पार ॥७७॥
कुंत अणी फूटें सूसरा, तूटें कालज नें फेफरा।
उडें बूर वहें रत खाल, गुंजें सी धा[म] घण असराल ॥७८॥

वहैं तीर चणणाट पंखाल, झड मातो तातो वरसाल।
पडें मार गूरज गोफणी, फोजां फूटें तूटें अणी ॥७९॥
मार मार कहि वाहैं लोह, रण लूवा सामंत छंछोह।
खान निवाब गडू थल खाय, हजरत करें खुदाय खदाय ॥८०॥
नारद कलकी करि करि हाम, गीरध मांश तणा ले ग्रास।
धड ऊपर धड ऊछल पडें, केता सांमंत मिर विण लडें ॥८१॥
रिण चाचर नाचें रजपूत, धूंकल माचवियो रण धूत।
धन धन कहें सूरज धीरवें, अपछर माला कंठें ठवें ॥८२॥

दूहा

उत असपति तोबा वकें, इत हलकारें रांण।
तिण वेलां वादल तणा, अडिया भुज असमांन ॥८३॥
कुण तोलें जल सायरां, कुण ऊपाडें मेर।
वादल तो विण सामरें, (हसुं) कुण झालें समसेर ॥८४॥
दलां विभाडण साहरा, ऊपाडें गज दंत।
तु (जु) झ भुजां गाजण तणा, बलिहारी बलवंत ॥८५॥
जावें असपति रीझियो, सुहडां खमी सवाव।
खागें खांन निवाब नें, तें ऊतारी आब ॥८६॥
हसियो आलम जांम सुणि, खग खसियो खत्रि सार।
तुं वेधालक वादला, अंगद रो अवतार ॥८७॥
बाबा खांन निवाबरां, फाटा ऊभा फेह।
वाका सुणिया जग सिरें, वाजंतें डाकेह ॥८८॥
महि डोलें सायर सुसें, प(च) छिम ऊगें भांण।

बादल जेहा सूरमा, क्यां चूकें अवसांण ॥८९॥
रिण डोहें फिर फिर खलां, धडां धपावें धार ।
पारीसें पिडहार ज्युं, नह भूलें मनुहार ॥९०॥
वड पति साई बींदणी, मद जोवन मयमंत ।
मुझ मन परणेवा तणी, खरी विलग्गी खंत ॥९१
सुण गोरा बादल कहें, तुं सामंत सकज्ज ।
तुं दल नायक हींदुआ, तुज(झ) भुंजें रिम लज्ज ॥९२॥
तु सीध चाढ़ण सूरमा, उजवालण कुलवट्ट ।
तुं बांधें पतिसाह सुं पेतों डर रणवट्ट ॥९३॥
बांधे मोड महाबली, बांधें असि गज गाह ।
सिर तुलसी दल घालियां, डहियां खाग दुबाह ॥९४॥
केसरिया वागा किया, भुज ऊवांणे खाग ।
जांणक भूखो केहरी, जुड़वा नाखें खाग ॥९५॥
सूरज हुंत सलांम कर, वलि मुंछा बल घाल ।
सु पतीसाहां सम चढ़ें, आयो रणवट जाल ॥९६॥
भरे डांण दईवांन भति, रांम रांम मुख रट्ट ।
अकल तें रण ऊरियो, मांझी लोह मरट्ट ॥९७॥
रुडें नगारा सिंधूआं, रिण सूरातन र[स] स ।
मद आयो गोरो मरद, अडियो सीस डरस्स ॥९८॥
आवें असपति आगलें, इसो उडावो खाग ।
पायर पाखल पाधरें, जांणें हणुमत बाग ॥९९॥

हाका करि किलकी हसें, डसें रिमां जिम नाग ।
तिण वेलां त्रिजडा हथो, करें पकंदा घाव ॥२८००॥
आडा खल भांजें अनड, फुरलंतो गज भार ।
आयो असपति ऊपरें, मुख कहतो हुँसियार ॥२८०१॥
तोलें खग तारां लगें, गोरे कीधो घाव ।
असपति जीव ऊबेलंता, पाछा दीधा पांव ॥२८०२॥
कहें वादल गोरा सुणो, सकजां एक सुभाव ।
आयोआंम गियां पछें, कुण रांणों कुण राव ॥२८०३॥
तोनें रिण वाही तणी, वदसी जगत विसेख ।
दल्लीसर परमेसरो, त्यां सुं केहो तेख ॥२८०४॥
घण घट नेंजा घाव करि, लडें भडें लें बाह ।
गोरो रणवट पोढ़ियो, वाही वाह ए लोह ॥२८०५॥
खमा खमा कहि अपछरा, डर उडें सीर हाथ ।
गिलें डए भग प्रीध ज्युं, जाव वहें दिन नाथ ॥२८०६॥
आवें वादल ऊपरें, करें हथेली छांह ।
दल पतिसाही डोलियां, भांगी भुज भूजांह ॥२८०७॥
अइयो सूरातम तणा, अजे अथमांण अथाग ।
भुज बे बे रुंधा भला, इक मुंछां इक खाग ॥८॥
मुख देखे काका तणो, वांदें मुंछां वाल ।
वादल आयो साह सुं, चौरंग वंधे चाल ॥९॥
हलकारें भिड आपणां, वाकारें रिम थाट ।
पडिया कोसें वीस पर, झाडंतो खग झाट ॥१०॥

लोह छकारें ऊडवें, इसा लगाया हाथ ।
पाधर खेत पछाडियो; सारो असपति साथ ॥११॥
रह चवीं सारा कद [सु']; ऊभो असपति आप ।
जो नवि खेल्यो बादलें, करी गुजाहल ताव ॥१२॥
खल गलिया बादल खगें, पूर हमम खुरमाण ।
सामंद जांणउ तान सुत, पीधा चलूं प्रमांण ॥१३॥
पकड्यो असपति बादलें, एकल म [ल्] ल अबीह ।
मेंगल हुंदा मग दलें, गाल वजावें सीह ॥१४॥
फिर छोडें पकडें फिरें, नाच नचावें तेम ।
रस लागो रामत रमें, भोला बालक जेम ॥१५॥

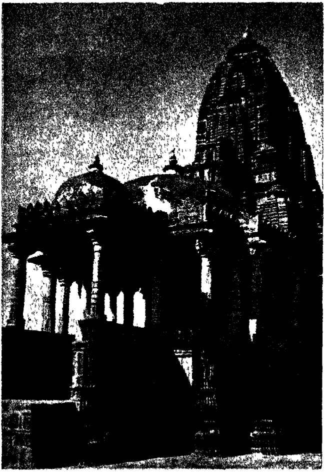
कवित्त

सुण बादल कहें साह, राह हीदूं भ्रम रख्खो ।
सांमधम्म सुरतांन, अकल उसताद परख्खो ॥
तुं सांमंत सकज्जह, बुद्धि बल अकल दुबाहो ।
तुं ही ढाल हींदवांण, तुं ही रावत खग वाहो ॥
गोरिल सरगि अपछर वरी, तुम दुनी में यस सुनहुं ।
पतिसाही दलां लांइछरा, बहू भई जब बस करहुं ॥१६॥

दूहा

भ्रम राख्यो राख्यो धणी, र(ख)खी पदमणि पूठ [में] ।
अब रख्खहुँ मेरी अदब, कहें आलिम सुण वूठ ॥१७॥
मेरे लाल [तू] भूमें वरो, ए दुनियांण उकत्त ।
भातीजें काको भिडें, दीधो न्याव विगत्त ॥१८॥

पद्मिनी चरित्र चौपई—



मीरां मन्दिर, चित्तौड़

[फोटो—सार्वजनिक संपर्क विभाग-राजस्थान]

चौपाई

ऊभो रतनसेन राजांन, दीठो जुद्ध महा असमांन।
जोया बादल गोरा तणा, हाथ महाबल अरिगंजणा ॥१६॥
पदमणि ऊभी द्यै आसीस, जीवो बादल कोड वरीस।
सामधरम साचव्यो सवेह, राखी बादल खत्रीवट रेह ॥२०॥
गोरो रावत रण में रह्यो, आलम सेन सावें खग लह्यो।
लूटाणो लसकर जूजुवो, साका वादित भारथ हुवो ॥२१॥
पातिसाह ग्राहें मुं किओ, एह वले मोटो जस लिओ।
साह कहैं सांभल बादला, किया पवाडा तें ही भला ॥२२॥
दीवत दांन दियो म्हो भणी, किसी करां हिवें कीरत घणी।
आलिम नीसर गयो एकलो, गोरो बादल जीत्यो किलो ॥२३॥

दूहा

करि कागल बादल सबी, हजरत राखी पास।
इक तेरें मुख मुं छहें, अइ हींदू स्याबास ॥२४॥
पातसाह दिल्ली गए, भई दुनी सरवात।
बादल भिड रण सोभियो, उवारी अखीयात ॥२५॥
हसम खजीनो लुटियो, ग्रह मुं क्यो पतिसाह।
बोल्यो तु निरवाहियो, अइयो भीचं दुबाह ॥२६॥
उघाड्यो चित्रकोट गढ़, सांमा आया रांण।
मलियो बादल रतनसी, करें बखांण खुमांण ॥ २७ ॥
सांमेलो आया सकल, घुरियां जेंत निसांण।
बधायो गज मोतीयां, गुनियन करें वखांन ॥२८॥

चौपाई

महा महोछव मांहें लियो, अरध राज बादल नें दियो ।
पदमणि नार लिया वारणा, राख्या पण अम दंपति तणा ॥२६॥
इण पर आव्यो महिल मझार, बंदीजन बोलें जयकार ।
आवी लागो माता पाय, मात आसीस दिइं असवाय ॥३०॥
निज नारी ओढ़ी नवी घाट, सझि शृंगार कर तिलक ललाट ।
अरघ अभोखों देई करी, मोती थाल भरी संचरी ॥३१॥
कीधा विविध बधावा घणां, कुसले खेमें आयां तणा ।
तब गोरिल री अस्त्री कहें, काको किण विध रण में रहें ॥३२॥
कहो किसी पर वाह्या हाथ, केता मार्‌या आलम साथ ।
बादल बोलें माता सुणो, किंसु वखांण काकाजी तणो ॥३३॥
असपति पिण पग पाछा दिया, जेंत तणा बाजा बाजिया ।
बीछाया सब खांन निबाब, के उमीसें कें पयताब ॥३४॥
ऊपर गोरो भिड पोढ़ियो, अंबर सुजस तणो ओढियो ।
तन विखरायो तिल होय, मुंछां मरट न मिटियो तोह ॥३५॥
कुल उजवाल्यो गोरें आज, सुहडां सीधां चढ़ावि राज ।
रिण खेती गोरें भोगवी, में तो सिलो कियो पूठवी ॥३६॥
घटा वींदणी गोरें वरी, बांधे मोड महा रिण करी ।
में तो जांनी थकेह मुंबिया, विरुद भुजां छें गोरल लिया ॥३७॥

कुंडलियो

गोरल त्रिय इम उ [च्] चरें, सुण बादल समर [न्] थ ।
पिउ मुझ रिण में झूझतें, किम करि वाह्या ह [त्] थ ॥

किम करि बाहया हत्थ, ब [त्] थ भरि सुहड पिछाड़या।
भागा हय गय थट्ट, जाए नेंजें असि चाढ़्या।
गिलिया खांन निबाब, सीस असपति फोरिल।
कहें बादल सुण मात, रिण ही इम जुझ्या गोरिल ॥३८॥

चौपाई

इम सुणि नें कांमनी तेह, विकसित वदन हुई ससनेह।
रोम रोम सूरिम ऊछली, मुलकी महिला बोलें बली ॥३९॥
सांबल वेटा हिवें बादला, ठाकुर दोहिला हुवें एकला।
पछें पडें छें छेटी घणी, रीस करेसी मांरो धणी ॥४०॥
वहिली होय म लावो वार, भेला होय काकी भरतार।
एम सुणी बादल हरखियो, धन धन मात तुमारो हियो ॥ ४१ ॥
दांन पुन्य तब बहुला करी, करि श्रृंगार चढ़ी भल तुरी।
श्रीफल लेई हाथें धरी, जै जै रांम कही नीसरी ॥ ४२ ॥
ढ़ोल घुरो गूजें चीतोड, बांध्यो सुजस तणो सिर मोड।
इण पर आखा उछालती, आवी खेतें रिण मलपती ॥ ४३ ॥
पूजी गवरी करी सनांन, पहिरी धवल वस्त्र परिधांन।
खमा खमा कहें धन भरतार, रिण समंद हिलोलण हार ॥४४॥
खट मंदिर पिय खोलें धरी, अगनिसरण कीधो सुंदरी।
पति पासें जई पोहती तिसें, अरध सिखासण दीधो तिसें ॥४५॥
अमरापुर वसीया उछाह, जय जयकार हुओ जग मांह।
चंद सूरज बे कीधा साख, गढ़ चीतोड दल्ली दल साख ॥४६॥

करी मृतकत देही संसकार, आयो बादल निज घर बार।
रजपूतां ए रीत सदाइ, मरणैं मंगल हरखित थाइ ॥ ४७ ॥

दूहा

रिण रहचिया म रोय, रोए रण भांजे गया।
मरणें मंगल होय, इण घर आगां ही लगें ॥४८॥

चौपाई

विरूद बोलावे बादल धणी, साम सनाह मुहडाई तणी।
इसो न को वलि हूओ सूर, कमधज वंश चढ़ायो नूर ॥४६॥
पदमणि राख राण राखियो, गढ़रो भार भुजे जालियो[1]।
रिण भिडतां राखावी रेह, वसो वसो[2] बादल गुण गेह ॥५०॥

कवित्त

जय बादल जयवंत, विरुद्द बादल अरिगंजण।
संकट सांमि सनाह, भिडे पतिसाहा भंजण।
मलण मलीका माण, हणण हाथी मय मत्तह।
सांम बंद छोडणो, दियण वहिनी अहि वंतह।
पदमणी नार श्री मुख कहें, इस्यो अवर न कोई हुअ।
आरती उतारें वर तणी, जे बादल जेंवंत तुह ॥५१॥
कहें मात बादला, भलें मुझ उअर उपन्नो।
कुल दीपक कुल तिलक, रंक घर रयण संपन्नो।
ग्रहि मोखण पतिसाह, रुक बल गजण अरी दल।
जेंत हत्थ जग जेठ, भुज बलिहार भुज बल।

१ लाजियो २ नमो नमो

मुख मुंछ तुझ कुल लज्ज तुही, सारी बेल कियां भडां ।
चीतोड मोड बांध्यो सिरें, दल्लीपति छाडें तडां ॥५२॥
रांम तणें भिड़या जिम हणुमांन, तेम बादल रतनसी रांण ।
पदमणि सत सीता सारिखी, बादल भिड लंघाया रखी ॥५३॥
सेवा कीधी अपछर तणी, तिण सोभा वाधी घण घणी ।
करी दिखावें इसीक कोय, अवरां सुहडां आदर होय ॥५४॥
गोरा बादल नी ए कथा, कही सुणी परंपर यथा ।
सांभलतां मन वंछित फलें, राज रिद्ध ल [छ] मी बहु मिलें ॥५५॥
सामधरम सापुरसां होय, सील दृढ कुलवंती जोय ।
हींदू ध्रम सत परिमांण, वाज्या सुज [स] तणा नीसांण ॥५६॥

इति श्री चित्रकोटाधिपति बापा खुमांणान्वये रांणा रतनसेन पदमणी गोरा बादल संबंध किंचित् पूर्वोक्त किंचित ग्रंथाधिकारेण पं० दोलतविजयग विरचितोऽयं अधिकार संपूर्णम्

इति श्री षष्ठ खंड सम्पूर्णम्

जटमल नाहर कृत

गोरा बादल चउपई

सोरठा

चरण कमल चितलाय, कै समरूँ श्री शारदा ;
मुझ अक्खर दे माय, कहिस कथा चित लायकै ॥ १ ॥
जंबूदीप-मझार, भरतखंड खंडा-सिरै ;
नगर भलो इक सार, गढचितौड़ है विखम अत ॥ २ ॥
रतनसेन जिहां राय, पाय कमल सेवै सुभट ;
सूरवीर सुखदाय, राजपूत रजकौ धणी ॥ ३ ॥
चतुर पुरस चहुवाँन, दाँन माँन दूनूँ दियै ;
मंगत जिन को माँन, आवै मंगत दूर तै ॥ ४ ॥

कवित्त

एक दिवस नृप-पास आस करि मंगत आए,
च्यार चतुर वेताल, दृष्टि भूपति दिखलाए।
दे आसिका-असीस, वीस दस विरद सुनाए,
नरपति पूछत भट्ट, कौन देसा तै आए।
हम आए सिंघलदीप तै, कीरति सुनिकर तुम-तणी,
राजा रतनसेन चहुवाँण है, गढ चितोड़ केरो धणी ॥ ५ ॥

राय देय सनमाँन, पास अपने बैठाये,
कहो दीप की बात, जहाँ तें तुम चल आये।
क्या-क्या उपजत उहां, दीप सिंघल हैं कैसा,
कहै भाट सुनो राय, कहूँ देख्या है जैसा।
उदध-पार अदभुत नगर, सोभा कहि न सकूं घणी,
ऐरापति उपजत उहाँ, अवर नार है पदमणी ॥ ६ ॥

दूहा

पदमावति नारी कसी, कहो ! भाटजी, वात,
भाट कहै, नरपति सुणो, च्यार रमण की जात ॥ ७ ॥
इक चित्रनि, इक हस्तनी, एक संखनी नार,
उत्तम त्रीया पदमनी, तस गुण अपरंपार ॥ ८ ॥

चौपई

कहो भाट, पदमावति-लख्खन, गुणी सरस तुम बड़े विचख्खन,
रंग-रूप-गुण-गति-मति दाखो, भाखा सकल मधुर-सुर भाखो॥६॥

कवित्त

पदमावति मुखचंद, पदम-सुर वास ज आवै,
भमर भमत चिहुं फेर, देख सुर असुर लुभावै।
अंगुल इकसत आठ, ऊँच सा सुन्दर नारी,
पहुली सत्तावीस, ईस चित लाय सँवारी।
म्रगनैण, वैण कोकिल सरस, केहरि-लंकी कामनी,
अधर लाल, हीरा दसन, भुँह धनुष, गय गामनी ॥ १० ॥

दूहा

पदमावत के गुण सुणे, चढी चूँप चित राय,
विन देख्यां पदमावती, जनम अम्यारथ जाय ॥ ११ ॥

चौपई

वसी चित्त-अंतर पदमावत, निसा नींद दिन अन्न न भावत,
इम रहताँ इक जोगी आयो, राजद्वार परि धूही पायो ॥ १२ ॥

कवित्त

सिद्ध बड़ो जोगेंद्र, देख राजा चित हरख्यौ,
ज्यूँ सरोज सर माँझि, सूर देखत ही विकस्यौ ।
भगत-भाव बहु करी, जुगत कर जोग संतोख्यौ,
निसा बैठ नृप पासि, पत्र पंचामृत पोख्यौ ।
संतुष्ट होइ रावल कहै, मांग जु तुझ, कछु चाहिये,
राजा रतनसेन चहुवाँण कह, इक पदमण मोहि व्याहिये ॥१३॥
कहै ताम जोगेंद्र, दीप सिंघल पदमावत,
राज पाट तजि चलौ, भूप ! जे तुझ मन भावत ।
कहै राय, करि कृपा, वेग यहु कारज कीजै
जो कुछ कहो सो नाथ, साथ सामग्री लीजै ।
मृग त्वचा बिछाई सिद्ध तब, पढ़ो मंत्र तब बैठ करि,
उड गये सिंघलद्वीपकों, (राजा) रतनसेन जोगेंद्र वरि ॥१४॥

दूहा

सुण रावत, जोगी कहै, करि रावल को बेस,
इक-सबदी भिख्या करो, यह मेरा उपदेस ॥ १५ ॥

कवित्त

दियो भेख जोगेंद्र, कान मुद्रा पहिराई,
कंथा सिंगी गले, अंग बभूत चढाई।
कपट जटा, करदंड, मोरपँख विझ्मण झोलै,
वज्र कछोटो पहिर, अलख अगचर मुख बोलै,
कर-पंकज पात्र अनूप ले, राज द्वार जब आवियो,
नृप सुता निरख पदमावती, तब सु राज मुरझाइयो ॥ १६ ॥

दूहा

मन मोह्यो पदमावती, देख रूप अति राइ,
कहै सखी सुं नीर ले, रावल छंट उठाइ ॥ १७ ॥

कवित्त

छंट उठायो जोग आय, तिहाँ सखी विचख्खण,
रावल-रूप अनूप, अंग बत्तीसे लख्खण।
तब पदमावति हार, तोड़ नवसर दी भिख्या,
मुकताफल भरि थाल, नाथ पै लाई सिख्या।
कर जोड़ि गुरू आगें धरे, देख नाथ अैसे कहै,
जो जिस लायक होय सो, तैसी ही भिख्या लहै ॥१८॥
चल्यौ आप जोगेंद्र, चलित राजा-गृह आयो,
देख राय हरखियौ, सीस ले चरण लगायो।
आज पवित्र भया गेह, नेह धरि गरू पधारे,
आज सफल मुझकाज, बड़े हैं भाग हमारे।

तब सुनि आई पदमावती, गुरू चरण ले सिर धरे,
आसीस देह रावल कहै, पुत्री तुम कारज सरै ॥१६॥
कहे ताँम राजान, पदम पुत्री सुखदायक,
वर प्रापत अब भई, नहीं कोई वर लायक।
हूं ल्यायो वर, राय, तोहि पुत्री के कारण,
गढ़-चितोड़-राजान, दुष्ट-दुरजन-विड्डारण।
राजा रतनसेन चहुवाण है, तिस समवड़ नहि अवर नर,
परणाय देह पदमावती, मान वचन तू सत्तकर ॥२०॥
गुरू-वचन राजान, माँन पुत्री परणाई,
रतनसेन के साथ, भई है भली सगाई।
दीन्हो बहु दायजो, लाल मुकताफल, हीरे,
पाटंबर, पटकूल, थाल भर कंचन नीरे।
रावल कहै राजान को, पदमावति मुकलाइयै,
चीतोड़-लोक चिंता करैं, राजा रतन चलाइयै ॥२१॥
राघव दीयो संग, वेग पदमनी चलाई,
रोवत माता भ्रात, कुंवरि कों कंठ लगाई।
उडन-खटोला चढे राय, पदमावति, जोगी,
राघव चेतन संग, उडवि आये गढ भोगी।
नीसाण बजे पंच-सबद तहाँ, गोरी मंगल गाइयो,
राजा रतनसेन पदमावती, ले चितोड़गढ़ आवियो ॥२२॥
तजी रानि सब और, राव पदमावति रातो,
रैन-दिवस रह पास, अंग आणंद मदमातो।

नेम नीर को लियो, बीन देख्याँ पदमावत,
महा-मोह-बस भयो, रहै अैसी विध रावत ।
जब निसा रही इक-दोय घड़ी, तब सिकार-उद्दम कियो,
राजा रतनसेन असवार हुय, राघव चेतन सँग लियो ॥२३॥

दूहा

वन के भीतर खेलताँ, तृखा वियापी तेम,
विन देख्याँ पदमावती, जल पीवण को नेम ॥२४॥

कवित्त

तब राघव चित लाय, सरस पूतली सँवारी,
त्रिपुरा की कर कृपा, रूप पदमावति नारी ।
भेख भाव बहु करी, जंघ पर तील बनाया,
देख राय भयो रोस, पाप मन भीतर लाया ।
विना रम्याँ पदमावती, तील स क्यूंकर जाणियो,
मारूँ न विप्र, काढूं नगर, यह सुभाव मन आणियो ॥२५॥
घरि आयो राजान, विप्रकुं दिया निकारा,
राघव तिसही समै, वेस वैरागी धारा ।
भगवें बेस सरीर, नीर भर लिया कमंडल,
जंत्र बजावै जुगत, जोग-तत रहै अखंडल ।
दिल्ली सु आय प्रापत भयो, रह उद्यान बन खंड सिर,
पातसाह तिहां अलावदी, करै राज सिर नर सुथिर ॥२६॥
एक दिवस सीकार साह खेलत तिहाँ आयो,
राघव तिसही समै जुगत कर जंत्र बजायो ।

अग सब तज वनवास पास राघव के आए,
सुणे राग घर कौंन साह अग कहूँ न पाए।
आयो सु तहाँ अल्लावदी, देख चरित अचरज भयो,
उतर तुरंग से साह तब, राघव के आगे गयो ॥२७॥

दूहा

रीझ्यौ साह सुराग सुनि, राघव को कह ताँम,
दिल्लिपति हम तुम सों कहैं, चलो हमारे धाम ॥२८॥
हम वैरागी, तुम ग्रही, अर प्रथवी पतिसाह,
हम तुम ऐसा संग है, जैसा चंद कु राह ॥२६॥
हठ कीनो पतिसाह तब, राघव आन्यौ गेह,
राग रंग रीझ्यौ अधिक, दिन दिन अधिक सनेह ॥३०॥

कवित्त

एक दिवस नर काइ, ससा जीवत ग्रह ल्यायो,
पातिसाह ले तब्ब, गोद ऊपर बैठायो।
ता पर फेरै हाथ, अधिक कोमल रोमावल,
यातैं कोमल कछु, कहो राघव गुण-रावल।
तब हाथ फेर राघव कहै, यातैं कोमल सहस गुण,
पदमावति-देह, विप्र उचरै, पातसाह धरि कान सुण ॥३१॥

दूहा

व्यास बुलाए अलावदी, पूछत बात प्रभात,
सास्त्र विधि जाणो सकल, त्रियकी कितनी जात ॥३२॥

राघव कहै नरिंद सुन, त्रीय जाति है च्यार,
चित्रन हस्तन संखनी, पदमनि रूप अपार ॥३३॥

(अथ पदमनी वर्णनम्)

पदमनि के परस्वेद सें, कसतूरी की वास,
कमलगंध मुख तें चलै, भमर तजत नहि पास ॥३४॥

कवित्त

पदमगंध पदमनी, भमर चहुंफेर भमत अत,
चंद वदन, चतुरंग, अंग चंदन सो वासत ।
सेत, स्याम अरु अरन, नयन-राजीव विराजत,
कीर चुंच नासिका, रूप रंभादिक लाजत ।
गुणवंत दंत दाडिम कुली, अधर लाल, हीरा दसन,
आहार पान कोमल अधिक, रस सिंगार नव सत वसन ॥३५॥
पान हुते पातरी, पेम-पूरण सू लाजत,
भुज म्रणाल सुविसाल, चाल हंसागति चालत ।
चंपावरण सुचंग, सूर ऊजासी भालै,
पदम चरण तल रहै, निरख सुरनर मुनि भालै ।
हर लंक, अंग चंदन-वरन, नार सकल-सिर मुगटमणि,
अल्लावदीन सुरतॉन सुण, पदमन लच्छन एह भुणि ॥३६॥

(अथ चित्रणी वर्णनम्)

चपल चित्त चित्रणी, चपल अति चंचल नारी,
कँवल-नैन कटि भीन, वेण जू नागन कारी ।

पीन पयोहर कठिन, वचन अमृत मुख बोलै,
जंघा कदली-खंभ, गिडत गैवर गति डोलै।
संभोग-रीत जाँनत सकल, नित सिंगार-भीनी रहै
अल्लावदीन सुलतान सुन, कवि चित्रन-लच्छन कहै ॥३७॥

(*अथ हस्तनी वर्णनम्*)

हेत बहुत हस्तनी, केस अति कुटिल विराजत,
द्रिग देखत मृग नैन, चपल अति खंजन लाजत।
कनकलता कामनी, बीज दाड़िम दसनावत,
पहुप वेस पहरंत, कंत अति हेत सुहावत।
अति चतुर, कुच कंचन कलस, काम केलि कामिन करैं,
अल्लावदीन सुलतान सुण, ए लच्छन हस्तन धरैं ॥३८॥

(*अथ संखनी वर्णनम्*)

जटा जूट जोखता, वदन विकराल विकल अति,
सुकर देह, सरोस, स्वाँन जूं सदा घुरकति।
गर्दभ-गति, गुनहीन, परै ढरि पीन पयोहर,
मंछ-गंध, तन मलन, चुल्ह समतूल भगंदर।
अति घोर निद्र, आलस अधिक, अति अहार, गज अंखनी,
अल्लावदीन सुलतान सुण, ए लच्छन त्रिय संखनी ॥३९॥

श्लोक

पद्मिनी पद्म मध्येषु, कोटि मध्येषु चित्रणी,
हस्तनी सहस्र मध्येषु, वर्त्तमानेषु संखनी ॥४०॥

पद्मिनी पान राचंति, मान राचंति चित्रणी,
हस्तनी हास राचंति, कलह राचंति संखनी ॥४१॥
पद्मिनी पद्म गंधेन, मद गंधेन चित्रणी,
हस्तनी पुहप गंधेन, मच्छ गंधेन संखणी ॥४२॥
पद्मिनी पोहर-निद्रा च, द्वै पोहर निद्रा च हस्तनी,
चित्रनी चमक निद्रा च, अघोर निद्रा च संखनी ॥४३॥

(अथ पुरष जात च्यार वर्णनम्)

दूहा

अथ सिसा लखण

मूख सकोमल, तन, वचन, सीलवंत, सुर ग्याँन,
रति विनोद अति रुच नहीं, ससा करत बहु साँन ॥४४॥

अथ मृग लछन

मधुर-वचन, मृग मध्य-तन, चपल बुद्धि अति भीर,
चतुर, साध, अति हसत मुख, कामी, कनक-सरीर ॥४५॥

अथ वृषभ

वृषभ जात भारी पुरुष, दाता, क्रूर-सुभाव,
कपटी कछ लंपट हठी, काम केल बहु चाव ॥४६॥

अथ तुरंग

तन दीरघ दीरघ चरन, दीरघ नख सिख अंग,
सुभर-तरुनि-सँग रति-रवन, आलस अधिक तुरंग ॥ ४७ ॥

कवित्त

ससिक पुरुष-संयोग, नारि पदमावति लोडै,
मृग नर सुं चित्रणी, प्रेम पूरण सूं जोड़ै।
वृषभ पुरुष हस्तनी, भोग अत ही सुख पावै,
अश्व पुरुष संयोग, नार संखनी सुहावै।
मृग ससिक वृषभ अरु अश्व पुनि, जाति च्यारि पुरुषां तणी,
अल्लावदीन सुरताण, सुणि, जात च्यार नारी तणी ॥ ४८ ॥

दूहा

नारि जाति सुण पातिसाह, राघव लियो बुलाय,
दोय सहस मुझ हुरम है, देखि महल में जाय ॥ ४६ ॥
राघव कहे नरिंद सुनि, गरमहल में न जाय,
छाया देख तेल में, नारी देऊं बताय ॥ ५० ॥

कवित्त

हुकम कियो पतिसाह, नारि सिंगार बनावहु,
तेल-कुंड भर धरो, आय दीदार दिखावहु।
हुरमा सकल निहार, तबै राघव यूं भाखै,
हंस गमन, मृग नैन, रूप रंभा कौं राखै।
चित्रन, हस्तन, संखनी, पातसाहजादी घणी,
सरस त्रिया में सुन्दरी, नहीं साह घर पदमणी ॥ ५१ ॥
कहै ताम सुलतांन, वेग पदमनी बतावहु,
जहाँ होइ तहाँ कहो, जो कछु मांगो सो पावहु।

पदमन सिंघलदीप, उदध-पै-पार, पयंपै,
देख समुद्र, सुलतान, हिया कायर का कंपै।
यूं सुनवि चढ्यौ सुलतॉन, तब आय उदध ऊपर पड्यौ,
पदमनी कहाँ राघव कह्यो, पातसाहि अत हठ चढ्यो ॥ ५२ ॥

सोरठा

राघव लह प्रस्ताव, पातसाहपै यूं जपै।
पदमनि नैड़ी ठाँव, रतनसेन चहुवाणपै ॥ ५३ ॥

दूहा

सुणवि चढ्यौ सुलतॉन तब, चलियो गढ़ चीतोड़।
दिया दमामा दिल्लिपत, भई राय पर दोड़ ॥ ५४ ॥
कॉपे सगले राण, चिहूँ चक्क खलभल भई।
खुर-रज छायो भाण, चोट नगारै जब दई ॥ ५५ ॥

छंद जात रेसालू

चढे चिहूँ दिसि साह के दल, धरै धीरज कौन ?।
अभिमान-आणंद अंग उपजौ, गिणै लगन न सौन ॥ ५६ ॥
असवार त्रय लख साथ अदभुत, पाखरे ज तुरंग।
ताजी स तुरकी औ अराकी, सबज नीले रंग ॥ ५७ ॥
कम्मेत, काले, हासिले, सामुद्र, अर तबरेस।
अबलक, सुजॉम, सुबाहिरे, सबज नीले नेस ॥ ५८ ॥
सारंग, केहर अरु सरौजी, भले पंच कल्याण।
नाचंत पातर ज्यूं तुरंगम, रतन-जड़ित पलॉण ॥ ५९ ॥

लग्गाम सोवन मुक्ख सोहै, जेर बंध सु पाट ।
अब रेसमी कसि तंग ताणे, लटकणा के थाट ॥ ६० ॥
गजगाह घूघरमाल चमकै, तबल बाज बणाव ।
कलंगी भली जरकसी पाखर, भलौ परचौ भाव ॥ ६१ ॥
हलकै पचावन माथ हाथी, ढलक नेजा ढाल ।
अति घटा सावण मास जैसी, झरै मद परनाल ॥ ६२ ॥
बग-क्रांति कांति सपेद सुंदर, गाजते गजराज ।
पहिराय पाखर साह राखे, फोज आगे साज ॥ ६३ ॥
रथ अर पयादे अवर असवार, गनि सकै कहु कोण ।
उमड़ी चली आतस्मबाजी, खलभले त्रय भौण ॥ ६४ ॥
डेरा पड़ै दस कोस ताँई, करै नाहि मुकाम ।
आइकै गढ़ चीतोड़ उतरे, दिया डेरा ताम ॥ ६५ ॥
ताणे तहाँ पचरंग तंबू, फरहरे नीसाँण ।
फूले पलास वसंत आगम, वदै कविजन वॉण ॥ ६६ ॥

दूहा

गढ-रोहौ करकै रह्यो, अलावदीन सुलतान ।
रतनसेन मानैं नहीं, चलै गढनसूं प्राँन ॥ ६७ ॥
अंब लगाये ठौर तिहँ, फल पाके तब जान ।
बारा वरस बैठो रहौ, अलावदीन सुलतांन ॥ ६८ ॥

कवित्त

कहै ताम सुलतान; कहौ रावत्र क्या कीजै ?,
गढ़ चितोड़ है विषम, जोर तें कबहु न लीजै ।

राघव कहै, सुलताँन, सुनो इक फंद करीजै,
उठाइयै मूसाफ, जेण कर राय पतीजै।
भेज्यो खवास सुलतान तब, रतनसेन-द्वारै गयौ,
ले हुकम-राय दरवाँन तब, खोलि प्रोलि भीतर लियौ ॥६६॥

कहै ताम सुलताँन, मान तूं वचन हमारा,
कहै फेर सुलताँन, करूं तुझ सात हजारा।
बहिन करूं पदमनी, तुझै भाई कर थप्पूं,
देखू गढ चीतोड़, अवर बहु देस समप्पूं।
गल कंठ लाय, ठहराय कै, नाक नमण कर बाहुड़ौं,
राजा रतनसेन, सुलताँन कह, पहुर एक गढपरि चढौं ॥७०॥

मान वचन सुलताँन, आन मूसाफ उठायौ,
महमानी बहु करी, गढ़ सुलताँन बुलायौ।
लिये साथ उमराव, बीस दस सूर महाबल,
बहुत कपट मन माँहि, गए सुलताँन वहाँ चल।
बहु भगत-भाव राजी करी, साह कहै भाई भयौ,
पदमनि दिखाव ज्यूं जाँह घर, दुरजन दुख दूरै गयौ ॥७१॥

दूहा

रतनसेन चहुवान कहि, बहिन करी सुलताँन।
वदन दिखावो वीर कों, दिया साह बहु माँन ॥७२॥
चेरी एक अति सुंदरी, दे अपनौ सिणगार।
वदन दिखायौ साह कू, गिरयौ सीस कै भार ॥७३॥

राघव कहै, सुण पातसाह, यह पदमनी न होय।
कहा देख के तुम गिड़े, अति सुंदर है सोय ॥७४॥

कवित्त

लाख लहै ढोलियो, सवा लख लेह तुलाई,
अर्ध लाख गीदुवौ, लाख त्रय अंग लगाई।
केसर अगर कपूर, सेभ परमल पर भीनी,
ता ऊपर पदमनी, रामरस-रूप-नवीनी।
अल्लावदीन सुलताँन सुण, पदम गंध है पदमनी,
चन्द्रमा वदन, चमकंत मुख, रतनसेन-मनभावनी ॥७५॥

दूहा

बोल्यो तब, अल्लावदी, पकड़ राय कौ हाथ।
दिखलावत हो और त्रिय, कपट कियो मुझ साथ ॥७६॥

कवित्त

कहै ताम सुलतान, कहो पदमन-प्रति ऐसो,
मुख दीखावो बेग, कपट मांड्यो है कैसो।
मुख काढ्यौ पदमनी, ताम बारीकै बाहिर,
निरख गिर्‌यौ सुलताँन, थंभ लीयौ तसु थाहर।
खिन एक संभाले आपकू, साह कहै, डेरै चलौ,
क्या सिफत करूं मैं राव की, रतनसेन भाई भलौ ॥७७॥
फिर्‌यौ ताम सुलताँन, प्रोल पहिली जब आयौ,
रतनसेन भयो साथ, लाख बकसीस दिवायौ।

चल्यौ ताँम सुलतान, प्रोल दूजी जब आयौ,
और दिये दस गड्ड, राय अति बहुत लोभायौ।
इम लेवै बगसीस, तबह कपट कर फंदियो,
राजा रतनसेन अति लोभकर, ग्रहि सुलतान सुबंधीयो ॥७८॥

सोरटा

रहे प्रोल जड़ लोक, सोर सकल गढ में भयौ।
राजा ले गयो रोक, कपट कियो सुलतान तब॥७६॥

कवित्त

सदा मरावै साह, राय कोरड़े लगावै,
कहै, देह पदमनी, जीव तब ही सुख पावै।
गढ के नीचे आँण, सहम भूपति दिखलावै,
लै राखै लटकाय, लोक सबही दुःख पावै।
मारतें राय कायर भयौ, पदमावत देऊँ सही,
भेजौ खवास मारौ न मुझ ले आवै जब लग ग्रही ॥८०॥

सोरठा

भेज्यो राय खवास, कहै, देय पदमावती।
मुझ जीवन की आस, विलम न कीजै एक खिन ॥८१॥

कुंडलियो

कह राँनी पदमावती, रतनसेन राजाँन,
नारि न दीजै आपणी, तजियै, पीव, पिराँन।

तजियै, पीव, पिराँन, और कूं नारि न दीजै,
काल न छूटै कोय, सीस दै जग जस लीजै ।
कलंक लगावै आपकों, मो सत खोवै जाँन,
कह रानी पदमावती, रतनसेन राजाँन ॥८२॥
पाँन लियो पदमावती, गई बादल के पास,
राखणहार न सूझही, इक बादल तोहि आस ॥ ८३ ॥
बार बरस को बादलो, हाथ ग्रहे चौगान,
ले आई पदमावती, बादल खावौ पान ॥ ८४ ॥
कह बादल सुन पदमनी, जा गोरा कै पास,
पान लियो मैं सीस धर, न करि चिंत, विसवास ॥ ८५ ॥

कवित्त

भई आस, तब लियो सास, गोरा पै आई,
पञ्यौ स्याँम संकडै, करो कछु अब्ब सहाई ।
मंत्र कियौ मंत्रियां, नारि पदमावति दीजै,
छूटाइयै नरेस, विलम खिन एक न कीजै ।
अवस तिहारे आप हूँ, ज्यूं भावै त्यूँ राय करि,
बीड़ौ उठाइ गोरो कहै, जाइ, बहन, अब बैठ घरि ॥ ८६ ॥

दूहा

गोरा बादल बैठ के, दिल में करै विवेक,
साह साथ कैसे लड़ाँ, लसकर अमित अनेक ॥ ८७ ॥

कवित्त

बादल बोल्यौ ताम पाँचसै डोला कीजै,
तिन में बैठे दोइ च्यार कै काँधै दीजै।
तिन में सब हथियार अश्व कोतल करि आगै,
कहे. देह पदमनी, तुरक नेड़े नहिं लागै।
कटियै बन्धन राय कै भुजबल परदल गाहिजै,
दीजिय न पूठ द्रढ़ मूठ करि खग्ग साह-सिर वाहिजै ॥ ८८ ॥

दूहा

बादल मंत्र उपाइयौ, सबके आयो दाय,
याहि बात अब कीजिये, बोले राणाँ राय ॥ ८६ ॥

कवित्त

तुरत बुलाये सुत्रहार, डोले संवराए,
तिन ऊपर मुखमली, गुलफ आछे पहिराए।
बैठाये बिच सूर, सूर कै काँधै दीजै,
तिन-मह सब हथियार, जरह अर जोर न ईजै।
ऐराकी साज, सवार कै, बादल मंत्र उपाइयौ,
वक्कील एक रावल मिलन, पुह सुलताँन पठाइयौ ॥ ६० ॥

दूहा

रावल देवत पदमनी, आज तुझे, सुलताँन,
भेट इसी बहु भाँति सों; खुसी भयो सुलतान ॥ ६१ ॥
कहै ताम अल्लावदी, सुणि वकील, चित लाय,
वेग ले आवो पदमनी, बादल सु कहो जाय ॥६२॥

आयो हुकम ज साह को, बादल भयो तयार,
सुनो, रावतो, कान धर, अंसी करियो मार ॥६३॥

कवित्त

प्रथम निकस चकडोल, तुरत चढि तुरी धसावो,
नेजा लेकर हाथ जोर, दुसमन सिर लावो।
जब नेजा तुट्टवै, तबहि तरवार उठावो,
जब तूटे तरवार, तबे तुम गुरज उड़ावो।
जब गुरज तूट धरणी पड़े, कट्टारी सनमुख लड़ो,
बादक कह हो रावतांँ, स्याँम काम इतनो करो ॥६४॥

दूहा

बादल जूझन जब चल्यो, माता आई ताँम,
रे बादल तैं क्या किया, ए बालक परवाँन ॥६५॥

कवित्त

रे बादल बालक, तुंही है जीवन मेरा,
रे बादल बालक, तुज्झ बिन जुग अंधेरा।
रे बादल बालक, तुज्झ बिन सब जग सूना,
रे बादल बालक, तुज्झ बिन सबहि अलूना।
तुज्झ बिन न सूझै कछु, तूटि बाँह छाती पड़ें,
छुट्टंत तीर बंका तहाँ, केम साह-सनमुख लडै ॥६६॥

दूहा

माता बालक क्युं कहो, रोइ न माँग्यौ ग्रास।
जो खग मारूं साह-सिर, तो कहियौ साबास ॥६७॥

सीह, सिँचाणो, सापुरुष, ए लहुरे न कहाय ।
बड़े जिनावर मारि कै, छिन में लेय उठाय ॥६८॥
सिंह जोन तें निकसतें, गय-घड़ दीठी जाँम ।
तुट्टवि गज मसतक लड्यौ, आइ रह्यौ महि ताँम ॥६६॥

कवित्त

बादल कह, सुण माय, सत्त तुझ साहस मेरा,
लडूं साह कै साथ, करूं संग्राम घणेरा ।
मारुं सुभट अपार, स्याम के बंधन काटूँ,
जो सिर गयो त जाहु, सीस दे जग जस खाटूँ ।
जिम राम-काज हनुमंत कियो, मार्यौ रावण एक खिण,
गैवर गुडाय तोडौं तबर, साह चलाऊँ खग्ग हण ॥१००॥
बालक तो परवाँण, जाँम गैवर-घड़ मोडूँ,
बालक तो परवाँण, पकड़ पिलवाँन पछोडूँ ।
बालक तो परवाँण, स्याम के बंधन कट्टूँ,
बालक तो परवाँण, सांग असवार पलट्टूँ ।
मारूं तो खग साह-सिर, गयवर दलूँ, सत्य चढूँ,
जननी लजाऊँ तुज्झ कूं, जे वाग मोड़ पाछो मुड़ूँ ॥१०१॥

दूहा

जैसा, बादल, तैं किया, तैसा करै न कोय ।
माता जाइ आसीस दै, अब तेरी जै होय ॥१०२॥
माता जबही फिर चली, बहुवर दिवी पठाय ।
मेरो राख्यो ना रह्यौ, अब तुम राखो जाय ॥१०३॥

कवित्त

नव सत सज्भे नवल, नारि बादलपै आई,
अज हुं न रम्यौ मुझ साथ, चल्यौ तूं करण लड़ाई ।
अजहुँ न माँणी सेझ, घाव-नख नांहि चमंके,
कुचन चोट नहि सही, सहै क्युं सांग घमंके ।
छुट्टंत नाल गोला तहाँ, तुट्टवि धड़ सिर उप्परै,
नारि कहै हो राव, इम मतां देखि दलतैं मुडै ।।१०४।।

दूहा

कंता रिण में पैसताँ, मत तूं कायर होइ ।
तुम्हैं लज्ज, मुझ मेहणो, भलो न भाखै कोइ ।।१०५।।
जो मूवा तो अति भला, जो उबर्‌या तो राज ।
बेहुँ प्रकारा हे सखी, मादल घूमै आज ।।१०६।।
कायर केरै माँस कों, गिरज न कबहुँ खाइ ।
कहा डंख इन मुक्ख को, हम भी दुरगति जाइ ।।१०७।।

कवित्त

मेर चलै, ध्रू चलै, भाण जो पच्छिम ऊगै,
साधु वचन जो चलै, पंगु जो गिर लगि पूगै ।
धरण गिड़ै धवलहर, उदध मरजादा छोड़ै,
अरजन चूकै बाँण, लिखत वीधाता मोड़ै ।
बादल कहृ, री नार, सुण, एहवो जो होतब टलै,
न्हासूँ न, पूठ देऊं नहीं, बादल दलसूँ ना चलै ।।१०८।।

दूहा

त्रीया, तुझकों क्या दिऊँ, सती हुवै मुझ साथ।
जूड़ो दीनो काटकै, नारी-केरै हाथ ॥१०९॥
.... ।
ताके ऊपर अरगजा, भमर भमै चिहुं फेर ॥ ११० ॥
सुखपालां सझ पांचसै, सोभा घणी करेह ।
गढ़ तैं डोले उतरे, साह न पायो भेद ॥ १११ ॥
गोरा बादल दोइ जण, आप भए असवार ।
आय मिले पतिसाह सूँ, किए सिलाँम तिवार ॥ ११२ ॥
ले आए संग पदमनी, दोड़न लागे मीर ।
लाज जु लागै हम तुमै, बहुत भया दिलगीर ॥ ११३ ॥
साह ढंढोरो फेरियो, मत कोई देखो ऊठ ।
गरदन मारूं तास कौं, लूँ सब डेरा लूट ॥ ११४ ॥
भी भिर आये साह पै, एक करै अरदास ।
रतनसेन कूँ हुकम हुइ, जाइ पदमन कै पास ॥ ११५ ॥
मिल बिछुरे संग पदमनी, तुमकों दीजै आँन ।
हुकम कियो पतसाह तब, यह विधि मन में जाँन ॥ ११६ ॥

कवित्त

बादल तिहां आवियो, राय तिहाँ बाँधण बाँध्यो,
लेइ मस्तक आपणौ, चरण ऊपर तस दीधो ।
हुऔ कोप राजाँन, वैर कीधो तैं, वैरी,
कीधो भूँडो काँम, नारि आणावी मेरी ।

बादल ताँम हँसि बोलियो, कृपा करो साँमी, सही।
बालक रूप-पदमावती, राव नारि तेरी नहीं ॥ ११७ ॥

दूहा

ले आए संग राव को, मन बिच हरख अपार।
डोलै भीतर पैसताँ, आगे बीच लोहार ॥ ११८ ॥
बेड़ी काटी तुरत तिन, राय कियौ असवार।
तबल बाज तिनही समै, निकढे सुभट अपार ॥ ११६ ॥

सोरठा

रण वाजै रणतूर मारू गावै मंगता।
उमग तिहाँ चित सूर, कायर के चित खलभले ॥ १२० ॥
ढमकै जंगी ढोल, मुरणाई बाजै सरस।
घुरै दमामां घोर, सिंधूड़ा ढाढी चवै ॥ १२१ ॥
साह-कटक पड्यौ सोर, ओरू की ओरू भई।
रही पदमनी ठोर, रण आये रजपूत रट ॥ १२२ ॥
तीन सहस रजपूत- खाय अमल, घूँमै खड़े।
पड़ै क्रपन के पूत, राँम राँम मुख ते रटै ॥ १२३ ॥
जुड़ आये रजपूत, भूत भये कारण भिडण।
परिहरि जोरू-पूत, खत्री आये खेत पर ॥ १२४ ॥
हबक ग्रहे हथियार, हलके हाथी साज के।
अंबाड़ी-असवार, पातसाह आयो प्रगट ॥ १२५ ॥
गोरा-बादल वीर, सिर फूलाँ को सेहरो।
केसर छिटके चीर, संूधै-भीना सापुरस ॥ १२६ ॥

छंद वीररस

जुडाये जंग, उलसे अंग।
गोरा बादल, ताने तंग ॥ १२७ ॥

छंद जात रसावल्

कर खंग लिय करि करि, विहंड भुजदंड दिखावै,
पाडलियै पाखरी उलट, अपने दल आवै।
निज साँम-काज भूपत लड़ै, काट-काट लावै कमल,
गोरा लगावत जिहाँ खड़ग, तिहाँ पाड़ करै दोइ धड़ ॥ १२८ ॥

छंद पद्धरी (मोतियदाम)

लड़ै जब गोरल बाँवन वीर, कमाँणक चोट चलावत तीर।
न चूकत रावत एकण चोट, लड़ै, गज लोट सपोटालोट ॥१२९॥
ग्रहे बरछी जब गोरल राय, सु नागन ज्यूँ नर ऊडत खाय।
फोड़त पाखर साथ पलाँण, सु जातन का सिर सुंदर माँण ।१३०।
तजै बरछी, पकड़ै तरवार, घणी खुरसाण सो बीजलसार।
चलावत मीर उतारत सीस, उडावत एक चलावत बीस ॥१३१॥
तजै तरवार गुरज्ज भिड़ाय, दुरज्जन चोट दड़ब्बड़ ल्याय।
करै चकचूर गयंद-कपाल, सकै उमराव न आप संभाल ॥१३२॥
कहै मुख मीर ज आयो काल, डरै नर, दे हथियार संभाल।
ग्रहे त्रिन्ह दंत बड़े-बड़े मीर, न मारहु गोरल राव सधीर ॥१३३॥
चल्यो एक मीर ज चोट चलाय, पड्यो धर ऊपर गोरल राय।
पुकार पुकारत गोरल नाँम, करै जब बादल ऐसो काँम ॥१३४॥

कवित्त

सुभट सुभट सुं लड़ग, पड़ग तिहाँ खड़ग भड़ाभड़,
जुड़ग-जुड़ग जहाँ जुड़ग, जुड़ग तहाँ खड़ग धड़ाधड़।
मुड़ग मुड़ग तहाँ मुड़ग, मुड़ग कोउ अंग न मोड़ग,
गहर गहर गज दंत, भुजे भूपति गह तोड़ग।
संग्राम राम-रावण-सुपरि, जुड़े ज्वान ऐसी जुगति,
सलसलै सेस, सायर सलल, धड़हड़ कंप्यौ धवलहरि ॥ १३५ ॥

कवित्त

चाबक चंचल लाइ, उलट अपने दल आवै,
नेजा लेकर हाथ, जोर दुसमन—सिर लावै।
नाठे तबहि गयंद, तोफ भीड़ा फड़ पड़ियो,
मारे मुगल अपार, बाल बादल इम लड़ियो।
खुर-खेह सूर झंपत लियो, रैन-दिवस समसिर भयो,
छुटकाय बंध, चाढिय तुरिय, राय भेज घर कों दियो ॥ १३६ ॥
भारथ भयो अपार, साट सूरों के तूटे,
मारे ते रिण मांझ, जिनाँ के कालज खूटे।
बहुत मुए रजपूत, तुरक को अंत न लहिये,
चले रुधिर के खाल, तीन लोकन में कहियै।
भागत मतंग-गज-थाट जब, अपछर मंगल गाइयो,
रणजीत, राय छुटकाय कै, तब बादल घर आइयो ॥ १३७ ॥
बादल की आरती आय, पदमनी उतारै,
मुकताफल भर थाल, भरी सिर ऊपर वारै।

बहुयड़ दे आसीस, जीव तू कोड़ वरीसां,
सूरवीर बंकड़ा, तूझ गुण गावै ईसा।
बलिहारी तस नांव पर, जिण कंत हमारो मेलियो।
गोरा गयंद बादल विकट, धन धन जननी जनमियो ॥ १३८ ॥

दूहा

बादल सूँ नारी कहै, हूं बलिहारी, कंत।
तैं खग मार्‌यो साह-सिर, दे चरणां गजदंत ॥ १३९ ॥
पिय मुख पूँछत प्रेम सूँ, धन बादल भरतार।
बोल निवाह्यो आपणों, सूर जपै जयकार ॥ १४० ॥
काकी बादल सों कहै, गोरल नायो काय।
भिड़ मूवौ कै भाजि कै, सो मुझ बात सुणाय ॥ १४१ ॥
गोरा गिर सूं धीर, भिड़ै न भाजै भूम तें।
मार चलावै मीर, मगर चलावै तीर तें ॥ १४२ ॥
जाके लाए अंग, रंग निकासे ते जड़ग।
मारे मनुख तुरंग, गोरा गरजै सिंघ ज्यूं ॥ १४३ ॥
भला हुआ जे भिड़ मूवा, कलंक न आयो कोय।
जस जंपै श्री जगत में, हिव रिण ढ़ढ़ो जोय ॥ १४४ ॥
रिण ढूढै नारी तहाँ, साथे सगला लोइ।
सीस न पावै, सो कहां, अंबर वाणी होइ ॥ १४५ ॥

कवित्त

गोरे का सिर ताँम, तुरत तिण गिरझ उठायो,
मुखतै छूटो गिरझ, ताँम देवँगना पायो।

देवँगना तें छूटि, सोइ सिर गंगा पड़ियो,
गंगा तें लियो संभु, रुंडमाला में जड़ियो।
सो सोह गोरल भरतार इम, सापवित्र मस्तक भयो।
यों जूझै परकाज-पर, सो गोरो सिवपुर गयो ॥ १४६ ॥

दूहा

नारी इम वाणी सुणी, पिय की पघड़ी साथ।
सती भई आणंद मन, सिवपुर दीनो हाथ ॥ १४७ ॥
गोरा बादल की कथा, पूरण भइ है जाँम।
गुरू-सरस्वती-प्रसाद करि, कविजन करि मन ठाँम ॥ १४८ ॥
सोलेसं असियें समै, फागण पूनिम मास।
वीरा रस सिणगार रस, कहि जटमल सुप्रकास ॥ १४९ ॥

छंद रिसावला

वसें मोछ अडोल अविचल, सुखी रइयत लोक,
आणंद घरि-घरि होत ऊछब, देखियत नहिं सोक ॥ १५० ॥
राजा जिहाँ अलिखाँन न्याजी, खान-नासिर-नंद,
सिरदार सकल पठान बिच है, ज्यों नखत्रे चंद ॥ १५१ ॥
धर्मसी को नंद, नाहर जात, जटमल नाँउ,
जिण कही कथा बनाय कें, बिच संबला के गाँउ ॥ १५२ ॥
कहताँ तहाँ आनन्द उपजें, सुन्याँ सब सुख होय,
जटमल पयंपै, गुनि जनो, विघन न लागै कोय ॥ १५३ ॥

लब्धोदय कृत पद्मिनी चरित्र चौ० में प्रयुक्त देशी-सूची

खण्ड–१

(१) चौपाई—रामगिरी

(२) योगनारा गीत री, राग-मल्हार

(३) करता सुं तो प्रीति मह हूँसी करै रे

(४) सिहरां सिहर मधुपुरी रे, कुमरां नन्दकुमार

(५) ढुढणीया मेवाड़ी देशी—मेवाड़ देशे प्रसिद्धास्ति

(६) ता भव बन्धण थी छोड़ हो नेमीसर जी

(७) जाइ रे जीयरा निकसि के, तथा—बात म काढो रे व्रत तणी

खण्ड–२

(१) बागलिया री

(२) राग गौड़ी—मन भमरा रे

(३) ढाल-अलबेल्यानी, कहिनइ किहां थी आविया रे लाल

(४) राग मारू—वाल्हा ते विदेशी लागे वालहो रे, ए गीत नी

(५) राग मल्हार—सहर भलो पण सांकड़ो रे नगर भलो पण दूर

(६) कोई पूछो बांभण जोसी रे, ए देसी अथवा यतनी

(७) मनसा जे आणी

खण्ड–३

(१) भणइ मन्दोदरी दैत्य दसकन्ध सुण (राग-आसा सिधु कड़खारी)

(२) चरणाली चामुण्डा रण चढ़ै

(३) बात म काढो व्रत तणी, काची कली अनार की रे

(४) तिण अवसर वाजै निहां रे ढंढेरा नो ढोल, २ मेवाड़ी दरजण री

(५) अलबेल्या नी

(६) हंसला नै गल गूघरमाल कि हंसलो मलो

(७) रागमारु—पंथी एक संदेशड़ो, कपूर हुवे अति ऊजलो रे

(८) मेवाड़ी राजा रे चितोड़ी राजा रे

(९) एक लहरी लै गोरिला रे

(१०) राग मारू—नाहलिया न जाए गोरी रे वणहटै रे

(११) मधुकरनी

(१२) श्रेणिक मन अचरज थयो

(१३) नदी यमुना के नीर उड़े दोय पंखिया

(१४) म्हारा सुगुण सनेही आतमा

(१५) सइंमुख हुं न सकुं कही आडी आवै लाज

(१६) वन्दना करूं वार-बार ए देसी प्राहुणा री

(१७) साधजी मले पधार्या आज

(१८) बलध भला छै सोरठा रे

(१९) सदा रे सुरंगा थे फिरो, आज विरंगा कांय

(२०) नाथ गई मोरी नाथ गई

(२१) गच्छपति गाइयइ हो युगप्रधान जिनचन्द

(२२) वाल्हेसर मुझ वीनती गोड़ीचा

(२३) करड़ो निहां कोटवाल, राग-खंमाइती सोला की या मारू

(२४) धन्यासी—लोक सरूप विचारो आतम हित भणी

विशेष नाम सूची

सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट के प्रकाशन

राजस्थान भारती (उच्च कोटि की शोध-पत्रिका)

भाग १ और ३,	८) रु० प्रत्येक
भाग ४ से ७	९) रु० प्रति भाग
भाग २ (केवल एक अंक),	२) रुपये
तैस्सितोरी विशेषांक —	५) रुपये
पृथ्वीराज राठोड़ जयन्ती विशेषांक,	५) रुपये

प्रकाशित ग्रन्थ

१ कलायण (ऋतुकाव्य) ३॥) २. वरसगांठ (राजस्थानी कहानियाँ) १॥)
३. आभै पटकी (राजस्थानी उपन्यास) २॥)

नए प्रकाशन

१ राजस्थानी व्याकरण	१३ सदयवत्सवीर प्रबन्ध
२ राजस्थानी गद्य का विकास	१४ जिनराजसूरि कृति कुसुमांजलि
३ अचलदास खीचीरी वचनिका	१५ कवि विनयचन्द्र कृति कुसुमांजलि
४ हम्मीरायण	१६ जिनहर्ष ग्रन्थावली
५ पद्मिनी चरित्र चौपाई	१७ धर्मवर्द्धन ग्रन्थावली
६ दलपत विलास	१८ राजस्थानी दूहा
७ डिंगल गीत	१९ राजस्थानी वीर दूहा
८ परमार वंश दर्पण	२० राजस्थानी नीति दूहा
९ हरि रस	२१ राजस्थानी व्रत कथाएँ
१० पीरदान लालस ग्रंथावली	२२ राजस्थानी प्रेम-कथाएँ
११ महादेव पार्वती वेल	२३ चंदायण
१२ सीताराम चौपाई	२४ दम्पति विनोद
	२५ समयसुन्दर रासपचक

पता :—सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर ॥